

त्रिपुरा

इतिहास, कला, संस्कृति व पर्यटन

अ कु त्रिपाठी

ISBN 978-93-5593-876-3

Key Words

इतिहास, त्रिपुरा, त्रिपुरा इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन राजमाला, श्रीराजमाला,

TRIPURA, ETIHAS, ETIHAAS, KALA, SANSKRATI, PARYATAN

Editor **ARVIND KUMAR TRIPATHI**

ALKA TRIPATHI

Typeset **ARVIND KUMAR TRIPATHI**

ALKA TRIPATHI

Font used **Hindi/ Devnagari - Kruti Dev 010, Size - 14**

English – Arial, Size - 10

Print **PDF format,**

Other format available on request

Self-Publishing (No publisher)

E_Mail - **aktripathi.tripura@gmail.com**

Phone - 8762396880

Price **Rs 00/-, Free,** निःशुल्क, मुक्त, स्वतन्त्र

ISBN **978-93-5593-876-3**



लेखक

अरविन्द कुमार त्रिपाठी, **DIG (Retired)**

पुत्र स्वर्गीय आचार्य श्री भगवान दास त्रिपाठी

शिक्षा– विज्ञान परास्नातक(भौतिकी), शिक्षा स्नातक

सेवारत कोर्स व प्रशिक्षण – 24,

सी सु ब द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवा

पदक व अलंकरण

E_Mail - aktripathi.tripura@gmail.com
Fone - 8762396880

विज्ञान परास्नातक(भौतिकी), शिक्षा स्नातक के पश्चात अध्यापन कार्य करते हुए 1987 में सीमा सुरक्षा बल में सहायक समादेष्टा **(Assistant Commandant)** के पद पर प्रवेश कर उप महानिरीक्षक के पद से लगभग 33साल का सफल कार्यकाल पूर्ण कर अगस्त 2019 में सेवानिवृत्त हुए।

सेवा कार्यकाल में 1993 ई में त्रिपुरा में पहला पदस्थापन हुआ। सेवा काल में लगभग 11वर्ष त्रिपुरा में रहा और इसी संक्रमण में त्रिपुरा इतिवृत्त, समस्त जनजातियों पर विस्तृत अध्ययन कर लेखन कार्य भी किया।



अलका त्रिपाठी

शिक्षा परास्नातक(संस्कृत),
शिक्षा स्नातक व **M. Phil**

प्रकाशित पुस्तकें

श्रीराजमाला : प्रथम भाग
श्रीराजमाला : द्वितीय भाग
श्रीराजमाला : तृतीय भाग
श्रीराजमाला : चतुर्थ भाग
और अन्य पुस्तकें

<u>मुखबन्ध(भूमिका)</u>

त्रिपुरा वर्तमान भारत–वर्ष के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र का एक राज्य है जो कभी भी मुगल / अंग्रेजो के पराधीन नही रहा।

त्रिपुरा की, इतिहास के सन्दर्भ में, विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है।

बहुत कम लोग त्रिपुरा और उसके आकर्षक व मनमोहक इतिहास के बारे में जानते है। 1947 में विभाजन के आसपास के समय पर यह एक छोटे राज्य के रूप में उभरा और कभी किसी के अधीन नहीं रहा। विभाजन के समय लगभग ई1940 में बहुत बड़ा क्षेत्रफल व संपर्क की सुविधाएं पूर्वी पाकिस्तान में दे दी गई थी, जो वर्तमान में बांग्लादेश में हैं। जहां पहाड़ों की समाप्ति है, पहाड़ पद पर संपन्न होता है वह बांग्लादेश में है और बाकी पूरे पहाड़ त्रिपुरा में हैं। त्रिपुरा जनजाति बहुल इलाका है। पुस्तक बहुत सत्यता को प्रदर्शित करती है।

शोधार्थि एवं पठन पाठन में रुचि रखने वाले अधिकांश लोग या तो अंग्रेजी भाषा या फिर विदेशी लेखकों की पुस्तकों पर निर्भर है। भारत में उपलब्ध पुस्तको में त्रिपुरा की इतनी विस्तृत जानकारी वाली व अति–विश्वसनीय पुस्तक शायद ही हो।

क्लिष्ट बांग्ला भाषित (सिलहटी भाषा, नोमाखाली भाषा और चटगाँव की बोल चाल की भाषाओं का समावेश)ग्रन्थो को शोधार्थि बांग्ला भाषा को न जानने के कारण, इच्छुक होते हुए भी, ग्रन्थों का अवलम्बन नही करते और एक अलौकिक संन्दर्भ पुस्तक से वंचित हो जाते है। पुस्तक प्रामणिकता में निःसन्देह रुप से अद्वितीय है।

त्रिपुरा सम्बन्धित अलौकिक, विश्वसनीय पुस्तक, हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि में, उपलब्ध है, ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है।

इन विषयों पर कुछ अंग्रेजी भाषा की पुस्तकें भी लिखी गई है वे भी ''राजमाला'' को अवलम्बित कर, लेखकीय विचार के साथ, प्रस्तुत की गई है। अतः स्वार्थ/ अनभिज्ञता/ रुचिकर बनाने हेतु आंशिक परिवर्तन व अन्य कारणों से ऐतिहासिक तथ्यों की शुद्धता पर संभावित संन्देह हो सकता है।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि मूल ग्रन्थ राजमाला(हिन्दी), त्रिपुरा सरकार प्रदत्त जानकारी व लेखक के 11 साल के त्रिपुरा भ्रमण से प्रेरित है। अतः प्रमाणिकता पर किसी सन्देह का होना असम्भव है।

आभार प्रदर्शन

त्रिपुरा इतिहास, कला, संस्कृति व पर्यटन के बारे में जागरण नगण्य है।

विस्तृत समय के साथ, विद्वानों का विस्तृत मार्गदर्शन व कई बार सम्पादन के पश्चात् पाण्डुलिपि वर्तमान स्वरुप में अवतरित हो पाई है।

भारत सरकार की सेवा में रहते हुए, पाण्डुलिपि को प्रकाशित करना नीति विरुद्ध समझा, अतः सेवा से सेवानिवृत्ति(**Superannuation)** के तीन वर्ष पश्चात व 2022ई में प्रकाशित कर रहे है।

त्रिपुरा, हमेशा मुख्य जमीन से दूर रहने के कारण हरे–भरे जंगलों से भरपूर रहा है, जिसके कारण प्राकृतिक झीलें, पहाड़ घाटियां और जंगल हमेशा से मोजूद मौजूद रहे हैं। कटाई ना होने के कारण आज भी उसी स्थिति में विद्यमान है। राजा महाराजा अपने राज्य काल, में हमेशा कुछ न कुछ निर्माण करते आते रहे है। त्रिपुराा के राजाओं का मुख्य गरिमापूर्ण कार्य, निर्माण कार्य, बड़े बड़े तालाब, जिन्हें सागर भी कहा जाता है, का निर्माण कराया। साथ ही कलाकारों का उत्साह वर्धन करने के लिए शिल्प, मूर्ति, आकृति निर्माण के लिए उत्साहित किया। फलस्वरूप उनकोटि, पिलाक और इसी तरह सांस्कृतिक स्थलों का उद्‌भव हुआ। वर्तमान समय में भी पर्यटकों व पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आजादी के बाद बहुत अच्छी सड़के बनावाई और तरह–तरह के पार्क और पुरानी जिलों को नए तरीके से तैयार किया गया। लेखक स्वयं त्रिपुरा में 11 साल रहा और प्रगति को देखा। जहां पर जाने के लिए 11 दिन लगते थे आज की मजबूत और चौड़ी सड़कों के कारण 2 घंटे में पहुंचा जा सकता है।

इस तरह त्रिपुरा का प्राकृतिक सौन्दर्य व स्वरुप स्विट्ज़रलैंड लैंड के परिप्रेक्ष्य में उससे ज्यादा अच्छा सुंदर दर्शनीय है।

पुस्तक में बहुत सारे दर्शनीय स्थलो का वर्णन है फिर भी पुस्तक के अंत में दिए गए सारणी में उससे भी ज्यादा स्थलों का वर्णन है अगर कोई पर्यटक चाहे या रिसर्च करने वाला चाहे तो उन पर भी अपना कार्य आगे बढ़ासकता है।

विभिन्न समय अन्तराल में लिखित इन ग्रन्थ में इतिवृत्त, कहानियां, जनश्रुति आदि का समावेश है और लेखक विषय सामग्री के लिए सभी का आभार प्रकट करता है।

पुनः किसी भी आवश्यक संशोधन, शब्दों के अनेकार्थों के निमित्त, त्रुटि हेतु सुझावों का स्वागत है।

त्रिपुरा प्रकृति माँ की सुन्दर पुत्री है

धन्यवाद

क्रम	विषय पृष्ठ प्रदर्शक	पृष्ठ
1	त्रिपुरा पथ प्रदर्शक	
2	त्रिपुरा का इतिहास	
3	त्रिपुरा – नाम की उत्पत्ति	
4	पौराणिक कथाओं से ऐतिहासिक सम्बन्ध	
5	त्रिपुरा के राजा	
6	त्रिपुर राजन्य वर्ग की धारावाहिक सूची	
7	त्रिपुरा–माणिक्य राजवंश	
8	बंगाल से सम्बन्ध	
9	अगरतला	
10	भौगोलिक मानचित्र	
11	त्रिपुरा राज्य के जिल	
12	पर्वतीय श्रृंखला	
13	त्रिपुरा राज्य की जलवायु	
14	वर्षा	
15	मुख्य नदियां	
16	त्रिपुरा के लोग	
17	त्रिपुरा की मुख्य जन–जातियां	
18	2001 की जनगणना	
19	आदिवासी लोगों की संस्कृति व जीवनयापन	
20	शहर का जनसंख्या का घनत्व	
21	रमणीक स्थान – स्थल	
22	त्रिपुरा	
23	अगरतला का इतिहास व उत्पत्ति	
24	अगरतला	
25	अगरतला का मौसम	
26	अगरतला की भौगोलिक स्थिति	
27	[illegible]	

28	मेले व त्योहार	
29	पर्व व मेले	
30	दुर्गा पूजा	
31	दिवाली	
32	खारची पूजा	
33	गरिया पूजा	
34	केर पूजा	
35	अशोक अष्टमी मेला	
36	बुद्ध पूर्णिमा	
37	पौष सन्क्रान्ति मेला	
38	वाह (लैम्प) त्यौहार	
39	नृत्य	
40	सांस्कृतिक धरोहर	
41	वंगला नृत्य	
42	चीरा नृत्य	
43	हौजागिरी नृत्य	
44	लेबांग बुमानी नृत्य	
45	गरिया नृत्य	
46	"सारी" नृत्य,	
47	त्रिपुरा के मुख्य व्यंजन	
48		
49	हलूद भरता	
50	पोर्क भरता	
51	सांस्कृतिक धरोहर	
52	त्रिपुरा व रविन्द्र नाथ टैगोर	
53	त्रिपुरा : सचिन देवबर्मन का घर	
54	रोचक स्थान रमणीक स्थान	
55	अगरतला व उसके इर्द गिर्द स्मारक स्थल	

56	पुरातन पर्यटक स्थल	
57	प्राकृतिक पर्यटक स्थल	
58	धार्मिक पर्यटक स्थल	
59	जल सम्बन्धी पर्यटक स्थल	
60	ईको पार्क	
61	त्रिपुरा सड़क मैच	
62	उज्जयन्त महल	
63	जगन्नाथ मन्दिर	
64	त्रिपुरा सुंदरी मन्दिर (उदयपुर)	
65	पौराणिक कथाएं	
66	मन्दिर का विस्तृत विवरण	
67	रीति रिवाज	
68	पशु बलि	
69	मन्दिर की वास्तुकला	
70	रूद्रसागर झील	
71	त्रिपुरा राजकीय सग्रहालय, अगरतला	
72	सुकान्त एकेडमी	
73	पुर्वासा	
74	नेहरू पार्क	
75	रविन्द्र कानन	
76	राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय	
77	महाराजा बीर बिक्रम महाविद्यालय	
78	बेनुबन बिहार	
79	नजरूल कलाक्षेत्र	
80	लक्ष्मी नारायण मन्दिर (अगरतला)	
81	चतुर्दश देवता मन्दिर	
82	चन्द्रपुर मस्जिद बेलोनिया	
83	गेडु मियां की मस्जिद (अगरतला)	

84	मरियम नगर चर्च (अगरतला)	
85	कस्बा काली मन्दिर (विशालगढ़)	
86	उनकोटि	
87	पीलाक	
88	कला के प्रकार व शैली	
89	देबतामुरा (चाबीमुरा)	
90	बाक्सनगर	
91	गुनावती मन्दिरों का समूह उदयपुर	
92	भुवनेश्वरी मन्दिर उदयपुर	
93	प्राकृतिक पर्यटक स्थल	
94	सिपाहीजला वन्य प्राणी उद्यान	
95	त्रिष्णा वन्य जीव प्राणी उद्यान	
96	गोमती वन्य जीव प्राणी उद्यान	
97	रोवा वन्य जीव प्राणी उद्यान	
98	जम्पुई हिल (कंचनपुर)	
99	जल सम्बन्धी पर्यटन स्थल	
100	नीरमहल और रूद्रसागर	
101	डुम्बूर झील (अमरपुर)	
102	कमलासागर (विशालगढ़)	
103	पर्यावरण पार्क	
104	खुमलांग इको पार्क	
105	तेपानिया पर्यावरण पार्क	
106	बारामूरा / बारामूड़ा पर्यावरण पार्क	
107	कलपानियां पर्यावरण पार्क	
108	हेरिटेज पार्क	
109	संन्दर्भ	
110	सारणी समस्त स्थल, स्थान, आवास	

त्रिपुरा पथ प्रदर्शक

स्थान	पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे दूरगामी भाग
राजधानी	अगरतला
पर्यटक स्थल	सम्पूर्ण त्रिपुरा
भ्रमण के लिए उचित समय	अक्टुबर से मई

त्रिपुरा एक नजर में

त्रिपुरा राज्य का उदय व इतिहास

त्रिपुरा का इतिहास

त्रिपुरा राज्य का इतिहास बहुत प्राचीन है जो कि महाभारत काल से सम्बन्धित है। त्रिपुरा राज्य के रजवाड़े के अन्त तक, समस्त पूर्वी बंगाल के साथ, दक्षिण में बंगाल की खाड़ी से, उत्तर और पश्चिम में ब्रह्मपुत्र नदी तक तथा पूर्व में म्यांमार (पूर्व काल में बर्मा) तक फैला हुआ था। त्रिपुरा राज्य का प्राचीन इतिहास अशोक स्तम्भ के वर्णन से मिला है। त्रिपुरा राज्य का इतिहास सातवीं शताब्दी के त्रिपुरी राजाओं के बारे में बताता है जिनको 'फा' के सूचक नाम से जाना जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ पिता है, ये कैलाशहर क्षेत्र से उत्तरी त्रिपुरा मे राज्य करते थे।

14वीं शताब्दी इस बात की गवाह है कि त्रिपुरा की राजधानी को कैलाशहर से उदयपुर ले जाया गया। ये उस समय की बात है जब त्रिपुरा के राजाओं ने माणिक्य उपनाम को ग्रहण किया। माणिक्य शासक जो कि इन्डो – मंगोलियन मूल के थे, 300 वर्षों तक त्रिपुरा पर शासन किया। शायद ये त्रिपुरा

के इतिहास का सबसे सुनहरा समय रहा है, क्योंकि माणिक्य शासकों को केन्द्र में मुगल शासकों का समर्थन था।

17 शताब्दी के दौरान त्रिपुरा राज्य को कठिन समय से गुजरना पड़ा जब राज्य का शासन मुगलों के हाथ में चला गया और उन्होने माणिक्य शासकों के अधिकार सीमित कर दिये। ब्रिटिश उपनिवेशकों के आने के बाद उन्होने अपने राज्य का विस्तार त्रिपुरा तक कर दिया लेकिन माणिक्य राजाओं को कुछ स्वतन्त्रता दे दी।

त्रिपुरा राज्य के राजसी युग का अन्त 1947 में हो गया जब रजवाड़ों का पूर्ण रूपेण अन्त हो गया। राजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य त्रिपुरा के माणिक्य शासन के अन्तिम शासक थे और उसकी मृत्यु के बाद त्रिपुरा राज्य का विलय भारतीय संघ में कर दिया गया। वर्ष 1949 ई में त्रिपुरा को केन्द्र शासित प्रदेश बनाया गया व तब तक रहा जब तक इसे पूर्ण राज्य का दर्जा नहीं मिला। 1972 ई में इसे पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया।

त्रिपुरा राज्य की और अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का अध्ययन करना चाहिये :–

- ❖ त्रिपुरा – नाम की उत्पत्ति
- ❖ पौराणिक कथाओं से ऐतिहासिक सम्बन्ध
- ❖ त्रिपुरा के राजा
- ❖ त्रिपुरा माणिक्य वंश
- ❖ बंगाल से सम्बन्ध
- ❖ अगरतला

त्रिपुरा – नाम की उत्पत्ति

त्रिपुरा के इतिहास के अनुसार, नाम की उत्पत्ति के प्रत्येक आशय के बारे में भिन्न भिन्न मतभेद हैं। बहुत सारे इतिहासकारों द्वारा नाम की उत्पत्ति के बारे में तर्क वितर्क किया गया और उन्होने नाम की उत्पत्ति के बारे में बहुत सारे तर्क दिये। त्रिपुरा नाम की उत्पत्ति के बारे में सत्यापित करने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा थी कि इस सम्बन्ध में कोई भी साक्ष्य दस्तावेज नहीं मिला। शायद "राजमाला" एकमात्र एक लिखित दस्तावेज है जो कि त्रिपुरा क्षेत्र के इतिहास पर प्रकाश डालता है।

"राजमाला" जो कि त्रिपुरा के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालता है और ऐसा इंगित करता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में त्रिपुर नाम का राजा था। त्रिपुर एक निरंकुश राजा था और बहुत से इतिहासकारों का ये तर्क है कि उसके बाद इस क्षेत्र का नाम त्रिपुरा पड़ा। फिर भी त्रिपुरा नाम की उत्पत्ति के बारे में इस कथनी को कुछ इतिहासकारों ने यह बताकर नहीं माना कि 'त्रिपुर' एक ऐतिहासिक और काल्पनिक पात्र है।

त्रिपुरा शब्द की उत्पत्ति के बारे में अभी तक अनुसंधानकर्त्ताओं व इतिहासकारों के बीच में बहुत सारे मतभेद हैं। 'राजमाला' के अनुसार त्रिपुरा नाम एक प्राचीन राजा जिसका नाम त्रिपुर था उसके नाम पर पड़ा और उसके राज्य को त्रिपुरा के नाम से जाना जाने लगा।

इस शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में त्रिपुरा शब्द का शाब्दिक अर्थ एक बहुत बड़े विस्तारपूर्वक क्षेत्र को प्रदर्शित करता है। त्रिपुरा शब्द का सन्धि–विच्छेद करने पर दो शब्द 'तुई' (पानी) . 'प्रा'(नजदीक) है। क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति स्वतः ही त्रिपुरा नाम की स्पष्टता को दर्शाती है।

यह भी दर्शाता है कि त्रिपुरा (त्वी – प्रा) शब्द का अपभ्रंशित शब्द है जिसका अर्थ है पानी की अधिकता और बहुत सारे त्रिपुरी गावों के नाम के पीछे भिन्न भिन्न नदियों के नामों का प्रभाव है।

दूसरा यह भी बहुत ज्यादा संभावना है कि त्रिपुरा शब्द की उत्पत्ति त्रिपुरेश्वरी नाम के मन्दिर से हुई है जो कि उदयपुर में स्थित है। इसे त्रिपुरसुन्दरी के नाम से भी जाना जाता है। ये भव्य मन्दिर उदयपुर में श्रद्धालुओं के लिए क्षेत्र में मुख्य धार्मिक स्थल है, जो कि 53 शक्तिपीठों में से एक है। त्रिपुरेश्वरी का मन्दिर त्रिपुरा में बहुत बाद में बना है अतः मन्दिर बनने के बाद राज्य का त्रिपुरा नामकरण संभव नहीं।

बहुत सारे अनुसंधानकर्त्ताओं ने ये व्याख्यान किया है कि त्रिपुरा शब्दों को {(तुई (पानी) व प्रा (नजदीक)} जिसका अर्थ है पानी के नजदीक, मिलाकर बना है। भौगोलिक दृष्टि से भी राज्य पानी की अधिकता व पूर्वी बंगाल में बहुत सारे जल स्त्रोतों के होने को दर्शाता है व राज्य के मूल निवासी त्रिपरा या तवीपरा हैं जो कि राज्य के नाम को अपने आप में प्रदर्शित करते हैं।

पौराणिक कथाओं से ऐतिहासिक सम्बन्ध

त्रिपुरा राज्य का प्राचीन इतिहास पौराणिक कथाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है 'राजमाला' के अनुसार त्रिपुरा का शाही घराना स्वयं को चन्द्र वंशज बतलाता है। भारत के दूसरे प्रान्तों के अपने समकक्ष हिन्दु शाही घरानों के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए अपनी उत्पत्ति चन्द्र व सूर्य वंश के वंशजो द्वारा इंगित करते हैं।

त्रिपुरा के राजा

त्रिपुरा का इतिहास, अपने शानदार अतीत के बारे में बताता है और त्रिपुरा राज्य के राजा शाही–अतीत के अभिन्न अंग थे। यदि त्रिपुरा के अतीत का गहराई से अध्ययन किया जाय तो त्रिपुरा के शक्तिशाली राजाओं के प्राचीन इतिहास के बारे में जानकारी मिलेगी। 7वीं शताब्दी में त्रिपुरा के राजाओं ने 'फा' उपनाम स्वीकार किया व शासन को उत्तरी त्रिपुरा के कैलाशहर से जो कि उस समय की राजधानी थी, से संचालित किया।

यह 14वीं शताब्दी की बात है जब त्रिपुरा के महत्वपूर्ण वंश के लोग राजगद्दी पर बैठे। त्रिपुरा में माणिक्य राजवंश के राजाओं ने 300 वर्षों से भी अधिक समय तक शासन की बागडोर संभाले रखी और अपनी राजधानी को कैलाशहर से उदयपुर व बाद में अगरतला में स्थानान्तरित किया। त्रिपुरा की प्रतिष्ठा व शक्तियां माणिक्य वंश के राजाओं के समय में बुलन्दियों पर थी। त्रिपुरा के मशहूर राजाओं के नाम निम्नांकित हैं:–

त्रिपुर राजन्य वर्ग की धारावाहिक सूची

(नाम के बाँई ओर के अंक, राजाओं के क्रमिक संख्या ज्ञापक है)

त्रिपुर राजवंश ययाति नन्दन द्रुह्यु से उत्पन्न होने पर भी सम्यक रुप से विवरण–ज्ञापक के अभिप्राय से चन्द्रमा देव से पुरुषानुक्रमिक तालिका प्रदान की गई।

(1) चन्द्र	(16)
(2) बुध	(17) पराबसु
(3) पुरुरवा(1)	(18) पारिषद
(4) आयु	(19) अरिजित्
(5) नहुष	(20) सुजित्(असुजित्)
(6) ययाति(2)	(21) पुरुरवा(द्वितीय)

(7) द्रुह्यु

(8) बभ्रु

(9) सेतू

(10) आनर्त्त(आरब्द / आरद्वान)

(11) गान्धार

(12) धर्म(घर्म)

(13) धृत(घृत)

(14) दुर्म्मद

(15) प्रचेता

(16) पराचि(शतधर्म)

(22) बिवर्ण

(23) पुरुसेन

(24) मेघवर्ण

(25) विकर्ण

(26) बसुमान

(27) कीर्ति

(28) कनीयान्

(29) प्रतिश्रवा

(30) प्रतिष्ठ

(31) शत्रुजित(शत्रूजित)

संदर्भ – **<u>प्रथमलहर–80</u>**

31

(32) प्रतर्दन(1)
(33) प्रमथ
(34) कालन्द
(35) क्रम(क्रथ)
(36) मित्रारि
(37) बारिवर्ह
(38) कार्मुक
(39) कलिंग(कालांग)
(40) भीषण
(41) भानुमित्र
(42) चित्रसेन(अघ चित्रसेन)
(43) चित्ररथ
(44) चित्रायुध
(45) दैत्य
(46) त्रिपुर(2)
(47) त्रिलोचन(3)
(48) दाक्षिण

48

(49) तयदाक्षिण(तैदाक्षिण)
(50) सुदाक्षिण
(51) तरदाक्षिण
(52) धर्मतरु(धर्मतर)
(53) धर्मपाल
(54) सधर्मा(सुधर्म)
(55) तरबंग
(56) देवांग
(57) नवांगित
(58) धर्मागंद
(59) रुक्मांगद
(60) सोमांगद(सोनांगद)
(61) नौयुगराय(नौगयोग)
(62) तरजुंग
(63) राजधर्मा(तरराज)
(64) हामराज
(65) वीरराज

संदर्भ – <u>प्रथमलहर–81</u>

65	80
(66) श्रीराज	(81) रुपवन्त(श्रेष्ठ)
(67) श्रीमान्(श्रीमंत)	(82) तरहोम(तरहाम)
(68) लक्ष्मीतरु	(83) हरिराज(खाहाम)
(69) रुपवान(तरलक्ष्मी)	(84) काशीराज(कतरफा)
(70) लक्ष्मीवान(माईलक्ष्मी)	(85) माधव(कालातरफा)
(71) नागेश्वर	(86) चन्द्रराज(चन्द्र फा)
(72) योगेश्वर	(87) गजेश्वर
(73) नीलध्वज(ईश्वर फा)	(88) वीरराज(द्वितीय)
(74) बसुराज(रंगखई)	(89) नागेश्वर(नागपति)
(75) धनराजफा	(90)शिखिराज(शिक्षराज)
(76) हरिहर(मुंचफा)	(91) देवराज
(77) चन्द्रशेखर(माईचोंगफा)	92) धुसरांग(दुराशा या धराईश्वर)
(78) चन्द्रराज(ताभुराज या तरुराज)	(93) वार कीर्ति(वीरराज या विराज)
(79) त्रिपली(तरकनाई)	(94) सागरफा
(80) सुमंत	(95) मलयचन्द्र

(96) सूर्य नारायण(सूर्यराय)

(97)इन्द्रकीर्ति (अचंग फनाई या उत्तंग फणी) — (98) वीर सिंह(चराचर)

(99) सुरेन्द्र(हाचुंफा या आचंफा)

संदर्भ – <u>प्रथमलहर–82</u>

(99)

(100) विमार

(101) कुमार

(102) सुकुमार

(103) वीरचन्द्र(तैछ राव या तक्ष राव)

(104) राज्येश्वर(राजेश्वर)

(105)नागेश्वर

(106) तैछंफा(तेजंफा)(क्रोधेश्वर या मिछलीराज)

(107) नरेन्द

(108) इन्द्रकीर्ति

(109) बिमान(पाईमाराज)

(110) यशोराज

(111) बंग(नबांग)

(112) गंगाराय(राजगंगा)

(113) चित्रसेन(शुक्रराय या छाक्रु राय)

(114) प्रतीत

(115) मरीचि(मिछली / मालछी / मरुसोम)

(116) गगन(काकुथ)

(117) कीर्ति(नवराज या नव राय)

(118) हिमति(युझारु फा या हामतार फा)

(119) राजेन्द्र(जंगी फा या जनक फा)

(120) पार्थ(देवराज या देवराय)

(121) सेबराय(शिवराय)

संदर्भ – प्रथमलहर–83

(121)

(122) किरीट(आदिधर्म फा, डुंगरुफा दानकुरु फा या हरिराय)

(123) रामचन्द(खारुं फा या कुरुँगु फा)

(124)नृसिंह

(125) ललित राय(छेंफनाइ या सिंह फणी)

(126) मुकुन्द फा(कुन्दा फा)

(127) कमल राय

(128) कृष्ण दास

(129) यशोराज(यश फा)

(130)उद्धव(मोचं फा)

(131) साधुराय

(132) प्रताप राय

(133) विष्णु प्रसाद

(134) बाणेश्वर(वाणीश्वर)

(135) वीरवाहु

(136) सम्राट

(137) चम्पकेश्वर(चाम्पा)

(138) मेघराज(मेघ)

(139) धर्मधर(छेंका छाग)

(140) कीर्तिधर(छेंथुम फा या सिंह तुंग फा)

(141) राजसूर्य(आचंग फा या कुंजूहोम फा)

(142) मोहन(खिचूं फा)

(143) हरिराय(डांगर फा)

संदर्भ – प्रथमलहर–84 143

(144) राजा फा (145)रत्नफा(रत्नमाणिक्य)(1)

(146) प्रतापमाणिक्य (147)मुकुटमाणिक्य(मुकुन्द)

(148) महामाणिक्य

(149) धर्ममाणिक्य(द्वितीय) कचुफा(गगन फा या पुरन्दर)

(150) प्रतापमाणिक्य (151)धन्यमाणिक्य(त्रिपुरेश्वरीमन्दिर)

(152) ध्वजमाणिक्य (153) देवमाणिक्य

(154) इन्द्रमाणिक्य (155) विजयमाणिक्य

(157) उदयमाणिक्य(2) (156) अनन्तमाणिक्य

(158) जयमाणिक्य(2)

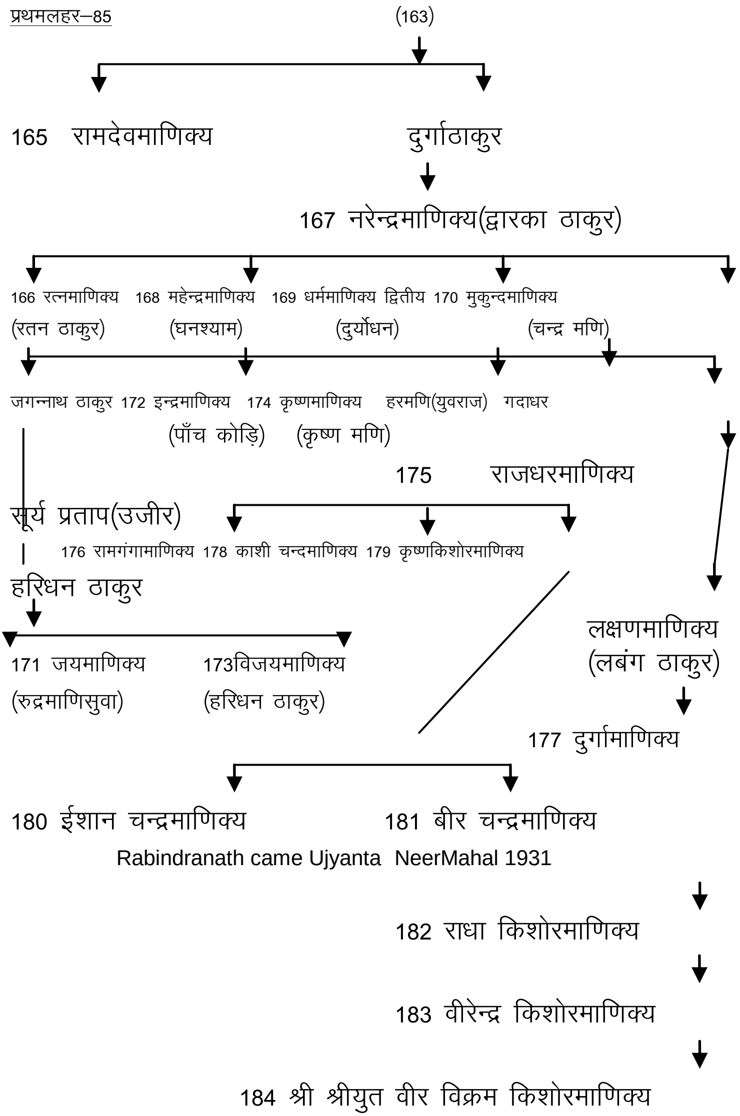
(159) अमरमाणिक्य(रामदास)

(160) राजधरमाणिक्य

(161) यशोधरमाणिक्य

(162) कल्याणमाणिक्य

(163) गोविन्दमाणिक्य (164) छत्रमाणिक्य(नक्षत्रराय) जगन्नाथ ठाकुर


प्रथमलहर–85
(163)
165 रामदेवमाणिक्य
दुर्गाठाकुर
167 नरेन्द्रमाणिक्य(द्वारका ठाकुर)
166 रत्नमाणिक्य
(रतन ठाकुर)
168 महेन्द्रमाणिक्य
(घनश्याम)
169 धर्ममाणिक्य द्वितीय
(दुर्योधन)
170 मुकुन्दमाणिक्य
(चन्द्र मणि)
जगन्नाथ ठाकुर
172 इन्द्रमाणिक्य
(पाँच कोड़ि)
174 कृष्णमाणिक्य
(कृष्ण मणि)
हरमणि(युवराज)
गदाधर
175 राजधरमाणिक्य
सूर्य प्रताप(उजीर)
176 रामगंगामाणिक्य
178 काशी चन्दमाणिक्य
179 कृष्णकिशोरमाणिक्य
हरिधन ठाकुर
लक्षणमाणिक्य
(लबंग ठाकुर)
171 जयमाणिक्य
(रुद्रमाणिसुवा)
173विजयमाणिक्य
(हरिधन ठाकुर)
177 दुर्गामाणिक्य
180 ईशान चन्द्रमाणिक्य
181 बीर चन्द्रमाणिक्य
Rabindranath came Ujyanta NeerMahal 1931
182 राधा किशोरमाणिक्य
183 वीरेन्द्र किशोरमाणिक्य
184 श्री श्रीयुत वीर विक्रम किशोरमाणिक्य

त्रिपुरा–माणिक्य राजवंश

त्रिपुरा राज्य का इतिहास महान है। यहाँ के शासक इतने महान और पराक्रमी थे, जिसके बारे में भारत का विशाल जन समुदाय अनभिज्ञ है। इसकी प्राचीनता महाराज ययाति से शुरू होती है। कुछ राजा–महाराजा अत्याचारी हुए थे, पर अधिकांश राजा महाराजा देव–द्विज के प्रति श्रद्धावान थे। बहुत से मठ–मंदिरों का निर्माण उन्होंने किया था। भारतीय प्राचीन महान कृति से त्रिपुरा के जन–जीवन को उन्होने सिंचन किया था। त्रिपुरा महाराज धर्ममाणिक्य के समय से राजमाला की रचना आरंभ हुई। यह समय था पन्द्रहवीं सदी का प्रारंभ। महान पण्डित बाणेश्वर, शुक्रेश्वर और दुर्लभेन्द्र नारायण ने दोहा के रूप में बंगला में इसकी रचना कर उन्हें रोज सुनाते रहे। पन्द्रवीं सदी के मध्य भाग तक यह चलता रहा। प्रथम लहर के पश्चात् दूसरी लहर महाराज अमर माणिक्य के समय रचित हुई और रचना कार थे रण चतुर नारायण। सोलहवीं सदी अंत तक यह प्रकरण चलता रहा और राजमाला दूसरी लहर अर्थात दूसरे खण्ड की समाप्ति हुई। तीसरी लहर की रचना सतरवीं सदी के अंत तक चलती रही। इसके सुनने वाले थे महाराज गोविन्द माणिक्य। चतुर्थ लहर की रचना बहुत दिनों तक चलती रही। अठारवीं सदी के अंत तक यह रचना चलती रही। महान पंडित जयदेव वजीर इसके प्रवक्ता थे। इसके मुख्य सुनने वालों में थे महाराज रामगंगा माणिक्य। पंचम लहर का रचनाकाल है उनसवी सदी के प्रारंभ तक। महाराज शशीचन्द्र माणिक्य इसके मुख्य श्रोता थे। इसके रचनाकार थे महान दुर्गामणि वजीर।

पहली लहर की भाषाओं में बहुत सी स्थानीय भाषाओं का समावेश था। सिलहटी भाषा, नोमाखाली भाषा और चटगाँव की बोल चाल की भाषाओं का समावेश है। डा0 रमाशंकर त्रिवेदी जी के लिये यह कुछ आसान इसलिये हो गया कि इन भाषाओं को समझ लेते है। बंगला से हिन्दी में कविता में रूपांतर करना आसान नहीं है, लेकिन इसमें हमें ज्यादा दिक्कत् नहीं हुई।

इस राजमाला में इतनी घटनाओं का समावेश है, जो भारतीय इतिहास के पन्नों में नहीं है। पता नहीं क्यों इसका प्रचार नहीं हुआ। अंत में मुर्शिदावाद के नवाबों के अधीन त्रिपुरा हो गया था और उनके इशारे पर चलने पर त्रिपुरा के राजाओं को चलना पड़ता था। यह एक कलंकित अध्याय था। द्विज पाठक इस महान ग्रंथ के जरिए इसे स्वयं ही अनुभव करेंगें।

बहुत समय पहले, इतिहास के प्रमाणों के अनुसार राजमाला में त्रिपुरा के शाही माणिक्य राजवंश की उत्पत्ति के बारे में साक्ष्य मिले। त्रिपुरा माणिक्य राजवंश की उत्पत्ति 1280 ईस्वी में हुई जब त्रिपुरा के राजा रत्न फा ने माणिक्य उपनाम को अपने साथ जोड़ा। मूल रूप से इन्डो – मंगोलियन, माणिक्य राजवंश ने त्रिपुरा राज्य पर हजारों वर्षो तक शासन किया।

त्रिपुरा में माणिक्य वंश के राजाओं के शासन काल में त्रिपुरा राज्य अपनी उत्कृष्टता तक पहुंचा। उनके शासन काल में त्रिपुरा की सेना ने कई बार म्यांमार (पूर्व काल में बर्मा), बंगाल व आसाम पर विजय हासिल करके अपना अधिपत्य स्थापित किया। त्रिपुरा राज्य के माणिक्य राजवंश के राजाओं के नाम की प्रसिद्धि चारों तरफ थी यहां तक कि उत्तरी भारत में तत्कालीन मुगल बादशाहों ने भी उनका समर्थन किया।

17 वीं शताब्दी में मुगल बादशाहों ने अपने शासन का विस्तार त्रिपुरा तक करने के बारे में सोचा लेकिन माणिक्य राजवंश के राजाओं ने अपने अधिकारों को सुरक्षित रखा। जबकि ब्रिटिश शासको ने उत्तरी व पूर्वी भारत के अधिकतर राज्यों को अपने आधीन कर लिया लेकिन त्रिपुरा की प्रशासनिक शक्तियां माणिक्य राजवंश के राजाओं के पास ही रहने दी।

भारत को आजादी मिलने के बाद त्रिपुरा के माणिक्य वंश की तत्कालीन महारानी प्रभादेवी ने भारतीय संघ में विलय के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किये। माणिक्य वंश का अन्तिम शासक बीर बिक्रम माणिक्य था जो कि महाराजा किरीट बिक्रम किशोर माणिक्य का उत्तराधिकारी था। आजकल त्रिपुरा माणिक्य राजवंश का मुखिया महाराजा किरीट प्रद्युत देबबर्मन माणिक्य बहादुर है जो कि स्वर्गीय महाराजा किरीट बिक्रम किशोर माणिक्य का बेटा है।

बंगाल से सम्बन्ध

त्रिपुरा क्षेत्र का इतिहास, पूर्वोत्तर राज्यों में से दूसरे राज्यों की अपेक्षा भिन्न है, जो कि पूर्वोत्तर में एक सूदूरवर्ती क्षेत्र में स्थित है। अतः इस राज्य के बंगाल से नजदीकी सम्बन्ध है। महाराजा बीरचन्द्र माणिक्य जो कि 1870ई में राजगद्दी पर विराजमान हुए और सांस्कृतिक व भावनात्मक दृष्टि से बंगाल से व रविन्द्र नाथ टैगार से नजदीकी सम्बन्ध होने के कारण बहुत ज्यादा प्रभावित हुए जिसकी वजह से उन्होने

न्यायालय की भाषा बंगाली को बनाया। इस राज्य में 19 आदिवासी जन–जातियां होने के बावजूद, आज यहां की अधिकतर जनसंख्या बंगाली हैं।

अगरतला

अगरतला अतीत में पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान में बंगला देश) का एक पिछड़ा हुआ कस्बा था जो कि अब बंगला देश से दो किलोमीटर दूर है। इस राजधानी में राज्य विधान सभा का भवन सबसे सुन्दर भवनों में से एक है जो कि कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल की तरह है।

अगरतला चारों तरफ से प्राचीन ईंटो से बनी हुई इमारतों, सुन्दर झाड़ियों व सुनहरी एवं चमचमाते अमलतास के पेड़ों से घिरा हुआ है जो कि पर्यटकों का मन बहुत आसानी से अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है।

भौगोलिक मानचित्र

भौगोलिक दृष्टि से वर्तमान त्रिपुरा राज्य का क्षेत्रफल 10,491 वर्ग किलोमीटर है जो कि पहाड़ी क्षेत्र से परिपूर्ण है। ये चारों तरफ से उत्तर पूर्व के कुछ थोड़े से क्षेत्र जो कि मिजोरम व आसाम राज्य के कछार से लगता है को छोड़कर वर्तमान बंगला देश के डेल्टिक बेसिनों से घिरा हुआ है।

क्षेत्रफल	10,491.69 वर्ग किलोमीटर
जनसंख्या	36, 71, 032
हिन्दू	85 प्रतिशत
मुस्लिम	08 प्रतिशत
ईसाई	03 प्रतिशत
बौद्ध व अन्य	04 प्रतिशत
आदिवासी	31 प्रतिशत
साक्षरता	88.29 प्रतिशत
समुद्र तल से उंचाई	12.80 मीटर

तापमान सेल्सियस
गर्मियों में 20 से 36 डिग्री,
सर्दियों में 7 से 27 डिग्री से•

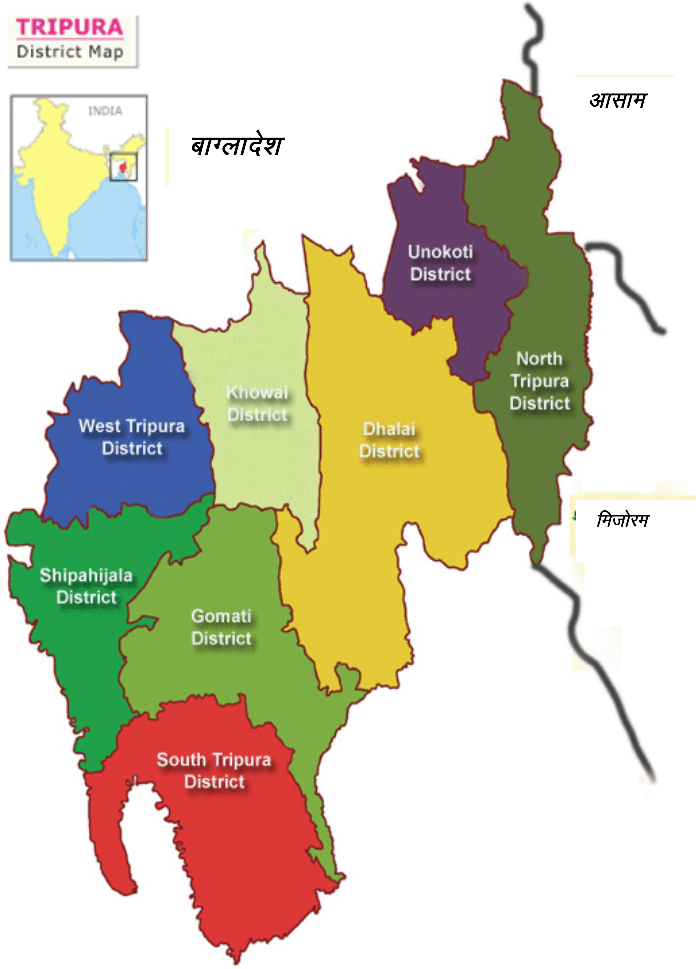
सर्दियों न्यूतम तापमान 2 डिग्री	सेल्सियस
मौसम के अनुसार पहनावा	गर्मी में सूती व सर्दी में ऊनी
वर्षा ऋतु	जून से अगस्त
औसत वर्षा	2100 मिली मीटर प्रति वर्ष
कार्यालय में कामकाजी भाषा	बंगाली और कोकबोरोक
अन्य भाषाएं	अंग्रेजी, हिन्दी, मणिपुरी, चकमा
अन्तर्राष्ट्रीय सीमा	856 किलोमीटर
प्रति व्यक्ति आय	29000 रूपये सालाना
कुल जिले	8 (आठ)
उपमण्डल	17+6
विकास खण्ड	29+5
पुलिस थाने	66 (छयासठ)
विधान सभा क्षेत्र	60 (साठ)
भारतीय संघ में विलय	15 अक्तुबर 1949
केन्द्र शासित प्रदेश	11 नवम्बर 1957
पूर्ण राज्य का दर्जा	21 जनवरी 1972

तत्कालीन रजवाड़ों का राज खत्म करते हुए 21 जनवरी 1972 को त्रिपुरा राज्य को भारतीय संघ में विलय किया गया है जो कि उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और दक्षिणी पूर्व की तरफ से बंगला देश से घिरा हुआ है जिसकी सीमा, पूर्व की तरफ से आसाम व मिजोरम से लगी हुई है।

त्रिपुरा मुख्य रूप से पहाड़ी प्रदेश है जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई 50 से 3080 फुट है, यद्यपि इसकी अधिकतर जनसंख्या मैदानी क्षेत्रों में ही रहती है।

त्रिपुरा राज्य के जिले

1.	त्रिपुरा उत्तर	धर्मानगर
2.	उनाकोटि	कैलाशहर
3.	धलाई	अम्बासा
4.	खोवाई	खोवाई
5.	त्रिपुरा पश्चिम	अगरतला
6.	सिपाईजला	बिश्रामगंज
7.	गोमती	उदयपुर
8.	त्रिपुरा दक्षिण	बेलोनिया


TRIPURA
District Map
INDIA
बाग्लादेश
आसाम
Unokoti District
North Tripura District
Khowai District
West Tripura District
Dhalai District
मिजोरम
Shipahijala District
Gomati District
South Tripura District

पर्वतीय श्रृंखला

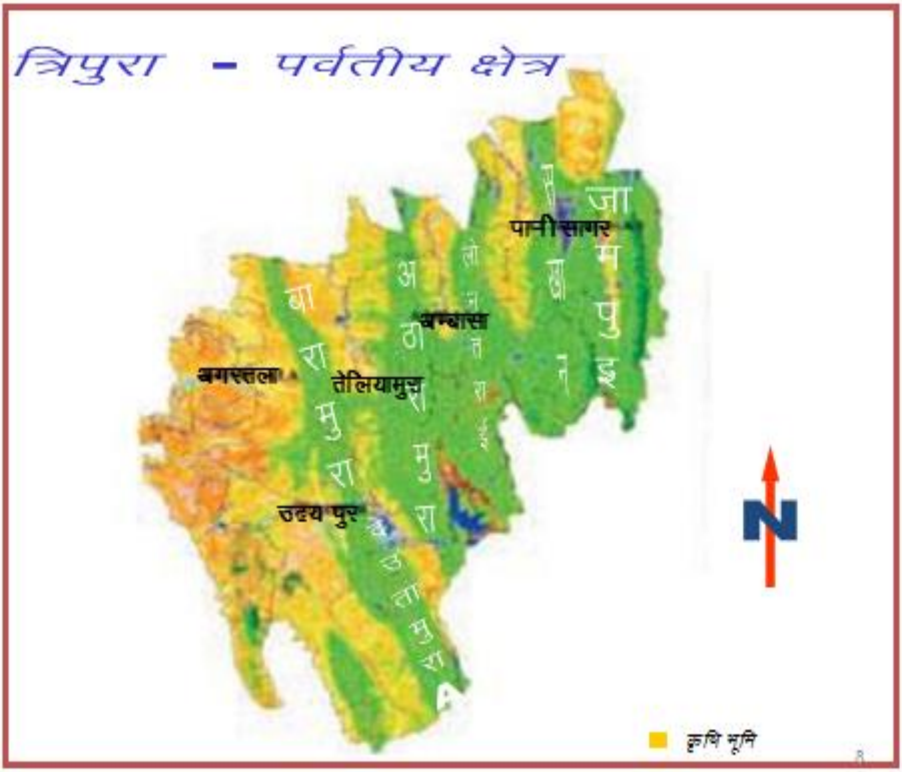
राज्य, उत्तर में 22 डिग्री सात मिनट और 24 डिग्री 2 मिनट उत्तरी देशान्तर और पूर्व में 91 डिग्री शून्य मिनट और 92 डिग्री शून्य मिनट पूर्वी अक्षान्तर रेखाओं के बीच स्थित है जो कि कर्क रेखा के बीच से गुजरता है।

राज्य को तीन मुख्य भागों में बांटा गया है

(1) पर्वत श्रृंखला

(2) ऊबड़ खाबड़ पठारी जमीन

(3) तलहटी के बीच दबी हुई जमीन।



पांच मुख्य पर्वत श्रृंखलाएं राज्य को आमतौर पर उत्तर दक्षिण दिशा में विभाजित करती हैं और दक्षिण की तरफ चिटगांव की ओर पर्वत मालाऐं जाती है। संकरी घाटियां इन श्रृंखलाओं को आमतौर से अलग अलग कर देतीं हैं जिनकी चौड़ाई लगभग 20 किलोमीटर है। पूर्व में मुख्य पर्वत श्रृंखला जम्पुई है जो कि लगातार पश्चिम में जाती है।

उनकोटि – सखंतलांग, लंगथराई,

अठरामुड़ा – कालाझाड़ी और

बारामुड़ा – देवतामुड़ा तक फैली हुई है।

सबसे ऊंची चोटी बेथलीआंगछिप (थाईडावार, शिब – रंगखुंग), है जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई 975.36मीटर(3200फुट) है।

त्रिपुरा राज्य की जलवायु

त्रिपुरा राज्य की जलवायु मध्यम तापमान और उच्च आद्रता से परिपूर्ण है जो कि भ्रमण के लिए दक्षिणी पश्चिमी मानसून के बाद अक्टुबर माह में उपयुक्त होता है। यहां का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच में रहता है। यहां पर वार्षिक औसतन वर्षा लगभग 2100 मिलीमीटर होती है। अभी तक राज्य में अधिकतम वर्षा 2855 मिलीमीटर कमलपुर में व न्यूनतम वर्षा 1811 मिलीमीटर सोनामुरा में रेकार्ड किया गया है।

त्रिपुरा राज्य का मौसम साल में लगभग कुछ बदलाव को छोड़कर एक जैसा ही रहता है। राज्य के मौसम को गर्मी व आद्रता के अनुसार पांच अलग अलग ऋतुओं में विभाजित किया जाता है जिसमें बसन्त, गर्मी, मानसून, पतझड़ और सर्दी मुख्य हैं। बसन्त ऋतु फरवरी माह के मध्यान्त से शुरू होकर मार्च के मध्यान्त तक रहती है। यदि फरवरी माह में वर्षा होती है तो सर्दी वापिस आ जाती है। गर्मी की शुरूआत मार्च के मध्य से हो जाती है और अप्रैल, मई तक अपनी युवावस्था तक पहुंच जाती है। मार्च अप्रैल माह में मानसून से पहले झूम खेती पकने के बाद हमेशा वर्षा होती है। कभी – कभी मानसून पूर्व–वर्षा व मानसून के वर्षा के बीच में कम अन्तराल होता है। यहां का अधिकतम रिकार्ड किया गया तापमान 35. 60 डिग्री सेल्सियस है। मानसून आमतौर पर मई में या जून के प्रथम सप्ताह तक सक्रिय हो जाता है व सितम्बर के अन्त तक रहता है। सर्दियां

नवम्बर से शुरू होकर व जनवरी में अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है। अभी तक न्यूनतम तापमान 4 डिग्री सेल्सियस जनवरी 1995 में रिकार्ड किया गया है।

पूरे वर्ष के दौरान आद्रता आमतौर पर उच्च रहती है। गर्मियों में सम्बन्धित आद्रता 50 प्रतिशत से बढ़कर 74 प्रतिशत हो जाती है। जब कि वर्षा ऋतु में यह 85–92 प्रतिशत से ऊपर हो जाती है।

वर्षा

मौसम के मिजाज का एक महत्वपूर्ण बिन्दु, वर्षा में परिवर्तन है। यह केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर या एक साल से दूसरे साल में ही परिवर्तित नहीं होता बल्कि ऋतुओं के बीच में भी परिवर्तित होता रहता है।

वार्षिक वर्षा 1922 मिलीमीटर से 2855 मिलीमीटर तक रिकार्ड की गई है। वर्षा साधारणतया दक्षिण–पश्चिम(अमरपुर) से उत्तर–पूर्व(धर्मानगर) की तरफ बढ़ती जाती है। वर्षा होने में राज्य के दक्षिण व मध्य भाग के अमरपुर के इर्द गिर्द बहुत ज्यादा अन्तर होता है जो कि लगभग 1500 मिलीमीटर तक पहुंच जाता है, राज्य का उत्तर–पूर्व भाग धर्मानगर के आस–पास है। जहां पर अधिकतम वर्षा होती है। अधिकतम वर्षा अप्रैल से जून व जुलाई से सितम्बर माह में होती है। ये समय अन्तराल साधारण तौर पर खरीफ की फसल का मौसम है जो यहां की मुख्य नगदी फसल है।

मुख्य नदियां

राज्य में दस मुख्य नदियां हैं

1 बुरीमां,

2 गोमती,

3 खोवाई,

4 हाउड़ा,

5 लोन्गाई,

6 ढलाई,

7 मुहुरी,

8 फेनी,

9 जुरी,

10 मनु।

नदियां आमतौर पर प्राकृतिक हैं और इनका बहाव सीधे तौर पर वर्षा के होने से सम्बन्धित है। वर्षा ऋतु में नदियां अपने उफान पर होती है और ग्रीष्म ऋतु में इन सभी नदियों में पानी नहीं रहता। शुद्धता, सतता और लगातार पानी का बहाव नदियों में वनस्पति, वनस्पति की तरह उगने वाले फफूंद आदि की सघनता पर निर्भर करता है। जंगलो के अवैध कटान के कारण इलााके में ज्यादातर नदियां सूखे के समय जल रहित होती हैं।

नदियों में वर्षा के मौसम में कीचड़ भर जाता है व सूखे के समय प्रदूषित हो जाती है। इनके अलावा भी राज्य में बहुत सारी झीलें व तालाब हैं। अकेले त्रिष्णा प्राणी उद्यान के अन्दर ही 13 झीलें हैं और सिपाहीजला



प्राणी उद्यान के अन्दर दो झीलें हैं। बहुत सारे अप्रवासी पक्षी इन झीलों में प्रत्येक वर्ष कुछ समय बिताने के लिए आते हैं। विशेष तौर पर शुद्ध पानी की झील देवतापुकर है जो कि महुरी नदी के स्त्रोत से बनी है जो कि आने वाले समय में एक बहुत आकर्षक पर्यटक स्थल बनेगा।

त्रिपुरा के लोग

जाति के आधार पर पच्चीकारी का काम करने वाले ऐसे खुशमिजाज हैं जैसे कि यहां का प्राकृतिक चित्रण है। केरल अशान्त अरब सागर के समुद्र तट पर बसा हुआ भी भगवान का निवास कहलाता है लेकिन त्रिपुरा प्रकृति मां की सुन्दर पुत्री का रूप है। यहां की महानता और वैभव, राज्य के सदाबहार जंगल जैसी धरोहर की देन है जो कि यहां के लोगों को धनाढ्य बनाने का एक प्राकृतिक स्त्रोत है। लोगों की भाषा विज्ञान व धर्म संस्कृति को धनाढ्य व उत्थान भी यहां के प्राकृतिक स्त्रोत की ही देन है। मूल जातियों के परम्परागत घर पिछले कई हजारों वर्षों से चले आ रहे हैं। त्रिपुरा प्रत्येक वर्ष जन–जातियों के अलावा भी दूसरी जातियों के उत्थान का भी आह्वान करता है। प्रथम राजकीय जनगणना 1872 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार आदिवासियों के अलावा दूसरी जातियां 30 प्रतिशत थी जो बाद के दशकों में लगातार बढ़ती रही। 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार 19 विभिन्न जन–जातियों को एक साथ मिलाकर एक नया समूह का गठन किया जो कि राज्य की पूरी जनसंख्या का 31.05 प्रतिशत तक हो गया।

त्रिपुरा की मुख्य जन–जातियां .

1.	त्रिपुरी	11.	हलाम
2.	रियांग	12.	खासिया
3.	नोआतिया	13.	भूतिया
4.	जमातिया	14.	लेप्चा
5.	उचाई	15.	संथाल
6.	चकमा	16.	भील
7.	मोग	17.	ओरांग
8.	गारो	18.	मुन्डा
9.	लुसाई	19.	मालसुम
10.	कुकी		

इन जन–जातियों के अतिरिक्त दूसरी जातियां 69.95 प्रतिशत है, जिसमें अप्रवासी मणिपुरी भी शामिल हो गये हैं। जन–जातियों में से त्रिपुरी या देवबर्मा लगभग 50 प्रतिशत हैं जबकि जन–जातियों के अलावा बाकी जनसंख्या में बहुत सारे बंगाली और कुछ–एक मैयति एवम् विष्णुप्रिया मणिपुरी लोग हैं जो कई जातियों व उपजातियों से सम्बन्धित हैं। वर्तमान राज्य में कुल आठ जिले हैं व 2001 की जनगणना के अनुसार उनकी साक्षरता व घनत्व की दर निम्नांकित है।

स्त्रोत	2001 की जनगणना

जिले का नाम	जनसंख्या	आदिवासी जन–जाति	अनुसूचित जाति	साक्षरता दर	धनत्व
पश्चिमी त्रिपुरा	15, 32, 982	3, 87, 081	2, 95, 698	77.30	512
उत्तरी त्रिपुरा	5, 90, 913	1, 50, 500	82, 902	73.00	290
दक्षिणी त्रिपुरा	7, 67, 440	2, 89, 519	1, 27, 307	69.90	251
ढलाई	3, 07, 868	1, 66, 326	49, 817	60.90	128
राज्य का योग	31, 99, 203	9, 93, 426	5, 55, 724	73.20	305

आदिवासी लोगों की संस्कृति व जीवनयापन

आदिवासी, भिन्न–भिन्न संस्कृति समृद्ध व जातियां जैसे कि रियांग, चकमा, हलाम व लुसाई सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। नृत्य व गायन उनके जीवन का अभिन्न अंग है। रियांग जाति के लोग सुख समृद्वि के लिए ''गड़िया/गरिया'' नृत्य करते हैं, चकमा जाति के लोग ''बिहु'' नृत्य करते हैं जो कि बंगाली वर्ष के अन्त को दर्शाता है। हलाम जाति के लोगों द्वारा ''हाय–हक'' नृत्य और औरतो के साथ ''चीराउ'' नृत्य यहाँ के नृत्यों के उदाहरण है। त्रिपुरा में मणिपुरी हिन्दुओ का ''बसन्ता–रास'' एक सुन्दर नृत्य है।

उत्तरपूर्वी क्षेत्र का सुदूरवर्ती पर्वतीय श्रृंखला का ''त्रिपुरा राज्य'' तीन तरफ से बंगला देश से घिरा हुआ है, जिसके चारो तरफ सदाबहार सुन्दर पहाड़ियां, घने जंगल और घाटियों से सराबोर सदियों से पर्यटकों का मन सहज ही अपनी तरफ आकर्षित करता रहा है। दार्शनिक दृष्टि से त्रिपुरा में असंख्य मन्दिर, देखने योग्य सुन्दर स्थल व यहां की सुसंस्कृति है। यहां पर उनकोटि में चट्टानों पर धार्मिक चित्रों की नक्काशी की हुई है और देवतामुड़ा में पहाड़ियों की आभा अपने आप में एक प्राकृतिक छटा को दर्शाती है। अपने अवकाश का उचित आनन्द लेने के लिए लोग ''जम्पुई हिल'' जो कि अपने मौसम के मिजाज व सन्तरो के लिए मुख्य रूप से जानी जाती है, में बिताना चाहते हैं। राज्य के यादगार के रूप में बांस पर की गई दस्तकारी द्वारा बनी हुई चीजें व हथकरघा से सम्बन्धित वस्त्र मुख्य है।

त्रिपुरा राज्य की सीमा पर रहने वाले जन–जातियों, सम्प्रदायों में ''भील'', ''सन्थाल'', ''मुन्डा'' और ''ओरान'' जो कि बहुत पहले यानि कि 20 वीं सदी से चाय के बागानों में मजदूरों की हैसियत से काम करने के लिए आए और यहां के निवासी बन गए हैं जो कि त्रिपुरा के जातियों के आधार पर पच्चीकारी आदि का काम भी करते हैं। जबकि कोकबोरोक आदिवासी जन–जातियों में से ''लिंगुआ फैका'' के रूप में निकलकर सामने आए हैं। सीमाओं पर रहने वाले सम्प्रदायों के लोग लगातार अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

''चकमा'' व ''मोग'' जन–जाति के लोग जो कि दो शताब्दियों से पहले से बंगला देश की चिटगांव के पहाड़ी क्षेत्र से आकर त्रिपुरा में आकर बस गए और अपनी अलग भाषा व संस्कृति को जागृत रखते हुए उच्च

आदर्शो के साथ जीवन – यापन कर रहे हैं। त्रिपुरा के रीति रिवाजों की विविधता व स्वीकार्यता के अनुसार यहां पर सब धर्मों – हिन्दू, बौद्ध, मुस्लिम व ईसाई आदि सभी जाति व सम्प्रदायों के त्यौहारों को बहुत ही हर्षोल्लास से मनातें हैं जो आपसी भाई – चारा, शान्ति व सद्भाव की संस्कृति का प्रतीक है।

हालांकि, यहां पर हिन्दू धर्म के अनुयायिओं की बहुतायत है, इसके बावज़ूद भी अन्य सभी धर्मो का जैसे कि इस्लाम, ईसाई और बौद्ध धर्मों का भी वैसे ही आदर किया जाता है जैसे हिन्दू अपने धर्म का। राज्य में **15** जनव*री 2007 को* **14**वें दलाई लामा के आगमन पर न केवल बौद्ध धर्म के लोगों ने जो कि चकमा व मोग सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं, बल्कि सभी धर्म के लोगों ने उनके स्वागत में व आदर सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ी व बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस सौहार्द पूर्ण व्यवहार को देखते हुए त्रिपुरा को भारत में एक आदर्श धर्म निरपेक्ष राज्य के रूप में जाना जाता है।

स्त्रोतः– गणक द्वारा।

वर्ष	जन्म दर		मृत्यु दर		बच्चों की मृत्यु दर	
	भारत	त्रिपुरा	भारत	त्रिपुरा	भारत	त्रिपुरा
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**
1995	**28.3**	**18.9**	**9.0**	**7.7**	**74**	**45**
1996	**27.5**	**18.4**	**8.9**	**6.5**	**72**	**49**
1997	**27.2**	**18.3**	**8.9**	**6.8**	**71**	**51**
1998	**26.5**	**17.6**	**9.0**	**6.1**	**72**	**49**
1999	**26.1**	**17.0**	**8.7**	**5.7**	**70**	**42**
2000	**25.8**	**16.5**	**8.5**	**5.4**	**68**	**41**
2001	**25.4**	**16.1**	**8.4**	**5.6**	**66**	**39**
2002	**25.0**	**14.9**	**8.5**	**5.7**	**63**	**34**

शहर का जनसंख्या का घनत्व

रमणीक स्थान – स्थल

अगरतला जो कि त्रिपुरा की राजधानी है, अपने आप में रमणीक स्थानों, बगीचों, पहाड़ियों, मन्दिरों और झीलों को समेटे हुए विलक्षणता से भरपूर है व राज्य के सैलानियों को यात्रा शुरू करने का सर्वोत्तम स्थान है। दर्शनीय झीलों, झरनों एवं बांधों से सराबोर त्रिपुरा, सैलानियों को स्वतः ही आकर्षित करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से पीलाक पत्थर और लुंगथुंग इस राज्य की प्राकृतिक धरोहर है। इस छोटे से प्रदेश में जम्पुई पहाड़ी, रूद्रसागर और नीरमहल – झीलो का शहर, सिपाहीजला– जीव उद्यान और उदयपुर के आसपास मन्दिरों की भरमार सैलानियों को स्वतः ही आकर्षित करने के लिए रमणीक स्थल हैं।

त्रिपुरा

शान्त वातावरण मे बसा हुआ त्रिपुरा राज्य – यहां की रसीली पहाड़ियां, हरी–भरी घाटियां, पारदर्शी झरनों व प्रचुर मात्रा में शीर्ष पौराणिक कथाओं से सराबोर है जो कि विश्व भर के सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। राज्य में 19 संतुष्ट जन–जातियों के समूह, बंगाली भाषा बोलने वाले जन–जातियों के अतिरिक्त और भिन्न–भिन्न संस्कृतियों से सम्बन्ध रखते हुए, इस प्रायद्वीप को भारत के मानचित्र पर पूर्वोत्तर, भारत को बंगला देश से अलग दर्शाती है।

लेकिन यहां की उत्तरोतर कला, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व विभाग, फ्लोरा और फोना, भिन्न–भिन्न और अपने आप में अप्रतिम चारागाहों में पक्षियों व जानवरों के झुण्ड, यहां कभी–कभी आने वाले आगन्तुकों व सैलानियों पर एक जादू सा कर देते हैं जिसके कारण इन्हें बार–बार यहां आने को विवश होना पड़ता है। राज्य की हस्तकला का एक अपना अन्दाज, उत्तरोत्तर चला आ रहा संगीत, भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की अपनी–अपनी संस्कृति और विश्वास, हजारों वर्षों के यहां के इतिहास, प्राचीन काल से चली आ रही शान्ति बनाए रखने का अहसास पर्यटकों को अपने गन्तव्य तक जाने के लिए प्रोत्साहित करता है। कोई भी आगन्तुक जो त्रिपुरा आता है, जाते समय यहां के मूर्तिकारों, पुरातत्व विभाग की यादगारों, सांस्कृतिक धरोहर आदि की स्मृतियों को अपने मन में संजो कर जाता है।

————————————त्रत्रत्र————————————

अगरतला का इतिहास व उत्पत्ति

अगरतला जो कि त्रिपुरा की राजधानी है, सैद्धान्तिक रूप से भारत के नाना प्रकार के धर्म सम्प्रदायों से परिपूर्ण शहर है। त्रिपुरा, एक ऐसा घर है जिसमें भिन्न–भिन्न प्रकार की जन–जातियां हैं और ये जन–जातियां अपनी–अपनी जातियों का प्रतिनिधित्व करते हुए बहुत ही सौहार्दपूर्ण ढंग से अपना जीवन–यापन करती हैं। अगरतला हरे–भरे जंगलों से भरपूर, हरी चादर ओढ़े, भव्य पर्यटक स्थलों से सराबोर सहज ही पर्यटकों के मन को मोह लेता है। यहां की जन–जातियों की संस्कृति, उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है व पहाड़ियों की ऊंची विशाल चोटियां एवं मोहक हरी–भरी घाटियां, यहां के रमणीक स्थल, अपने आप ही यहां की सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं।

अगरतला

अगरतला, त्रिपुरा की राजधानी है जो कि 23 डिग्री 45 मिनिट से 23 डिग्री 55 मिनिट उत्तरी दिशा में अक्षान्तर और 91 डिग्री 15 मिनिट से 91 डिग्री 20 मिनिट पूर्वी दिशा में देशान्तर, हाउड़ा नदी के बहाव से बने मैदानी भाग में बसा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 सबरुम–अगरतला को सिल्चर, शिलंग / शिलांग गुवाहटी व आसाम के अन्य प्रमुख शहरों से जोड़ता है। अगरतला व आगे के जिले देश के अन्य हिस्सों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। अगरतला देश के अन्य हिस्सों से वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है।

1874 ईस्वी में अगरतला में नगरपालिका प्रशासन की स्थापना हुई और तत्कालीन महाराजा बीर बिक्रम माणिक्य बहादुर ने 1940 ईस्वी में इस शहर का योजनाबद्ध तरीके से विकास करवाया। 15 अक्टुबर 1949 को तत्कालीन राजा के शासन काल के बाद त्रिपुरा राज्य, जहां राजाओं का राज्य था, का भारतीय संघ में विलय कर दिया गया। अगरतला शहर, राज्य का राजनीतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया है। असाम से अगरतला तक रेलवे लाइन का निर्माण हो चुका है और अगरतला से सबरूम का कार्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। लामडिंग से अगरतला व आगे तक ब्रॉडगेज लाइन है व दिल्ली से कई रेलगाड़ी चलती हैं।

अगरतला का मौसम

अगरतला का मौसम उष्णकटिबन्धीय मानसून की तरह से है। औसतन वार्षिक वर्षा लगभग 220 सेन्टीमीटर रिकार्ड की गई है। साल भर में 100 दिन तक वर्षा होती है। औसतन तापमान 4.2 डिग्री सैल्सियस से 37.6 डिग्री सैल्सियस तक है। अगरतला में सर्दियों का मौसम नवम्बर माह से फरवरी माह, गर्मी का मौसम मार्च माह से मई माह तक और मानसून जून माह से सितम्बर माह तक सक्रिय रहती है। यहां का तापमान औसत दर्जे का है और जलवायु में उच्च आद्रता है। हवाएं जो औसत दर्जे के वेग के साथ अधिकतर दक्षिण से पूर्व की तरफ चलती हैं। हवाओं का औसतन वेग 4 से 9 किलोमीटर प्रति घण्टा तक सीमित है।

अगरतला की भौगोलिक स्थिति

अगरतला शहर की समुद्रतल से ऊंचाई 12.8 मीटर(42फुट) है। शुरू में अगरतला नगर निगम का क्षेत्र, उसके बाद शहर का मध्य क्षेत्र व सबसे अन्त में अगरतला का बाहरी क्षेत्र आता है। शहर के मध्य भाग को चाय की प्याली की तरह आकार दे रखा है। शहर का मध्य भाग दक्षिण में हाउड़ा नदी और उत्तर में कटाखल से घिरा है। इस के चाय की प्याली का आकार होने के कारण मानसून के समय बाढ़ की स्थिति की पुनरावृत्ति हो जाती है। शहर को भूकम्प की दृष्टि से ''5'' श्रेणी में रखा गया है।

तराई

अगरतला के मध्य भाग के दक्षिणी व उत्तरी दोनों तरफ पठारी जमीन है।

शहर का जनसंख्या का घनत्व

अगरतला शहर के मध्य भाग में जनसंख्या का घनत्व इस शहर के चारों तरफ के घनत्व की अपेक्षा अधिक है। आंकड़े बताते हैं कि केवल 17 प्रतिशत क्षेत्र जो कि शहर का मध्य भाग है (पूर्ववर्ती अगरतला नगर निगम का क्षेत्र) जिसमें कि जीएपीए जनसंख्या का 50 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसके अतिरिक्त नये अगरतला नगर निगम के समेत क्षेत्र

में जो कि 68 प्रतिशत है उसमें जीएपीए की कुल जनसंख्या का 96 प्रतिशत भाग निवास करता है।

अगरतला पश्चिमी त्रिपुरा जिले के मुख्य भूभाग पर स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 अगरतला को सिल्चर, गुवाहटी व आसाम के अन्य प्रमुख शहरों से जोड़ता है। अगरतला देश के अन्य हिस्सों से सड़क, हवाई व रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। केवल राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 ही राज्य को देश के अन्य हिस्सों से सड़क मार्ग द्वारा जोड़ता है। दूसरे जिलों के भी कई मुख्य सड़कें हैं जो अगरतला को राज्य के अन्य भागों से जोड़तीं हैं।

मेले व त्योहार

राज्य में वर्ष भर के दौरान विभिन्न सामाजिक व धार्मिक मेलों एवं त्योहारों का आयोजन होता है। व्यवहारिक तौर पर यहां पर जन–जाति के त्योहारों के अपने–अपने विशेष नाच गाने हैं जो कि पूर्ण श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाये जाते हैं।

दुर्गा पूजा (दशहरे के समय), खारची पूजा, दीपावली, ढोल यात्रा (होली), पौष सन्क्रान्ति, अशोक अष्टमी, बुद्ध जयन्ती, ईद, क्रिसमस एवं नव वर्ष यहां के प्रमुख पर्व हैं। गरिया, केर, गंगा एवं गजन यहां की जन–जातियों के महत्वपूर्ण उत्सव हैं। अशोक अष्टमी के दौरान उनकोटि में विशेष आयोजन होता है।

पुराना अगरतला में 14 देव देवियों का मन्दिर, खारची पूजा के दौरान एवं पौष सन्क्रान्ति मेला ''तीर्थ मुख'' सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं।

मई माह में रविन्द्र व नजरूल उत्सव, अगस्त माह के दौरान मेलाघर में नौका दौड़ एवं नवम्बर माह में सन्तरा व पर्यटन के उत्सव जम्पुई पहाड़ी के क्षेत्र में मनाए जाते हैं। कुछ मुख्य त्यौहार नीचे दिये गए हैं:–

मुख्य व महत्वपूर्ण त्योहारों की सूची

- दुर्गा पूजा
- दिवाली
- खारची पूजा
- गरिया पूजा
- केर पूजा
- अशोक अष्टमी मेला
- बुद्ध पूर्णिमा
- पौष सन्क्रान्ति मेला
- वाह (दीप) त्योहार
- गंगा पूजा
- रश मेला
- मंसा मंगल

पर्व व मेले

साल भर में और त्रिपुरा के समस्त भागों में भिन्न–भिन्न पर्व व मेले आयोजित किये जाते हैं जो कि बहुत सारे श्रद्धालुओ व पर्यटकों को अपने यहां आने के लिए आकर्षित करते हैं उनमें से निम्नलिखित मेले व पर्व मुख्य रूप से मनाये व आयोजित किये जाते हैंः–

मुख्य पर्वों व मेलों की सूचीः–

नाम	स्थल	माह
पौष सन्क्रान्ति त्यौहार	तीर्थमुख	जनवरी
पुस्तक मेला	अगरतला	फरवरी
अशोक अष्टमी	उनकोटि	अप्रैल
गरिया व गंजन त्यौहार	पूरे राज्य में	अप्रैल
रविन्द्र/नजरूल जयन्ती	पूरे राज्य में	मई
खारची मेला	14 देव देवियों का मन्दिर पुराना अगरतला	जुलाई
नौका दौड़	मेलाघर/गन्डाचेरा	अगस्त
मंसा मंगल	पूरे राज्य में	अगस्त
दुर्गा पूजा	पूरे राज्य में	अक्टुबर
दीवाली मेला	माता त्रिपुरेश्वरी मन्दिर, उदयपुर	नवम्बर
रश मेला	कमलपुर, कैलाशहर, खोवाई, अगरतला	नवम्बर
संतरा व पर्यटन मेला	जम्पुई पहाड़ी	नवम्बर

दुर्गा पूजा

हर वर्ष अक्टुबर के माह में प्रमुख त्यौहार दुर्गा पूजा का आयोजन होता है। समस्त गांव व शहर इस पूजा के जश्न में डूब जाते हैं। यह पूजा तीन दिन तक चलती रहती है व चौथे दिन इस पूजा के समापन पर दुर्गा माता की प्रतिमा को जुलूस के रूप में किसी नदी, बाड़ी, झील या तालाब में विजय दशमी के दिन विसर्जित किया जाता है।

दिवाली

दुर्गा पूजा के बाद दिवाली पर्व मनाया जाता है। उस दिन माता बाड़ी के निकट त्रिपुरा सुंदरी मां के मन्दिर, उदयपुर के पास एक मेले का भी आयोजन किया जाता है। यह मन्दिर 51 पवित्र शक्ति पीठों में से एक है।

खारची पूजा

14 देवों की पूजा को त्रिपुरा में खारची पूजा के नाम से जाना जाता है। जिसको त्रिपुरा वासी गर्व के रूप में देखते हैं ये एक सप्ताह तक चलने वाला पर्व हर वर्ष जुलाई के महीने में चतुर्दश देवता के मन्दिर, जो कि अगरतला से दक्षिण पूर्व में 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, में मनाया जाता है।

गरिया पूजा

त्रिपुरा के आदिवासी, गरिया पूजा को वैशाख माह (अप्रैल) के सातवें दिन मनाते हैं जो कि हिन्दु वर्ष का दूसरा प्रारम्भिक माह है। पुरूष व महिलाएं सभी मिलकर ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए इस पूजा को मनाते हैं।

केर पूजा

केर पूजा आम तौर पर खारची पूजा के 15 दिनों के बाद शुरू होती है और यह साधारणतया विश्वास किया जाता है कि यह पूजा राज्य के शाही परिवार द्वारा महल में राज्य व राज्य के लोगों के कल्याण के लिए की जाती है।

अशोक अष्टमी मेला

यह मेला प्रत्येक वर्ष अप्रैल के महीने में कैलाशहर के उपमंडल उनकोटि तीर्थ पर आयोजित किया जाता है। राज्य के सभी भागों से तीर्थ यात्री पहाड़ी चट्टानों पर खुदाई किए हुए देवी देवताओं की मूर्तियों की पूजा करने के लिए एकत्रित होते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा

हालांकि राज्य में बौद्ध धर्म के लोगों के रहने की संख्या बहुत ही कम है फिर भी भगवान बुद्ध का जन्मोत्सव एक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस में सभी समुदायों के लोग बड़े ही उत्साह के साथ इस त्योहार में हिस्सा लेते हैं।

पौष सन्क्रान्ति मेला

यह मेला गोमती नदी के स्त्रोत के पास आयोजित किया जाता है, जिसे तीर्थमुख के नाम से भी जाना जाता है। इस उत्सव में राज्य भर के श्रद्धालु बड़ी संख्या में एकत्रित हो जाते हैं। आदिवासी व गैर आदिवासी लोग झील में पवित्र स्नान के लिए उत्तरायण सन्क्रान्ति के अवसर पर हर साल एकत्रित होते हैं। त्रिपुरा में तीर्थमुख ऊंची पहाड़ियों से घिरा हुआ, सुन्दर व अनूठा स्थान है। त्रिपुरा वासी विशेष रूप से इच्छापूर्ति के लिए यहां पर आते हैं व साल भर में उन की खुद की मनोकामनाओं को साकार करने के लिए एक व्रत रखते हैं।

लेकिन पौष सन्क्रान्ति के अवसर पर यह स्थान हजारों आदमियों का संगम बन जाता है। प्राचीन दिनों से तीर्थमुख त्रिपुरी हिन्दू आदिवासियों का एक पवित्र स्थान बन चुका है। इस विशिष्ट दिवस पर लोग अपने पूर्वजों के नाम पर सिर मुंडन करवाते हैं और मूल रूप से हिन्दू धर्म के लोग, अपने पूर्वजों की आत्माओ की संतुष्टि के लिए व्यक्तिगत बलिदान करते हैं। यहां पर दो दिन के मेले का आयोजन भी किया जाता है।

वाह (लैम्प) त्यौहार

मोग समुदाय के लोग बंगाली आषाढ़ की पूर्णिमा से लेकर बंगाली आश्विन की पूर्णिमा तक तपस्या करते हैं व आत्म निरीक्षण करते हैं। आम तौर पर इस महीने में कोई भी शुभ कार्य जैसे कि शादी आदि नहीं की जाती है।

यहां तक कि विवाहित महिलाएं भी इस समय के दौरान अपने माता पिता के घर भी नहीं जाती हैं ''वाह'' त्यौहार आश्विन बंगाली माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। ''लैम्प'', जो भगवान बुद्ध को समर्पित

है, की शुरूआत इसी दिन से करते हैं। युवा लड़के व लड़कियां हाथ में दीपक को लेकर पंक्तियों में खड़ा होकर भगवान बुद्ध की पूजा के लिए बुद्ध मन्दिर परिसर में गाने व नृत्य के माध्यम से आमोद में लिप्त हो जाते हैं। मोग समुदाय के प्रारम्भिक नृत्य को वाह नृत्य या लैम्प नृत्य के नाम से जाना जाता है।

नृत्य

जन–जाति	नृत्य
त्रिपुरी	गरिया, झूम, माइमिता, मसक, सुमानी, लेबान्ग, बूमानी, ममिता
रियांग	होजागिरी, गरिया
चकमा	बिहू
लुसाई	चेराउ वैलकम
मालसुम	हाय–हक
गारो	वांगला
मोग	संग्राइका, चिमीथांग, पडीसा, अभांगमा
जमातिया, कलाइ	गरिया
बंगाली	गजन, धमाइल, सारी, रबिन्द्र
मनीपुरी	बसन्ता–रास, पुन्गाचालम

मोसाक सुलमनी, जादू कोलिजा, डन्गसा म्वामन्ग भी अन्य नृत्य हैं जो अन्य उपयुक्त अवसरों पर नाचे जाते है।

वाद्य यन्त्र – खम्ब/ढोल, सुमुई/बांस बान्सुरी, लेबांग, सरीन्द / सरीन्द्रा, दोतारा, खेन्ग्रोन्ग, चान्गप्रेंन्ग, ''दामा'' व ''आदूरी'' (भैंस के सींग द्वारा निर्मित) आदि

सांस्कृतिक धरोहर

वैश्विक सम्प्रदाय के मूल को खंगालने से उनके विचारों, संस्कृति, संस्कृति के आपसी तालमेल और कला संस्कृति एवं धार्मिक विचारों का पता चलता है। लेकिन त्रिपुरा के संदर्भ में ये वर्णन करने योग्य है कि यहां पर लोग आपस में मिलजुल कर साम्प्रदायिक सद्भाव को कायम रखते हुए बिना किसी तनाव के अपना जीवन–यापन करते हैं। राज्य की 60 प्रतिशत जमीन सदाबहार जंगलों व पहाड़ी उबड़ – खाबड़ पठारी जमीन होते हुए भी यहां के लोग मौज मस्ती के साथ अपने जनजातीय रीति रिवाजों के अनुसार उचित व उपयुक्त अवसरों पर संगीत व नृत्य का आनन्द लेते रहते हैं।

मैदानी इलाकों में जहां पर धान की खेती होती है, झीलें, नदियां और घास की हरी चादर ओढ़े लोगो की बस्तियों में से रविन्द्र संगीत (रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित संगीत), नजरूल गीति (कवि काजी नजरूल इस्लाम द्वारा गाए गए गीत) और संगीतकार सचिन देबबर्मन द्वारा रचित मधुर संगीतों की धुन गुंजायमान होती रहती है जो कि यहां के लोगों के जीवन में खुशियों की लहर का संचालन करती है।

नृत्य

वंगला नृत्य

चीरा नृत्य

हौजागिरी नृत्य

लेबांग बुमानी नृत्य

गरिया नृत्य

''सारी जारी'' नृत्य,

वंगला नृत्य

पकी हुई फसल कटने के बाद वंगला नृत्य (प्रथम चावल खाने का उत्सव) हर घर में किया जाता है। संगनाकमा समुदायों का मुखिया हर घर का दौरा करता है और पूजा के एक भाग के रूप में कद्दू को काटा जाता है और एक कद्दू को बलि के रूप में भी काटा जाता है। उसके बाद महिलाएं ''दामा'' व ''आदूरी'' की ताल पर नृत्य करतीं हैं जो कि भैंस के सींग की बनी होतीं हैं। यह नृत्य युद्ध के अभ्यास का एक प्रतीक है।

चीरा नृत्य

दरलांग जाति के लोग जीवन के बाद भी विश्वास करते हैं। वे मानते हैं कि आदमी मृत्यु के बाद स्वर्ग में जाते हैं। संयोग से लगता है कि यदि एक गर्भवती औरत मर जाती है तो वह बहुत कष्ट महसूस करती है। उसे सारे शारीरिक कष्ट के साथ स्वर्ग के लिए लम्बी यात्राएं करनी पड़ती हैं, ऐसा इन लोगों का धारणा व विचार है।

अतः उसके प्रसव काल के अंतिम चरण में सम्भावित प्रसव के दौरान या उससे पहले उसके रिश्तेदार उस औरत के दिमाग में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए दिन–रात समूहों में चीरा नामक नृत्य करते हैं। उनका विश्वास इतना दृढ़ है और उनका मानना है अगर वो इस मोड़ पर मर भी जाती है तो बड़े उत्साह व साहस के साथ स्वर्ग में जाएगी और उसकी अंतिम सांस तक बांस की धुन पर नृत्य चलता है।

हौजागिरी नृत्य

नृत्य का विषय लगभग अन्य जन–जातियों की तरह हो सकता है। रियांग समुदाय के नृत्य में दूसरों से काफी फर्क है। हाथ या शरीर के ऊपरी भाग को हिलाना कुछ हद तक सीमित है जबकि कमर से लेकर पैरों के नीचे तक एक अद्भुत सी लहर बनती है।

नर्तक सिर पर एक बोतल और प्रकाशित दीपक के साथ एक छोर पर खड़े होते हैं, रियांग स्त्रियां नृत्य की धुन में शरीर के निचले भाग को घुमाते रहती हैं। यह नृत्य देखने वालों को हैरतअंगेज लगता है। वह बाह्य यंत्र के रूप में जैसे खम्ब, बांस की बांसुरी ओर बांस की झाडू का इस्तेमाल भी करते हैं।

रियांग महिलाएं काले रंग का पचरा और रिया को पहनना पसन्द करते हैं। रीयांग महिलाएं सिक्कों की अंगूठी व माला पहनती हैं जिससे आम तौर पर अपने ऊपरी भाग को ढक रखती हैं। वे कानों में भी सिक्कों के छल्ले पहनती हैं। वे गहनों के रूप में सुगन्धित फूलों की शौकीन होती हैं।

लेबांग बुमानी नृत्य

जब गरिया उत्सव खत्म हो जाता है तो त्रिपुरा वासी मानसून का इन्तजार करते हैं। इस दौरान पहाड़ियों की तलहटी में जो बीज बोए जाते हैं, उनकी तलाश में लेबांग नामक आकर्षक रंग–बिरंगे कीटों के झुण्ड आते हैं। कीटों का ये सालाना भ्रमण यहां के आदिवासी युवाओं को काफी आकर्षित करता है। पुरूष वर्ग बांस की दो पत्तियों के साथ विशेष संगीत में आवाज निकालते हैं तो स्त्रियां इन लेबांग नामक कीट–पतंगो को पकड़ने के लिए पहाड़ियों के निचले भागों में उनके पीछे दौड़ती हैं।

बांस की पत्तियों से निकली सुरीली आवाज कीटों को उनके छुपने के स्थान से निकलने को मजबूर करती है और स्त्रियां उन्हें पकड़ लेती हैं। समय के साथ पहाड़ियों पर झूमने की ये परम्परा फीकी पड़ती जा रही है। लेकिन इन की सांस्कृतिक छाप समाज में गहरी पैठ बना चुकी है। ये अभी भी इन पहाड़ियों में यादों के रूप में बसी हुई है। जिसे आज भी आदिवासियों में यादों में एक धरोहर की तरह बसा रखा है। नृत्यों के लिए त्रिपुरा वासी वाद्ययंत्र "खम्भ" का प्रयोग करते हैं जो कि बांस का बना होता है इसी तरह से बांस के बने हुए सारिन्द्रा और लेबांग का भी प्रयोग करते हैं। त्रिपुरा की औरतें साधारणतः स्वनिर्मित गहने जैसे जंजीर, चूड़ियां, कानों की बाली व नथ जो कि सोने, चांदी व कांसे की बनी होती है, पहनती हैं। फूलों को भी वे गहने के रूप में प्रयोग में लाना पसन्द करती हैं।

गरिया नृत्य

त्रिपुरा की संस्कृति व जीवन, झूम की खेती पर निर्भर है। जब खेत को बिजाई के लिए तैयार किया जाता है तो वह अप्रैल के माह में गरिया भगवान की पूजा अर्चना अच्छी पैदावार के लिए करते हैं। गरिया

पूजा 7 दिनों तक चलती है तथा गीतों व नृत्यों के देवता को मनाने व मनोरंजन के प्रयोजन के लिए करते हैं।

''सारी'' नृत्य,

इस्लाम का ''जारी'' या ''सारी'' नृत्य, उल्लासपूर्वक मनाया जाने वाला, क्रिसमस का पर्व व हर्षोल्लास से मनाया जाने वाला बुद्ध पूर्णिमा का त्योहार, यहां के साम्प्रदायिक सद्भाव को दर्शाता है। लेकिन एकता के लिए ये आवश्यक है कि एक जैसे पर्व व संस्कृति को अपनाया जाय जिससे एक ही भाषा व संस्कृति को अपनाने में बाधा न आए। जन–जाति के अलावा बंगाली जाति के लोग प्रत्येक वर्ष एक सप्ताह तक चलने वाली पूजा मनाते हैं जिसको ''चतुर्दश देवता'' के मन्दिर में मनाया जाता है, जो कि मूल जन–जाति के लोगों द्वारा अपने रीति रिवाजों के अनुसार जुलाई माह में मनाया जाता है और इस पर्व को सारे लोग बहुत ही हर्षोल्लास से मनाते हैं और इसके अलावा 5 दिन तक चलने वाली दुर्गा पूजा को सभी लोग एक साथ मिलकर बहुत खुशी से मनाते हैं।

खाने–पीने की आदतें और त्रिपुरा के मुख्य व्यंजन

पिछले कई सौ वर्षों के इतिहास के पन्ने पलटने से पता चलता है कि यहां के भिन्न – भिन्न प्रकार के व्यंजनों व उनके स्वाद का यहां पर आए हुए पर्यटकों व लोगों ने भरपूर आनन्द लेते है व लोग बार – बार इस रमणीय जगह पर आना चाहते हैं।

यहां पर बने हुए चीनी पाक कला के स्वादिष्ट व्यंजन, न केवल त्रिपुरा बल्कि विश्व में प्रसिद्ध हैं जो कि लगातार सैलानियों के मन को अपने तरफ आकर्षित करते हैं यहां तक कि जो अति विशिष्ट मेहमान सैर करने के लिए चीन में जाते हैं वो भी यहां के बनी हुई ''डक रोस्ट'' की तारीफ करते हैं। फ्रेंच तरीके से बने हुए व्यंजन भी यहां के मशहूर व्यंजनों में से एक हैं और इन्हें यूरोप में भी बड़े शौक से खाया जाता है। मुगल शासनकाल में शासकों को परोसने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों का यहां के इतिहास में भी वर्णन है। अपने दिमाग में ये रखना होगा कि पूर्वी पर्वत श्रृंखलाओं की रानी जो कि त्रिपुरा के नाम से जाना जाता है। यदि वहां भ्रमण के लिए जाना है तो वहां के व्यंजनों को बिना खाए राज्य को नहीं छोड़ना है।

त्रिपुरा की संस्कृति की झलक यहां के जन–जाति के लोगों व जन–जाति के अलावा अन्य लोगों के खानपान से मिलती है। अगर ज्यादा मसालेदार भोजन को अलग – थलग कर दिया जाय, यहां तक कि दो या तीन तरह के चीनी पाक कला के व्यंजनों को भी जो शहरी रेस्तराओं में उपलब्ध होते हैं, तो यहां के बंगाली जाति के लोग चावल, मछली, मुर्गे का मांस, बकरे का मांस और सुअर के मांस पर ही निर्भर हैं। हालांकि कुछ मुस्लिम समुदाय के लोग गाय का मांस भी खाते हैं जो कि राज्य में आसानी से उपलब्ध नहीं होता। फिर भी जन–जाति के अतिरिक्त दूसरे लोग बहुत मेहनत से मसालेदार मछली की कढ़ी बनाते हैं जो कि यहां पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और बंगला देश से भी आयात की जाती है। सबसे लोकलुभावन और स्वादिष्ट मछली ''हिल्सा'' है जिसको उबाल कर सरसों के तेल में व हरी मिर्च के साथ तैयार किया जाता है।

हलूद भरता

कच्ची इमली की लुगदी के साथ सूखी मछली को भून कर तैयार किया जाता है। किसी भी मछली के टुकड़ों को काटे हुए प्याज, हरी मिर्च और नमक को एक बांस के पाइप में भरा जाता है और उस का मुंह बन्द करके आग पर रख दिया जाता है 10 – 15 मिनिट के बाद, जो कि व्यंजन की मात्रा पर निर्भर करता है, पाइप को आग पर से उतारा जाता है और उसके अन्दर के व्यंजन को गर्म चावल के साथ खाने के लिए परोस दिया जाता है।

पोर्क भरता

जन–जाति के लोग सुअर के मांस को बड़े शौक से खाते हैं और ये लोग इसको दो तरीकों से खाते हैं। पहले तरीके के अनुसार बहुत कम मसाले वाली साधारण ''पोर्क कढ़ी'' जबकि दूसरे तरीके के अनुसार ''भरता'' बनाकर जो कि उच्च्च तापमान पर उबाल कर बनाया जाता है। पोर्क को बनाने के लिए छिला हुआ प्याज, अदरक, भुनी हुई मिर्च, सुगन्धित तेजपत्ते व नमक की आवश्यकता होती है।

भोजन को तैयार करने के ऊपरिलिखित साक्ष्यों के अनुसार जन–जाति लोगों का भोजन शुद्ध, ताजा व प्रदूषण–रहित है। जन–जाति के लोग अपने खेतों में चावल व सब्जियां बिना किसी रासायनिक खाद के ही उगाते है। केवल जली हुई लकड़ियों की राख व गाय के गोबर से ही खेती की जाती है जिसकी उत्पादन क्षमता कम है लेकिन उत्पादक पदार्थो का स्वाद बहुत अच्छा होता है।

बंगाली व्यंजन	: चावल, दाल, सब्जी, मछली, मांस, दही आदि
दक्षिणी भारत के व्यंजन	: उपलब्ध
उत्तरी भारत के व्यंजन	: उपलब्ध
चीनी व यूरोप के व्यंजन	: उपलब्ध

सांस्कृतिक धरोहर

त्रिपुरा व रविन्द्र नाथ टैगोर

त्रिपुरा व सचिन देवबर्मन का घर

त्रिपुरा व रविन्द्र नाथ टैगोर

नोबल पुरस्कार विजेता कवि रविन्द्र नाथ टैगोर के त्रिपुरा राज्य के राजघराने से और त्रिपुरा राज्य के चार शासकों से जिनकी त्रिपुरा राज्य के इतिहास में मुख्य भूमिका रही है, से घनिष्ठ सम्बन्ध रहे है

त्रिपुरा राज्य के माणिक्य वंश के शासक राजा रत्नमाणिक्य (1464–68ई) का बंगाली भाषा व संस्कृति के प्रति प्राकृतिक व सैद्धान्तिक मुक्त विचार थे, जिसके कारण इसे स्वतंत्रता से फलीभूत होने का बढ़ावा मिला।

अपने आरंभिक समय में, राजा बीर चन्द्र माणिक्य(1862–1896ई) को दिनांक 6 मई 1886 को पत्र लिखा जिसमें कवि रविन्द्र नाथ टैगोर से पारिवारिक सम्बन्धों का उल्लेख है। त्रिपुरा के इतिहास व ऐतिहासिक पुस्तक ''राजमाला'' के अन्दर झांक कर देखें तो पता चलता है कि रविन्द्र नाथ टैगोर के उपन्यास ''राजऋषि'' और नाटक ''विसर्जन'' और ''मुकुट'' ऐतिहासिक पुस्तक ''राजमाला'' ग्रहीत व ''राजमाला'' पर आधारित हैं। हालांकि इससे भी पहले युवा कवि रविन्द्र नाथ को 1882ई में राजा बीर चन्द्र माणिक्य की उदारता को महसूस करने का बहुत बड़ा अवसर मिला। राजा 1881 में अपनी रानी श्रीमति भानुमति की असमयिक मृत्यु के कारण बहुत दुखित स्थिति में थे। जब राजा को अपनी रानी की मृत्यु का आघात पहुचा उस समय राजा बीर चन्द्र माणिक्य, रविन्द्र नाथ टैगोर की स्नेह पूर्ण कविता ''भग्नहृदय'' का अध्ययन कर रहे थे।

उन्नत व संवेदनशील राजा बीर चन्द्र जो व्यवहारिक तौर पर एक कवि के हृदय की गहराइयों को लिए थे, ने श्री राधारमण घोष को अपना दूत बनाकर कवि टैगोर के पैतृक घर जोरासांको, कलकत्ता में भेजा और

राजा की तरफ से कवि को बधाई दी। रविन्द्र नाथ टैगोर के त्रिपुरा के शाही घराने से घनिष्ठ सम्बन्ध थे लेकिन राजा बीर चन्द्र माणिक्य की 1896ई में मृत्यु होने के साथ ही सम्बन्ध खत्म हो गए।

त्रिपुरा व सचिन देवबर्मन का घर

सचिन देवबर्मन का जन्म त्रिपुरा के शाही घराने से मिला पैत्रिक निवास में, जो कि वर्तमान में बंगलादेश में है, 1 अक्टुबर 1906 को हुआ।

कार्ता ने अपने बचपन का समय, अपनी पढ़ाई व संगीत के क्षेत्र में उत्तम कला सीखने में व्यतीत किया जिससे उनकी प्रतिभा का आरंभिक विकास हुआ। वास्तव में उनके पिता "कार्ता" नबद्वीप चन्द्र देबबर्मन को व्यवहारिक तौर पर पूर्ण रूप से कोमिला के शाही घराने से बर्खास्त कर दिया गया क्योंकि सचिन कार्ता के रास्ते में गद्दी के उत्तराधिकारी का विवाद पैदा हो गया और उन्हे अगरतला लाया गया।

उन्हें बाल्यकाल में ही अगरतला लाया गया जो कि त्रिपुरा की राजधानी है उस समय त्रिपुरा में राजा राधा किशोर माणिक्य (1896–1909) का शासन था। उसके बाद वे कई बार अगरतला आए व संगीत के कार्यक्रमों में उन्होंने हिस्सा लिया।

उनकी मुख्य संगीत रचनाओं ने मूल रूप से भारतीय संगीत को तीन दशकों से भी ज्यादा समय तक तरोताजा व सजीव रखा। वास्तव में एक लम्बे समय तक, 50 से 70 के मध्य तक बहुत बड़ी संयुक्त सफलता असाधारण "सचिन कार्ता" को संगीत में हासिल हुई।

नोट – कार्ता अर्थात कर्त्ता राजघराने में काम करने वालों को कर्त्ता कहा जाता है।

रोचक स्थान रमणीक स्थान

त्रिपुरा पहले राजाओं का राज्य हुआ करता था। इस राज्य का मौसम प्रदूषण से रहित, सौहार्दपूर्ण पर्यावरण और बहुत सुहावना है। यहां के निवासी अधिकतर 19 जन–जातियों, बंगाली व मणिपुरी आदि सम्प्रदायों से सम्बन्धित हैं। यहां के भ्रमण योग्य स्थान निम्नांकित हैं:–

अगरतला व उसके इर्द गिर्द स्मारक स्थल

अगरतला के चारों तरफ

- उज्जयन्त महल
- त्रिपुरा राजकीय सग्रहालय
- सुकान्त एकेडमी
- नजरूल कलाक्षेत्र
- पुर्वासा
- नेहरू पार्क
- रविन्द्र कानन
- अगरतला राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय
- एम बी बी महाविद्यालय
- बेनुबन बिहार

पुरातन पर्यटक स्थल

- उनकोटि
- पीलाक
- देबतामुड़ा (चाबी मुड़ा)
- बॉक्सनगर
- गुनाबती मन्दिरों का समूह
- भुवनेश्वरी मन्दिर / त्रिपुरसुन्दरी मन्दिर (उदयपुर)

प्राकृतिक पर्यटक स्थल

- सिपाहीजला वन्य जीव प्राणी उद्यान
- त्रिष्णा वन्य जीव प्राणी उद्यान
- गोमती वन्य जीव प्राणी उद्यान
- रोवा वन्य जीव प्राणी उद्यान
- जम्पुई पहाड़ी (कंचनपुर)

धार्मिक पर्यटक स्थल

♥ लक्ष्मी नारायण मन्दिर (अगरतला)

♥ जगन्नाथ मन्दिर (अगरतला)

♥ चतुर्दश देवता मन्दिर (अगरतला)

♥ गेदु मियां की मस्जिद (अगरतला)

♥ मरियम नगर गिरजाघर (अगरतला)

♥ कस्बा काली मन्दिर (बिशालगढ़)

♥ चन्द्रपुर मस्जिद (बेलोनिया)

♥ त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर/ त्रिपुरसुन्दरी मन्दिर (उदयपुर)

♥ भुवनेश्वरी मन्दिर (उदयपुर)

♥ महामुनि पैगोड़ा (सबरूम)

जल सम्बन्धी पर्यटक स्थल

✓ कमलासागर (विशालगढ़)

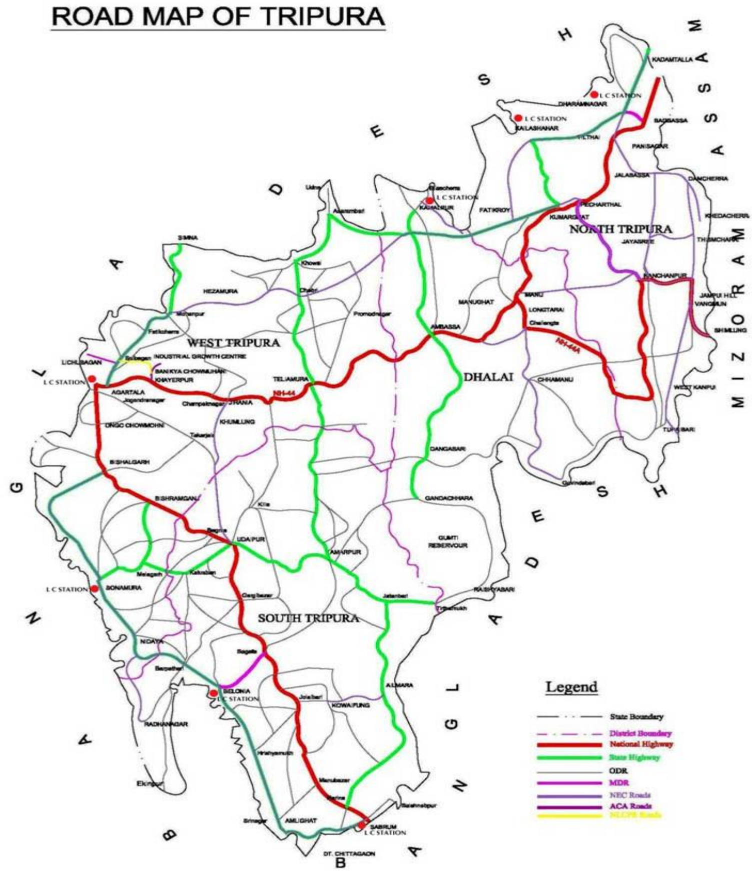
✓ नीरमहल (रूद्रासागर)

✓ डम्बूर झील (अमरपुर)

ईको पार्क

- जम्पुई हिल
- खुमलवंग इको पार्क
- बारामुड़ा इको पार्क
- तेपानिया इको पार्क
- कलपानिया इको पार्क

अन्य – मालंचा निवास
कुन्जवन महल
अखौरा चैक पोस्ट
पुस्तकालय



त्रिपुरा नक्शा 2001

त्रिपुरा के स्मारक स्थल

त्रिपुरा के स्मारक स्थल इस राज्य के इतिहास व संस्कृति के साक्षी है।

अगरतला व उसके इर्द गिर्द स्मारक स्थल

उज्जयन्त महल

यह शाही घराना, जो कि यहां की राजधानी अगरतला में स्थित है, का महल है। यह 1 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बना हुआ है जो कि महाराजा राधा किशोर माणिक्य द्वारा 1899–1901 ई में बनवाया गया था।



यह दो मंजिला हवेली है जो कि संयुक्त भवन निर्माण शैली से बनाई गई है, जिसमें तीन गुंबद हैं और मध्य वाले गुम्बद की ऊंचाई 86 फुट है।

शानदार टाइलों वाला फर्श, लकड़ी की भीतरी छत और सुन्दर हस्त कला द्वारा बनाए गए दरवाजे वर्णन करने योग्य हैं। महल में मुगल शैली से बने हुए बगीचे, सुन्दर तालाब और बाग हैं। विद्युतीय प्रकाश व फव्वारे महल की सुन्दरता को चार चाँद लगाते हैं।

स्मारक स्थलों का गहराई से चिन्तन करने पर, कोई व्यक्ति स्वतः ही इनके बारे में जानकारी हासिल कर सकता है। ये स्मारक त्रिपुरा के प्राचीन व शाही अतीत के प्रतीक हैं। इस राज्य के पूर्ववर्ती महराजाओं ने भिन्न– भिन्न शहरों में अनोखे अनेकों स्मारकों का निर्माण करवाया जो कि इस राज्य के राजाओं के इतिहास के बारे में सैलानियों को शानदार जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। मुख्य स्मारक स्थल उज्जयन्त महल, मालंचा निवास, नीरमहल और कुंजाबन महल है। ऐतिहासिक स्मारकों के अतिरिक्त भी त्रिपुरा बहुत सारे धार्मिक स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है। जिनमें से सबसे ज्यादा वर्णन करने योग्य पुराने अगरतला में 14 देवताओं का मन्दिर, उदयपुर में माता त्रिपुरेश्वरी का मन्दिर, अगरतला में बेनुबन बिहार, उदयपुर में भुवनेश्वरी मन्दिर और दूसरे भी अन्य कई धार्मिक स्थल हैं।

त्रिपुरा ही एक हिन्दू जन–जातीय वैभवशाली राज्य है जो कि भारत के पूर्वोत्तर में एक कोने पर स्थित है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुन्दरता जिसकी सुबह वेदों के मन्त्रों के उच्चारण के साथ शुरू होती है और अजान की आवाज भी पड़ोसी देश बंगला देश से गुंजायमान होती है जो कि यहां की राजधानी अगरतला से मात्र 5 किलोमीटर दूर है।

मुख्य स्मारक स्थल यहां की राजधानी अगरतला में स्थित हैं। पूर्ववर्ती महाराजाओं व ब्रिटिश शासको की धरोहर स्मारकों को आभूषणों से व अद्भुत भवन निर्माण शैली से सुसज्जित किया गया है। अगरतला शहर के चारों तरफ प्राचीन ईंटों से निर्मित इमारतें, राजाओं के महल, हवेलियां और प्राचीन मन्दिर स्मारक रूप में है जो कि अलग अलग धर्मों से सम्बन्धित है।

शहर के मुख्य ऐतिहासिक स्मारक स्थलों में से मायावी उज्जयन्त महल एक है जो कि 1901 में तत्कालीन राजा द्वारा बनवाया गया था। यह महल कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल की याद को तरोताजा करता है। 19 वीं सदी के चार मंजिले मीनार या शिकारा की भी याद दिलाता है। महल को बाद में राज्य विधान सभा भवन के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। अन्य प्रसिद्ध एतिहासिक स्मारक स्थल महाराजा बीर बिक्रम महाविद्यालय है जो कि महाराज बीर बिक्रम किशोर माणिक्य देबबर्मा द्वारा बनाया गया था। यह स्मारक का दूसरा एक मुख्य उदाहरण है जो त्रिपुरा की प्राचीन भवन निर्माण शैली के लिए प्रसिद्ध है।

तदनुसार संगमरमर पर नक्काशी, सुन्दर दीवारें, झरने, पहाड़ियों के बीच में सूर्य उदय व अस्त होने का दृश्य और स्मारकों की अद्भुत धरोहर त्रिपुरा में पर्यटको को आकर्षित करती है।

स्थान : अगरतला

आवास : राजश्री यात्री निवास, यात्रिका, भगत सिंह युवा छात्रावास और कई अलग अलग निजी होटल हैं।

जगन्नाथ मन्दिर

अगरतला स्थित, मन्दिर श्रद्धालुओं की दृष्टि से ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि यह मन्दिर अपनी निर्माण शैली के लिए भी प्रसिद्ध है जिसका आधार अष्टभुजाकार है और इसके चारों ओर अति सुन्दर प्रदक्षिणा पथ बना हुआ है। इसके स्तम्भों को वर्गाकार व पिरामिड के आकार के कोणों से सुसज्जित किया गया है।

त्रिपुरा सुंदरी मन्दिर (उदयपुर)
पुरातत्व स्थान

एक रमणीक नजारा

त्रिपुरा के आकर्षणों में से एक मुख्य आकर्षण यहां का त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर है, जो कि राज्य की राजधानी अगरतला से 55 किलोमीटर दूर है। हिन्दू श्रद्धालुओं की 51 शक्ति पीठों में से एक पवित्र पीठ है। यहां के स्थानीय निवासी इस पावन मन्दिर को माताबाड़ी के नाम से भी जानते हैं जिसका साहित्यिक अर्थ है देवी का मन्दिर और इस मन्दिर का इतिहास 500 साल पुराना है। यहां पर हिन्दू लोगों के देवी–देवताओं की प्रतिमाएं जैसे देवी लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती आदि की प्रतिमाएं हैं जो कि साधारणतया देश के सभी भागों में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। कुछ की पहचान कुछ विशेष क्षेत्रों से जुड़ी हुई है यद्यपि इन देवियों में आपस में कुछ ही भिन्नताएं व समानताएं देखी गई हैं।

त्रिपुर सुन्दरी एक देवी का नाम है जो कि उपरोक्त पार्वती का प्रतिनिधित्व करती है। दक्षिण भारत के राज्यों में पार्वती, जो कि भगवान शिव की संगिनी है, की महिमा का गुणगान किया जाता है।

पौराणिक कथाएं

यह मन्दिर भारत में 51 पवित्र शक्ति पीठों में से एक है।

धार्मिक मतों के अनुसार, भगवान विष्णु ने सती मां के शरीर को सुदर्शन चक्र से 51 टुकड़ों में विभाजित कर दिया और ये टुकड़े देश के अलग–अलग स्थानों पर गिरे जिनको 51 शक्ति पीठों के नाम से जाना जाता है। यह भी कहा गया है कि मां का दायां पांव माताबाड़ी में गिरा जो कि उदयपुर कस्बे के दक्षिण पश्चिम के बाहरी दायरे में स्थित है और वर्तमान में जिले का मुख्यालय है। यह पीठासन श्रद्धालुओं का केन्द्र है। कुर्म पीठ के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि मन्दिर की परिधि का आकार ''कुर्म'' या कछुए की तरह लगता है मन्दिर में माता काली की

प्रतिमा है, जो कि मन्दिर की देवी का प्रतिनिधित्व करती है, मन्दिर के अति पावन स्थल में लगाई गई है। यह लाल रंग से काले पत्थर पर बनाई गई है, जिसे बंगाली में कश्ती पत्थर के नाम से जाना जाता है। देवी काली की पूजा मन्दिर में कर्मकांडी पुजारियों द्वारा उनके षोडषी अवतार (16 साल की लड़की) के रूप में की जाती है। काली मां की एक छोटे आकार की प्रतिमा लगाई जाती है जिसे छोटी मां कहते हैं जो बड़ी प्रतिमा के साथ ही खड़ी मुद्रा में विराजमान की गई है। इस प्रतिमा को राजा शिकार पर जाते समय अपने साथ ले जाता था और युद्ध के समय भी अपने साथ ले जाते थे व तम्बु के अन्दर देवी की पूजा करते थे। मन्दिर वर्गाकार पवित्र पत्थर से बंगाली भवन निर्माण शैली से शंकु के आकार के गुम्बद की तरह बनाया गया है। मन्दिर का निर्माण 1501 ईस्वी में तत्कालीन महाराजा धन्यमाणिक्य ने करवाया था। मन्दिर के पूर्वी भाग की ओर कल्याण सागर नाम की झील है जिसमें बड़े–बड़े आकार की मछलियां व कछुए हैं, जिन्हें श्रद्धालु मुरी/ मुड़ी/ मुरमुरे, बिस्कुट व उबले हुए चावल खिलाते हैं। झील से मछलियों को पकड़ने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक वर्ष, मन्दिर के नजदीक, दिवाली के पर्व पर मेले का आयोजन होता है जिसमें दो लाख से भी ज्यादा श्रद्धालु अपनी उपस्थिति अंकित करवाते हैं। यह पवित्र स्थान अगरतला से 55 किलोमीटर व उदयपुर से 3 किलोमीटर कर दूरी पर स्थित है।

पौराणिक कथा है कि राजा धन्य माणिक्य जिसने त्रिपुरा में 15वीं सदी के अन्तिम वर्षों तक शासन किया, उन्हें एक दिन रात को सपना दिखा व सपने में आदेश हुआ कि उदयपुर शहर की पहाड की चोटी पर मन्दिर में त्रिपुर सुंदरी की प्रतिमा की स्थापना करो। मन्दिर पहले से ही भगवान विष्णु को समर्पित था और राजा शुरू में दुविधा में था और निर्णय नहीं ले पा रहा था कि उस मन्दिर को, जो पहले से भगवान विष्णु को समर्पित है, कैसे त्रिपुर सुंदरी को समर्पित किया जाय जो कि भगवान शिव की संगिनी है।

यद्यपि अगली रात को फिर चमत्कार हुआ व दोबारा उन्हें सपने की पुनरावृत्ति हुई, उसके बाद शासक ने भगवान के आदेश को स्वीकार करने का निर्णय लिया, बावजूद इसके कि भगवान विष्णु व भगवान शिव की पूजा धार्मिक दृष्टि से अलग–अलग विधि से की जाती है। तब त्रिपुर सुंदरी का मन्दिर वर्ष 1501 में बनाया गया।

यह पौराणिक कथा भगवान विष्णु व भगवान शिव के पारस्परिक सम्बन्धों का एक अच्छा उदाहरण है जो कि मध्यकालीन समय से सबको प्रोत्साहित करता रहा है।

मन्दिर का विस्तृत विवरण

देवी पार्वती को यहां पर त्रिपुर सुंदरी की नाम से पूजा जाता है इनका नाम त्रिपुरेश्वरी व षोडषी भी हैं (स्थानीय नाम) मन्दिर आकार में छोटा, वर्गाकार जिसका नाप ठीक 24 वर्ग फुट(7 वर्ग मीटर) जिसकी ऊंचाई 75 फुट है (लगभग 24 मीटर)। पवित्र स्थल का निर्माण कछुए के आकार को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इसकी छत को कछुए की पीठ का आकार दिया गया है। इस कारण से शक्ति पीठ को कूर्म पीठ के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि ''कूर्म'' का अर्थ कछुआ ही है।

पवित्र धार्मिक स्थल के पूर्व की तरफ एक फर्लांग की दूरी पर पवित्र कल्याण सागर नाम का एक तालाब राजा ने बनवाया।

रीति रिवाज

6.4 एकड़ में फैला हुआ 224 गज की लम्बाई व 160 गज की चौड़ाई के नाप का ये तालाब जिसके ठीक पीछे उठी हुई पहाड़ियां हैं, मन्दिर की सुन्दरता को और अधिक सुन्दर बना देता है। पानी के अन्दर बहुत बड़े–बड़े कछुए व मछलियां हैं जिनको लोग यहां छोटी–छोटी दुकानों से खाद्य सामग्री जैसे बिस्कुट, मूरी (मुरमुरे) व उबले चावल आदि खरीद कर कछुओं व अन्य जल–थल चर जीवों को खिलाते हैं जिसे यहां की पूजा का एक अहम हिस्सा समझा जाता है।

हिन्दू धर्म के दूसरे धार्मिक स्थलों की तरह यहां पर भी सड़क के किनारे कई दुकानें हैं जिनसे श्रद्धालु फूल प्रसाद एवं पूजा की सामग्री खरीदते हैं व अपनी–अपनी श्रद्धा के अनुसार मां त्रिपुर सुंदरी की पूजा अर्चना करके प्रसाद ग्रहण करने के बाद अपने–अपने घरों को लौटते हैं।

यहां पर विशेष प्रकार की मिठाई, जो कि भूरे रंग की होती है, जिसको दूध के मावा से बनाते हैं, श्रद्धालु जन इसे मन्दिर से वापिस जाते समय अपने परिवार, सगे सम्बन्धियों व मित्रों में बांटते हैं। लाल रंग के

फूलों (गुड़हल) को पूजा के बाद यहां के पुजारी श्रद्धालुओं को प्रसाद के तौर पर देते हैं।

पशु बलि

आमतौर पर त्रिपुरा एक आदिवासी जन–जातीय क्षेत्र है और कुछ जन–जातीय समुदायों के विशिष्ट रिति रिवाज मन्दिरों में धार्मिक पूजा के रूप में स्थापित हो गए हैं। ऐसा ही एक रिवाज है जानवरों की बलि देना। (जैसे कि बंगाल और गुवाहाटी के प्रसिद्ध कामाख्या मन्दिर में)। बकरियों को गले में माला पहना कर भेंट स्वरूप मन्दिर में लाया जाता है। भैंसों की बलि की सूची सूचना पट पर लगी रहती है लेकिन आजकल यह बहुत कम देखने में आता है। दुर्गा पूजा एवं इसके अन्य संस्कारों की विधियां पूर्वी क्षेत्र में व बंगाल में इतने प्रसिद्ध हैं जो कि देवी शान्ता स्वरूपिणी की पूजा का एक शानदार प्रदर्शन है। शान्ता स्वरूपिणी मां पार्वती का ही एक रूप है।

मन्दिर की वास्तुकला

त्रिपुरा में शिव पूजा का इतिहास, सहस्त्राब्दी पुराना है। त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर यहां के महत्वपूर्ण वास्तुकला स्मृतियों में से एक है। लेकिन गोमती नदी के किनारे एक भुवनेश्वरी मन्दिर भी है, जिसकी यात्रा के बाद कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसे अपने गीतों में जगह दी ओर इसे "अनश्वर" करार दिया। भुवनेश्वरी मन्दिर भी त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर की तरह ही बना है जिसकी छत वर्गाकार है एवं किनारों पर कछुए का रूप लेती हुई झुकी हुई हैं।

(पुराना त्रिपुरा अब बंगला–देश सीमा के नजदीक) एक और पहाड़ी पर राजा धन्य माणिक्य ने भी कमला सागर मन्दिर का निर्माण करवाया (पुराना कस्बा वर्तमान में बंग्लादेश मे– कस्बा रेलवे स्टेशन मन्दिर के सामने दृष्य है।) यह त्रिपुरा सुन्दरी मन्दिर से ज्यादा दूर नहीं है। मन्दिर के साथ ही एक झील है, यह झील भी पर्वत श्रृंखला के परिदृश्य को बढ़ाती है।

हाल ही में चट्टानों को काटकर बनाए गए शंकर जी के उत्कीर्ण चित्र उत्तरी त्रिपुरा के उनकोटि नामक स्थान पर पाए गए हैं, जो कि राज्य

की शिल्प कला (परम्परा) को दर्शाती है। इन चट्टानों पर की गई नक्काशी 9वीं शताब्दी के आस–पास की बताई जाती है।

बेशक भारत को भाषाओं एवं भौगोलिक आधार विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों में बांट दिया गया है लेकिन त्रिपुरा के त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर जैसी धरोहरों के अवयव, उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक हमारी पौराणिक धरोहरों एवं संस्कृति के भेदभावों को मिटा देते हैं।

यात्रा समय

यद्यपि धार्मिक स्थल में सभी जाति, सम्प्रदाय के श्रद्धालुओं का पूरे साल के दौरान तांता लगा रहता है लेकिन श्रद्धालुओं की भीड़ दीपावली के पर्व के समय, जब यहां पर एक मेले का आयोजन किया जाता है, अत्यधिक हो जाती है। विदेशी पर्यटक भी यहां पर इस राज्य के व साथ में लगने वाले अन्य राज्यों के जन–जाति के लोगों की सांस्कृतिक धरोहर को देखने के लिए आते हैं।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – अगरतला से 55 किलोमीटर व उदयपुर से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जिसे माता बाड़ी के नाम से भी जाना जाता है।

आकर्षण केन्द्रः– दीपावली मेला।

महत्वः– भारत की 51 शक्ति पीठों में से एक।

आवासः– ठहरने के लिए गुनवती टूरिस्ट लॉज और गोमती यात्री निवास

कैसे पहुंचेः– अगरतला से उदयपुर जाने के लिए सड़क मार्ग द्वारा बस में या टैक्सी में जाया जा सकता है।

रूद्रसागर झील

रूद्रसागर झील अगरतला से लगभग 55 किलोमीटर दूर मेलाघर के नजदीक 5.3 वर्ग किलोमीटर में बनी हुई है। इसका, पानी से भरपूर एक लम्बा क्षेत्र, पर्यटकों के मन मोहने के लिए दूसरा बड़ा आकर्षण का केन्द्र है। झील के मध्य में त्रिपुरा का प्रसिद्ध महल है जिसे नीरमहल के नाम से जाना जाता है नीरमहल का शाब्दिक अर्थ पानी के अन्दर महल।

महल, अपनी विलक्षणता व शाही हवेली की हकीकत जानने के लिए जाना जाता है जो कि रूद्रसागर झील के बीच में अगरतला से दक्षिण में अगरतला से 53 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य ने 1930 में इस भवन का निर्माण करवाया था। महाराजा गर्मियों में यहीं पर निवास करते थे, इस भवन के निर्माण के लिए मुगल भवन निर्माण शैली से प्रेरणा मिली।

झील में प्रतिवर्ष बहुत सारे प्रवासी पक्षी सर्दियों में यहां आकर आराम करते हैं। जुलाई – अगस्त के माह में प्रति वर्ष यहां पर एक किश्तियों की दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – अगरतला से 53 किलोमीटर, उदयपुर से 20 किलोमीटर और मेलाघर से 2 किलोमीटर।

आवासः– सागर महल टूरिस्ट लॉज, मेलाघर।

त्रिपुरा राजकीय सग्रहालय, अगरतला

त्रिपुरा राज्य का राजकीय सग्रहालय 1970 में स्थापित किया गया जो कि अगरतला शहर के मध्य भाग में स्थित है, और अपनी वास्तविकता को संभाले हुए है। ये अपने प्रतिबिम्ब को शिलालेख सम्बन्धी, मुद्रा निर्माण सम्बन्धी साक्ष्य को अपने आप में सुरक्षित रखे हुए है जो कि त्रिपुरा के सुन्दर अतीत और उसके साथ–साथ जुड़े हुए राज्यों की संस्कृति पर प्रकाश डालता है।

यह संग्रहालय– सैलानियों, विद्यार्थियों, आम आदमियों और अनुसन्धानकर्त्ताओं के लिए– यहां के भूतपूर्व व वर्तमान लोगों के इतिहास व संस्कृति के बारे में जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करता है। अभी तक जितने

भी चित्रकार हुए, अधिकांश उदयपुर, पीलाक, जोलाईबाड़ी और त्रिपुरा के दूसरे भागों के थे। उनमें से पीलाक के चित्रकारों ने हिन्दू एवं बौद्ध सम्प्रदायों की संयुक्त संस्कृति की चित्रकारी का सुन्दर संग्रहण व चित्रण किया। वे अपने आप में शैली और विचारों की स्वतंत्रता के लिए प्रसिद्ध है।

मूर्तिकार लगभग 9वीं से 13वीं शताब्दी के थे। अधिकतर मूर्तिकारों ने रेतीले पत्थरों पर नक्काशी करके मूर्तियों को रूप दिया। अगरतला के समीप राधानगर से 18वीं सदी में 10 अवतारों की मूर्तियां का संग्रह हुआ जिससे यहां के स्थानीय लोगों के मूर्ति पूजा के बारे सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

जगह का नामः— अगरतला

सुकान्त एकेडमी

यह एक वैज्ञानिक संग्रहालय है जो अगरतला शहर के मध्य भाग में स्थित है। यहां पर एक कृत्रिम छोटा तारामण्डल बनाया गया है जो कि विद्यार्थियों, अनुसंधानकर्त्ताओं और वैज्ञानिकों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करता है। विज्ञान, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए त्रिपुरा सरकार ने अगरतला में एक केन्द्र का निर्माण किया जिसे सुकान्त एकेडमी के नाम से जाना जाता है जो कि चिल्ड्रन पार्क के अन्दर एक भव्य इमारत के रूप में तैयार किया गया है जो कि बच्चों को विज्ञान, कला एवं संस्कृति से सक्रिय रूप से जोड़ता है।

इस एकेडमी की अधारशिला तत्कालीन मुख्यमन्त्री त्रिपुरा सरकार श्री नृपेन चक्रवर्ती ने वर्ष 1986 में रखी गई।

जगहः— अगरतला नजदीक चिल्ड्रन पार्क।

पुर्वासा

दस्तकारी

बांस, बेंत, ताड़ के पत्ते और साधारण सूत आदि से दस्तकारी द्वारा भिन्न–भिन्न प्रकार की चीजें तैयार करना, यहां के दस्तकारों का मुख्य पेशा है। हथकरघा द्वारा जटिल रूप से सूती और रेशमी कपड़ा बनाना, बेंत व बांस द्वारा नई–नई वस्तुएं बनाना, यहां के दस्तकारी उद्योग का मुख्य भाग है। फर्नीचर, खिलौने, दैनिक प्रयोग की वस्तुएं जैसे कि लैम्पशेड, टोकरियां, कलैंडर, हाथी दांत की बनी हुई चीजें और त्रिपुरा के जन–जातियों के लोगों के गहने यहां पर खरीदकारी करने की प्रमुख चीजें हैं।

त्रिपुरा को बांस, बेंत व लकड़ी की आकर्षक दस्तकारी एवं सूती, रेशमी व पोलियस्टर के कपड़ों के लिए भी जाना जाता है। आगन्तुक यहां के लोगों को दस्तकारी का काम करते हुए पुर्वासा के किसी भी हथकरघा, इम्पोरियम व अगरतला सहित किसी भी पर्यटन केन्द्र में प्रायः देख सकते हैं।

जगह :– अगरतला नजदीक जेल।

नेहरू पार्क

अगरतला शहर के उत्तर में गोरखा बस्ती के क्षेत्र में सरकारी जमीन की खाली जगह पर लाल रंग की मिट्टी, जो कि विषैलेपन के लिए जानी जाती है, को देखा जा सकता है। लाल रंग की मिट्टी, कुछ साल पहले तक आंखों में चुभन पैदा करती थी।

राज्य सरकार ने अपने प्रशासन के एक भाग को शहर के मध्य भाग से बाहर ले जाने के बारे में सोचा, कुदरती तौर पर गोरखा बस्ती में बेकार पड़ी हुई सरकारी जमीन पर नजर पड़ी। जंगलात विभाग को इस जमीन पर एक पार्क बनाने का विचार आया, परिणामस्वरूप इस जमीन पर नेहरू पार्क का निर्माण किया गया जो कि ''अरण्य भवन'' (जंगलात विभाग के मुख्यालय) के सामने है। इस जमीन पर पेड़ पौधे उगाने के लिए बहुत सारी मेहनत व खर्च किया गया। इस पार्क का उद्घाटन वर्ष 2003 में

किया गया। ये पार्क अब थके हुए लोगों को खुशियां एवं सांत्वना देने का केन्द्र बिन्दु बन गया है।

शुल्कः देय

स्थानः अगरतला

रविन्द्र कानन

राजभवन के ठीक दक्षिण में बसा हुआ रविन्द्र कानन एक हरे–भरे पार्क का रूप है जिसमें भिन–भिन्न प्रकार के फूल, जो कि नवयुवकों व बच्चों के आकर्षण का केन्द्र है और शान्ति से एक–दूसरे के दिल को समझने या बातें करने की जगह है।

रंग–बिरंगे फूलों के अलावा, इसमें एक कठपुतली घर भी है, जिसका नाटक देखकर बच्चे भाव–विभोर हो जाते हैं। पार्क में सैलानियों के लिए आसाम रायफल की तरफ से स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था होती है।

स्थानः– अगरतला

अगरतला राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय

अगरतला राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, गोविन्द बल्लभ पन्त अस्पताल के साथ ही नई बनी हुई इमारत में स्थित है। इस में आधुनिक प्रयोगशालाएं, सूक्ष्म परीक्षण केन्द्र, सभागार, केन्द्रीय पुस्तकालय, आम व खास कमरे, स्वल्पाहार दुकान आदि सुविधाएं हैं। इस चिकित्सा महाविद्यालय की इमारत का निर्माण 2007 में हुआ था।

स्थानः– अगरतला

महाराजा बीर बिक्रम महाविद्यालय

महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य बहादुर जो कि त्रिपुरा के अन्तिम प्रतापी राजा थे। त्रिपुरा राज्य में उच्च शिक्षा देने के लिए इस मार्गदर्शक शिक्षा संस्थान के जनक के नाम से जाने जाते है। उन्होंने इस

संस्थान की स्थापना 1947 में की। यह महाविद्यालय कलकत्ता विश्वविद्यालय से जुड़ा हुआ था। यह संस्थान अभी तक कलकत्ता विश्वविद्याालय परिवार के उच्च कोटि के शिक्षा संस्थानों में से एक है। महाविद्यालय जो कि कभी राज्य में मुख्य शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य भमिका अदा करता था, अभी यह स्नातकोत्तर विद्यालय की तरह काम करता है जो कि अब त्रिपुरा विश्वविद्यालय के साथ जुड़ा है।

महाविद्यालय 234 एकड़ भूभाग पर बना हुआ है। चारों ओर हरे भरे घास के मैदान है जिनके किनारों पर आकर्षक भिन्न – भिन्न प्रकार के सुन्दर पेड़ और सर्दियो में प्रवासी पक्षियों के भ्रमण के लिए बनाई गई कृ त्रिम झीलें भी हैं। कुदरत की उदारता के बीच, मुख्य महाविद्यालय की इमारत विराजमान है, जो कि मुगल भवन निर्माण शैली का एक नमूना है, जिसे स्वयं महाराजा ने मूर्त रूप दिया है। पूर्ण रूप से महाविद्यालय परिसर पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केन्द्र है। बहुत सारी सुविधाओं के साथ समर्पित कर्मचारी वर्ग और विद्यार्थी वर्ग उच्च श्रेणी का पुस्तकालय, पुस्तकों व सम्पादनों का बहुत बड़ा संग्रह, उच्च श्रेणी के उपस्करों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं, सामुदायिक केन्द्र व अन्य कई प्रकार की सुविधाओं के साथ इस महाविद्यालय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में बहुत बड़ा नाम कमाया है। इस महाविद्यालय का जो लक्ष्य है उसे उपनिषद के खजानों से लिया गया है। जिसे संस्कृत में ''विद्यामृतानास्नुते'' अर्थात् ''ज्ञान ही अमृत की चाबी है''। यह उच्च श्रेणी का संस्थान अपने इस लक्ष्य को मूर्त रूप देने के लिए नवयुवकों को अच्छी शिक्षा व संस्कार देते हुए प्रग्रतिपथ पर उत्तरोतर अग्रसर हो रहा है।

जगह का नामः– अगरतला

बेनुबन बिहार

बेनुबन बिहार अगरतला में स्थित है यहां पर बुद्ध धर्म का सबसे आकर्षक मन्दिर है जो कि कुंजाबन क्षेत्र में अगरतला कस्बे के उत्तरी भाग में स्थित है।

बौद्धों का धार्मिक स्थल, जिसका नाम बेनुबन बिहार है, यद्यपि आकार में छोटा है फिर भी यहां पर भगवान बुद्ध की धातु से निर्मित सुन्दर प्रतिमाएं सुरक्षित रखी हुई हैं। बुद्धजयन्ती, भगवान बुद्ध के अवतार का दिन,

बुद्ध पूर्णिमा के दिन बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस धार्मिक स्थल का दौरा करने पर आत्मिक शान्ति का अहसास किया जा सकता है।

बेनुबन बिहार वास्तव में दूरवर्ती त्रिपुरा के लोगों द्वारा यहां के अतीत की मेहमानवाजी व धार्मिक आश्रय और पड़ोसियों की संस्कृति सुन्दर झलक को दर्शाता है। मठों में भिक्षु लोग परम शान्ति व सद्भाव का पालन करने की शिक्षा पर्यटकों व आगन्तुकों को देते हैं।

स्थानः— कुंजावन, अगरतला।

नजरूल कलाक्षेत्र

नजरूल कलाक्षेत्र, शहर का सांस्कृतिक परिसर, आधुनिक सभागार से शोभायमान — जेल व पुर्वासा रोड़ के निकट, चौमुहानी मठ में स्थित है। इसमें एक फिल्म बनाने की प्रयोगशाला, जांच करने का एक बड़ा कमरा व एक पुस्तकालय है।

स्थानः— अगरतला।

लक्ष्मी नारायण मन्दिर (अगरतला)

45 वर्षों से भी पहले कृष्णानन्दा लक्ष्मी नारायण मन्दिर के सेवायत ने भगवान श्री कृष्ण की प्रतिमा को यहां स्थापित किया। मन्दिर को भारत के पुरातत्व विभाग के अधिनियम द्वारा स्मारक की तरह पंजीकृत किया है। मुख्य मन्दिर के लिए शाही परिवार से भी सहायता प्राप्त हुई थी। भागवत की पौराणिक कथाओं के अनुसार तमल के वृक्ष का भगवान कृष्ण के जीवन से नजदीकी सम्बन्ध रहा है शायद इसी को मद्देनजर रखते हुए सेवायत ने यहां पर लगभग 35 वर्ष पहले तमल के पौधे का रोपण किया।

स्थानः— अगरतला।

जगन्नाथ मन्दिर

पृष्ठ 77 देखे

चतुर्दश देवता मन्दिर

यह अगरतला से 6 किलोमीटर दूर पुराने अगरतला में स्थित है। अवैध रूप से राज करने वाले शमशेर गाजी (1748–1760) के 12 साल के शासन काल के अन्त में उस समय के राजा कृष्ण माणिक्य ने उदयपुर में लूटपाट करने वाले डाकुओं की उपस्थिति को महसूस किया जो कि पूर्वीबंगाल के मैदानी इलाकों से आते थे और उन्होने अपनी राजधानी को ''पुराना हवेली'' या पुराने अगरतला में वर्ष 1760 ईस्वी में स्थानान्तरित कर दिया।

राजधानी का कामकाज सुचारू रूप से लगातार यहीं पर चलता रहा। 1838 ईस्वी में राजधानी को वर्तमान स्थान पर स्थापित कर दिया गया। 14 देव देवियों के मन्दिर के नजदीक प्रत्येक वर्ष के जुलाई माह में खारची पर्व का आयोजन किया जाता है और हजारों की संख्या में श्रद्धालु और अनुयायी इस पर्व पर यहां अपनी उपस्थिति अंकित करते हैं और मेले की शोभा बढ़ाते हैं।

स्थानः– अगरतला से 6 किलोमीटर।

आवासः हवेली यात्रिका, खैरपुर और अगरतला में अन्य होटल।

चन्द्रपुर मस्जिद बेलोनिया

वर्ष 1992 ईस्वी में संयोग से, राजनगर के इलाके में, यहां के भोले–भाले लोगों ने बेलोनिया उपमंडल में, मध्यकालीन समय की एक मस्जिद जो कि पेड़, पौधों व झाड़ियों के बीच में थी, खोज निकाला। यह मस्जिद बंगला देश के मैदानी व त्रिपुरा के पहाड़ियों के बीच में स्थापित थी व 1992 ईस्वी वर्ष में ही इस मस्जिद का पुनरूत्थान किया गया जिसमें स्थानीय लोगों व त्रिपुरा की सरकार ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। बाद में यहां पर सौहार्दपूर्ण मेले का आयोजन किया गया।

तब से लेकर अब तक 6 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष, पर्व के नाम से मनाया जाता है। विशेषज्ञों की राय है ''राजनगर मस्जिद'' का निर्माण वर्ष 1618 में मुगल सेना के कमांडरों द्वारा करवाया गया था, जिन्होने त्रिपुरा

पर आक्रमण किया। उस समय यहां पर यशोधर माणिक्य नाम के राजा शासन करते थे। निर्जन वन की पहाड़ियों के ऊपर ऊंची मीनारों वाली ये मस्जिद पर्यटकों को अपनी सुंदर वास्तुकला का आनन्द देने के लिए अपनी पास आने को विवश करती है।

स्थानः– अगरतला से 135 किलोमीटर व बेलोनिया से 30 किलोमीटर दूरी पर है।

ठहरने के लिएः– काटेज (जोयचन्दपुर) वन विभाग व राजस्व विभाग के गेस्ट हाउस।

गेडु मियां की मस्जिद (अगरतला)

ये मस्जिद त्रिपुरा के अल्पसंख्यक समुदाय के मुसलमानों के लिए स्थान है। मस्जिद अगरतला में शिवनगर क्षेत्र में स्थित है और किसी व्यक्ति विशेष के समर्पण व श्रद्धा का प्रतीक है।

गेडु मियां जो कि इस मस्जिद के निर्माता थे, उन्होनें अपने जीवन की शुरूआत हाथी के महावत के तौर पर की। उसके बाद एक मोटर गैरेज में वर्कर की व ड्राइवर की हैसियत से काम करने लगे। लेकिन गेडु मियां के किस्मत के सितारे उस समय चमके जब अन्तिम शासक बीर बिक्रम किशोर माणिक्य (1923–1947 ईस्वी) ने नरसिंहगढ़ में एक हवाई अड्डे के निर्माण के लिए 1942 ईस्वी में गेडु मियां को 7 लाख का ठेका दिया जो कि अगरतला कस्बे के पूर्वोत्तर में है।

गेडु मियां ने अपना काम पूरा किया, जिसमें उसे काफी मुनाफा हासिल हुआ, जिसका एक हिस्सा उसने शिवनगर में मस्जिद बनवाने के लिए लगा दिया। इसे बनाने के लिए संगमरमर विदेशों से मंगवाया गया, इस सुन्दर मस्जिद में बहुत सी बुर्जियां व मीनारें हैं, दरवाजों पर हस्तकलाओं के सुन्दर नमूने व सामने हरी–भरी घास के के मैदान है, जहां पर सप्ताह में एक बार शुक्रवार की नमाज अदा की जाती है।

स्थानः– अगरतला

कहां ठहरेंः– अगरतला में भिन्न भिन्न निजी होटलो में।

मरियम नगर चर्च (अगरतला)

प्रकृति की हरे भरे आंचल में, अगरतला के पूर्व में 7 किलोमीटर दूर, मरियम नगर एक ऐतिहासिक जगह है। चर्च, पुर्तगाल से यहां आए हुए इक्का दुक्का कैथोलिक जाति के लोगों के द्वारा बनाया हुआ है। त्रिपुरा के पुर्तगाली लोगों के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं जो कि वर्तमान बंगला देश के चटगांव के आवासी थे। वर्ष 1577 ई में राजा अमर माणिक्य ने इनसे मोग जन–जाति की सेना के विरूद्ध लड़ाई में सहायता की विनती की व दोस्ती की शुरूआत की थी। पुर्तगाल के लोगों ने, विदेशी आक्रमणकारियों को, जो यहां आकर बस गये थे, उन को खदेड़ने के लिए राजा की सहायता की और लड़ाई की समाप्ति पर ये लोग 1585 ई में यहां आकर बस गए। जब राजा कृष्ण माणिक्य ने 1760 ई में अपनी राजधानी को उदयपुर से पुरानी हवेली में स्थापित किया, उस समय यहां पर बसे हुए पुर्तगालियों की संख्या घट गई थी लेकिन वे मरियम नगर में बस गए। राजा कृष्ण किशोर माणिक्य(1830–1849 ईस्वी) ने राजधानी को पुरानी हवेली से अगरतला में वर्ष 1838 ई में स्थानान्तरित किया।

पुर्तगाल देश के मूल निवासी जाति व संस्कृति की दृष्टि से यहां के स्थानीय लोगों के साथ घुल–मिल गए थे, लेकिन 169 वर्ष पुराना चर्च अभी तक इन की प्रार्थना का एक आकर्षक स्थल बना हुआ है।

स्थानः– मरियम नगर अगरतला।

कस्बा काली मन्दिर (विशालगढ़)

बंगलादेश सीमा के नजदीक एक और पहाड़ी पर राजा धन्य माणिक्य ने 1500 शताब्दी के अन्त में कमला सागर काली मन्दिर का निर्माण करवाया। मन्दिर के साथ ही एक झील है, जो कि मन्दिर की सुन्दरता को बढ़ाती है। सीमा की बाड़ के साथ घूमते हुए बंग्लादेश के ''कस्बा'' रेलवे स्टेशन को निहार सकते है।

विशाल कमला सागर झील का निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य की पत्नी कमला ने (1490–1520ईस्वी) में करवाया। दो नीले रंग के लहरिया पानी की झीलें तत्कालीन राजाओं के आदेश का पालन करते हुए

अगरतला, जो कि त्रिपुरा की राजधानी है, में बनाई गई जो कि सैलानियों के लिए नौकायन करने का बहुत अद्‌भुत स्थान है।

तत्कालीन त्रिपुरा की राजधानी व वर्तमान में गोमती जिले का मुख्यालय उदयपुर, झीलों के शहर के नाम से जाना जाता है क्योकि भिन्न–भिन्न राजाओं ने यहां कई विशाल व आधुनिक झीलों का निर्माण करवाया जो कि शहर के इर्द–गिर्द हैं। ये झीलें गोमती नदी के जल प्रवाह से जुड़ी हुई हैं जो कि पर्यटकों को नौकायान करने के लिए अपने यहां न्यौता देती रहती हैं।

कमला सागर मन्दिर मां काली को समर्पित है। यह बंगला देश की सीमा पर स्थित है और सीमा को देखने का अवसर प्रदान करता है।

एक इको पार्क भी सड़क पार करके बनाया गया है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – अगरतला से 28 किलोमीटर व उदयपुर से 50 किलोमीटर।

आवासः– कोमिला व्यू टूरिस्ट लाज, कमलासागर।

महामुनि पगोड़ा (सबरूम)

महामुनि पगोड़ा मनुवांकुल गांव में सबरूम उपमंडल के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। यह बौद्ध धर्म के प्राचीन मन्दिरों में से एक है व प्राचीन मठ बौद्ध धर्म के विचारों व वास्तुकला का एक प्रतीक है व इसे मठु, मोग व अन्य लोगों के नेतृत्व में एक लम्बे समय पहले महामुनि ने एक सुन्दर पगोड़े का भी निर्माण किया गया था। प्रत्येक वर्ष मार्च अप्रैल के महीने में एक सप्ताह तक चलने वाले मेले का आयोजन किया जाता है। यह मन्दिर हजारों बौद्ध धर्म के अनुयायिओ, श्रद्धालुओं व अन्य धर्म के लोगों को देश के प्रत्येक कोने से व पड़ोसी देशों से भी जैसे म्यांमार (पूर्व काल में बर्मा), थाईलैंड, श्रीलंका और बंगला देश से भी आकर्षित करता है। महामुनि पर्व व ओवहा मूलरूप से बौद्ध धर्म के पर्व हैं। लेकिन आजकल ये पर्व राज्य में अपनी सर्वाधिक खुशी से मनाये जाने वाले त्योहारों में से एक हैं। भगवान बुद्ध की पूजा हिन्दू व बौद्ध दोनों धर्मो द्वारा मठों में की जाती है। महामुनि पर्व मोग जन–जाति सम्प्रदाय के लोगो द्वारा मनाया जाता है। वास्तव में त्रिपुरा में चकमा, मोग व बरूआ जन–जाति के समुदाय के लोग भी बौद्ध

धर्म के अनुयायी हैं। यह जगह नजदीकी रेल स्टेशन अगरतला व हवाई अड्डे अगरतला से 155 किलोमीटर दूर सबरूम उपमंडल में स्थित है। महामुनि पगोड़ा अपने आप में सब सुविधाओं से परिपूर्ण धार्मिक स्थल है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – अगरतला से 155 किलोमीटर, उदयपुर से 82 किलोमीटर, सबरुम से 25 किलोमीटर जोलाईबाड़ी से 23 किलोमीटर व मनु से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

आवासः– पीलाक टूरिस्ट लॉज जोलाईबाड़ी, महामुनि टूरिस्ट लॉज, मनु यात्री निवास व दक्षिणायक टूरिस्ट लॉज आदि हैं।

उनकोटि

त्रिपुरा में चट्टानों को काटकर और पत्थरों पर चित्रकारी के नमूनों का एक सुन्दर नजारा उनकोटि, देवतामुरा और पीलाक में देखने को मिलता है। इनमें से अधिकतर आकार में बहुत बड़ी और दीवारों पर खड़े रूप में स्पष्ट रूप से खुले वातावरण में प्रदर्शित की गई हैं। यहां कलाकृतियां सायवितीस श्रद्धालुओ द्वारा 7वीं से 9वीं ई सदी में या इससे पहले बनाई गई हैं। आश्चर्यचकित करने वाले रूप से चट्टानों के ऊपर अद्भुत नक्काशी करके दीवारों पर सुन्दर चित्रण करते हुए, झरनों आदि को कोई नुकसान न पहुंचाते हुए ये चित्रकारियां की गयी हैं। उनकोटि का अर्थ है 1 करोड़ से एक कम और कहा गया है कि बहुत सारी चट्टानों को काटकर बनाई गई चित्रकलाएं यहां के पत्थरों पर विद्यमान हैं। हिन्दू धर्म के मतानुसार जब भगवान शिव 1 करोड़ देवी व देवताओं के साथ काशी को जा रहे थे तो उन्होंने एक रात यहां पर विश्राम किया। उन्होंने सभी देवी देवताओं को सूर्य उदय होने से पहले जागने और काशी चलने को कहा।

ऐसी किम्–वदन्ती / कथा है कि सुबह भगवान शिव के अतिरिक्त कोई भी सूर्य उदय के पहले नहीं उठा और भगवान शिव अकेले ही काशी के लिए चले गए, सभी देवी व देवों को यह श्राप दिया कि ये सभी पत्थर की मूर्ति का रूप बन जाएं। परिणाम स्वरूप यहां पर उन देवी व देवों के एक करोड़ से 1 कम आकृतियां, पत्थरो पर बनी हुई हैं जिन्हे उनकोटि के नाम से जाना जाता है। यह जगह जंगली क्षेत्र के बीच में बहुत सुन्दर जमीन के हिस्से पर है, जिसके चारों तरफ हरे भरे घास के

मैदान है, हरे भरे घास के मैदान, उस की सुन्दरता को और भी अधिक बढ़ा देते हैं। उनकोटि में दो तरह की आकृतियां हैं :–

एक चट्टानों पर

दो पत्थरों पर

बनाई गई हैं।

चट्टानों पर बनाई गई आकृतियों का केन्द्र बिन्दु शिव भगवान व विशालकाय गणेश भगवान की कलाकृतियां हैं जिनका विशेष रूप से चित्रण किया गया है। शिव भगवान की बड़ी मूर्ति को उनकोटिश्वर काल भैरव के नाम से भी जाना जाता है जिसकी ऊंचाई अलंकृत किये गये सिर के मुकुट के साथ 30 फुट है, जिसमें केवल अलकृंत सिर की ऊंचाई 10 फुट है, शिव भगवान के दोनों तरफ दो पूर्ण रूपेण नारी की मूर्ति हैं जिसमें एक तरफ देवी दुर्गा सिंह पर विराजमान है व दूसरी तरफ अन्य देवी की है। इन त्रिमूर्तियों के अलावा नन्दी सांड भी है जो आधा जमीन के नीचे में है। इनके अतिरिक्त भी अन्य कई प्रकार के पत्थर व चट्टानें हैं जिन पर चित्रण किया गया है। प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह में अशोक अष्टमी पर एक भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु पदार्पण करते हैं।

जगहः– अगरतला से 178 किलोमीटर शिलंग की तरफ, कैलाशहर से 8 किलोमीटर

आवासः– उनकोटि टूरिस्ट लॉज (कैलाशहर) जूरी टूरिस्ट लॉज और उत्तर मेघ टूरिस्ट लॉज (धर्मानगर)

उनकोटि को कैसे जाएंः– अगरतला से कुमारघाट तक बस या रेलगाड़ी में और उसके बाद कैलाशहर तक आधे घन्टे की यात्रा किसी अन्य साधन द्वारा।

पीलाक

8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच की सभ्यता, यहां के हिन्दू धर्म के नास्तिक व आस्तिक समुदाय के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे कि शैव, सूर्य, वैष्णव व बौद्ध धर्म (जैसे कि हीनयान, महायान, वज्रयान, स्थविरवाद) दोनों संस्कृतियों के लोगों को आपस में एक–दूसरे को शान्तिपूर्ण तरीके से जोड़ कर रखते हैं। यहां के महत्वपूर्ण स्थान श्याम सुन्दर टिला, देब बाड़ी, ठाकुरानी किला, बालिर पत्थर, वासुदेव बाड़ी और सागर देवा हैं।

कला के प्रकार व शैली

आकृतियों के बनाने में और चित्रकारी करने में, दूरगामी क्षेत्र में रहने वाले चित्रकारों के समरूप एवं पालस व बंगाल के गुप्ता लोगों की वास्तुकला की शैली का अनुसरण किया गया है। अराकान, म्यांमार (पूर्व काल में बर्मा) और स्थानीय शैली का प्रत्यक्ष प्रभाव पीलाक की आकृतियों और चित्रकारिता की किस्मों व शैलियों में अनुभव होता है। बहुत सारी चट्टानों को काटकर आकृतियां, पक्की मिट्टी को काटकर, धातु आदि से बनाई गई मूर्तियां इस क्षेत्र में चारों तरफ विद्यमान हैं।

ये स्थान भारतीय पुरातत्व विभाग के अधिकार क्षेत्र में है। पक्की मिट्टी को काटकर, धातु से निर्मित मूर्तियां कुछ समानताओं के साथ पहाड़पुर और मयनामति आदि कई स्थानों से मिली हैं। बौद्ध धर्म का परिसर यहां पर 9वीं व 10वीं सदी के बीच का बना हुआ है। 1969 ई के दशक के अन्तिम वर्षों में खुदाई करने पर भारतीय पुरातत्व विभाग को यहां से ईन्टे मिली जिन पर "स्तूपों" के निशान बने हुए थे। इस विभाग ने और भी खुदाई करने की योजना बनाई है ताकि इस क्षेत्र की छुपी हुई सांस्कृतिक धरोहर को ढूंढा जाए। त्रिपुरा के ये मैदानी भाग प्राचीन समय में पूर्वी बंगाल और समाताता के शासकों के वंशजों के नियन्त्रण में थे। उनमें से कुछ बौद्ध व कुछ हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। इन शासकों में से अधिकतर ने अपनी राजधानी को इस क्षेत्र के नजदीक बनाया। पाटिकेरा की प्राचीन राजधानी कोमिला क्षेत्र में थी और पीलाक कोमिला से ज्यादा दूर नहीं है।

स्थानः— अगरतला से उदयपुर की तरफ 100 किलोमीटर, उदयपुर से 61 किलोमीटर और जोलाईबाड़ी से 2 किलोमीटर।

नजदीकी शहरः— शान्तिर बाजार 19 किलोमीटर, जोलाईबाड़ी 2 किलोमीटर।

आवासः— पीलाक टूरिस्ट लॉज (जोलाईबाड़ी), पीलाक पन्या निवास (बागफा) और मनु यात्री निवास (मनु बाजार)।

देबतामुरा (चाबीमुरा)

देवतामुरा, गोमती नदी के किनारे सीधी खड़ी चट्टानों पर नक्काशी की गई चित्रकारियों के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर भगवान शिव, विष्णु, कार्तिक, महिषासुर मर्दिनी दुर्गा और अन्य देवी देवताओं की आकृ तियां व असंख्य चित्र हैं। लेकिन मुख्य खुदी मूर्ति देवी दुर्गा की है जो महिषासुर मर्दिनी के नाम से जानी जाती है। स्थानीय लोग इनको चकरक – मां के नाम से जानते हैं। यह मूर्ति 11 मीटर ऊंची और 8 मीटर चौड़ी है डम्बुर झील के आसपास, 14 जनवरी को हर साल पौष सन्क्रान्ति मेला लगता है। यह झील राइमा और सरमा नदियों के मिलन स्थल पर बना हुई है। ये चाबीमुरा के नाम से भी जाना जाता है। ये आकृतियां 15वीं व 16 वीं सदी में बनायी हुई हैं।

स्थानः— अगरतला से 75 किलोमीटर व अमरपुर 5 किलोमीटर।

आवासः— राइमा टूरिस्ट लॉज जतनबाड़ी, अमरपुर टूरिस्ट लॉज।

बाक्सनगर

पश्चिमी त्रिपुरा में सोनामुराः— आधुनिक समय में प्राकृतिक जंगली क्षेत्र के सफाई करने के बाद पश्चिमोत्तर भाग के एक किनारे पर बंगला देश की सीमा के पास, सोनामुरा उपमंडल में ईन्टो से बनी हुई इमारतें, जो कि बर्बाद हो गई हैं, के साक्ष्य मिले हैं।

यह बाक्सनगर बाजार के नजदीक है। स्थानीय लोग आरम्भ से ही सांपों की देवी मां मनसा के मन्दिर के अवशेषों का वर्णन करते हैं, यह अब जर्जर हालत में है। जब भारतीय पुरातत्व विभाग का ध्यान इस की

तरफ आकर्षित किया गया तो उन्होने इसे अपने कब्जे में ले लिया लेकिन वास्तव में इसके रख रखाव व सुरक्षा में कोई विशेष कदम नहीं उठाया। जुलाई 1997 में डा• जितेन्द्र दास जो कि भारतीय पुरातत्व विभाग के आयुक्त के पद पर आरूढ़ थे, इस क्षेत्र के दौरे पर आए। उन्हें यहां पर भगवान बुद्ध की प्रतिमा मिली और इसकी पुष्टि की गई कि यहां पर भगवान बुद्ध का मन्दिर था। उन्होंने इस की खुदाई का आश्वासन दिया ताकि इसके नीचे छुपी कहानी को उजागर किया जा सके। वर्तमान में यह जगह बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित है और इसके चारों ओर कंटीली तार से तारबंदी कर दी गई है और इसके सुरक्षा का कार्य प्रगति पर है।

स्थानः– अगरतला से 32 किलोमीटर और सोनामुरा से 8 किलोमीटर।
आवासः– सागर महल टूरिस्ट लॉज, मेलाघर।

गुनावती मन्दिरों का समूह उदयपुर

महादेब बाड़ी से बादरा मोकाम के रास्ते में सड़क के बाईं तरफ कोई भी आसानी से तीन मन्दिरों को देख सकता है जो कि गुनावती के नाम से जाने जाते हैं। इन मन्दिरों की उत्पत्ति उनके संस्थापकों का अभी तक ज्ञान हासिल नहीं हुआ है। एक मन्दिर में मिले एक शिला लेख से इन के इतिहास पर कुछ जानकारी प्राप्त व प्रकाशित होती है।

ये मन्दिर वर्ष 1668 ई में महामहिम महारानी गुनावती जो कि महाराजा गोविन्द माणिक्य की पत्नी थी, के नाम से बनाए गए थे। दो अन्य मन्दिर भी उसी समय के बने हुए लगते हैं लेकिन उन के रहस्य से पर्दा अभी तक नहीं हटा है। इन मन्दिरों के निर्माताओं ने इन मन्दिरों के समरूप ही त्रिपुरा में अन्य मन्दिरों का निर्माण करवाया जो कि राज्य के एक बहुत बड़े हिस्से में बिना स्तूपों के बने हुए हैं। इन मन्दिरों के भीतर वाले कमरे को दर्शाने के लिए एक आकृति लगाई गई है, जिसमें नारी सिर पर मिट्टी का घड़ा लिए हुए खड़ी हैं। मन्दिर के मध्य में एक अर्द्धवृताकार गुप्त कमरा है जिसकी दहलीज जो कि स्तूपों के जितनी लम्बी थी जो कि अब पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो चुकी है। दहलीज पर बने स्तूपों पर कला जैसे कि कमल का फूल होता है, बनाई गई है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – उदयपुर।

ठहरने का स्थानः– गोमती यात्री निवास (उदयपुर) और गुनाबती टूरिस्ट लॉज (माताबाड़ी, उदयपुर)

भुवनेश्वरी मन्दिर उदयपुर

उदयपुर में गोमती नदी के दक्षिणी तट पर महाराजा गोविन्द माणिक्य(1660–1675 ई) के भव्य महल के खंडहरों के अवशेष मिले हैं। मां भुवनेश्वरी का मन्दिर भी इस महल के बिल्कुल साथ में स्थित है। इस मन्दिर के और राजा गोविन्द माणिक्य के शासन काल के महत्वपूर्ण इतिहास के बारे में प्रसिद्ध कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने अपने उपन्यास ''राजऋषि'' व नाटक ''विसर्जन'' में वर्णन किया है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मार्ग – अगरतला से 55 किलोमीटर

आवासः– गुनावती टूरिस्ट लॉज, माताबाड़ी और गोमती टूरिस्ट लॉज उदयपुर

प्राकृतिक पर्यटक स्थल

सिपाहीजला वन्य प्राणी उद्यान

सिपाहीजला वन्य प्राणी उद्यान 18.532 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ है इसमें लगभग 150 भिन्न–भिन्न किस्मों के पक्षी आवास करते हैं। प्रवासी पक्षी भी बीच–बीच में आते – जाते रहते हैं। फलदार पौधों के बगीचों के बीच में, नाव द्वारा सैर करने की सुविधा, जंगली जन्तुओं का जीवन, वनस्पति उद्यान चिड़ियाघर, हाथी की सवारी, रबड़ व कॉफी का वृक्षारोपण पर्यटकों को सालों से अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। वन्य जीवों से प्रेम करने वालों के लिए एक चश्मुद्दीन वनमानुष है जो कि आकर्षण का मुख्य केन्द्र है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर मुख्य सड़क पर अगरतला से 25 किलोमीटर है।

कहां ठहरेंः– अबासारिका (वन विभाग का बंगला) और काटेज वन विभाग द्वारा संचालित की गई।

त्रिष्णा वन्य जीव प्राणी उद्यान

त्रिष्णा वन्य जीव प्राणी उद्यान अगरतला से 100 किलोमीटर दूर बेलोनिया उपमण्डल में स्थित है। अवासी व प्रवासी पक्षियों के अतिरिक्त जंगली भैंसा यहां के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है।

स्थानः— अगरतला से उदयपुर मुख्य सड़क पर अगरतला से 100 किलोमीटर दूर।

आवासः— दक्षिणिनायन वन विभाग का डाक बंगला, बेलोनिया।

गोमती वन्य जीव प्राणी उद्यान

गोमती वन्य जीव प्राणी उद्यान अति मनमोहक वन्य जीव प्राणी उद्यान है जो कि राज्य के दक्षिण पूर्व में 389.540 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ है। यहां पर बहुत सारे आकर्षण के केन्द्र हैं। यहां पर पक्षियों के भिन्न—भिन्न प्रकार की नस्लें हैं, जिसमें सर्दियों में यहां आने वाले पक्षी भी शामिल हैं जिन्हें यहां पर पानी के सुरक्षित भंडारों में आसानी से देखा जा सकता है। सदाबहार की तरह व सदैव हरे—भरे रहने वाले जंगलों के खंड में लगभग 230 किस्मों के पौधे इस प्राणी उद्यान में उपलब्ध हैं। लगभग 150 किस्मों से ज्यादा लताएं एवं झाड़ियों की तरह लताएं, 160 से ज्यादा झाड़ियां और 400 से ज्यादा हर्बल पौधे इस प्राणी उद्यान में उपलब्ध हैं। यह उद्यान खोवाई व गोमती नदियों के किनारे पर घने जंगलों में फैला हुआ है। जंगल कृषि के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि ये भूमि कटाव को रोकते हैं।

पानी का सुरक्षित भंडार लगभग 300 वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ है। पानी का अथाह भंडार बहुत सारे लोगों व प्रवासी पक्षियों को दूसरे स्थानों से अपनी तरफ आकर्षित करता है। इसमें हाथी, जंगली भैंसे, भौं—भौं करने वाले हिरण, जंगली बकरियां और इसके अलावा भी कई जानवर व सरिसृप वर्ग के जन्तु पाए जाते हैं। इस प्राणी उद्यान में अम्बासा और गंडाचेरा या अमरपुर—जतनबाड़ी से होकर जाया जाता है। बहुत से स्तनपायी जानवर इस प्राणी उद्यान के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु हैं। इनमें से लम्बी पूंछ वाले लंगूर, तोता जाति के पक्षी, टोपी वाले लंगूर व अन्य कई प्रकार के लंगूर आदि खतरनाक प्रवृति के जीव व पक्षी हैं। यहां पर

हाथी, तेंदुआ व भौं–भौं करने वाले हिरण, जंगली कुत्ते, जंगली सुअर आदि स्तनपायी जन्तुओं को भी देखा जा सकता है। लम्बी सीटी बजाने वाली जल मुर्गी और म्यांमार (पूर्व काल में बर्मा) देश के सारसों को भी यहां पर देखा जा सकता है।

स्थान :– अगरतला से अम्बासा गन्डाचेरा या जतनबारी मुख्य सड़क पर अगरतला से 40 किलोमीटर दूर

आवास :– उदयपुर, अगरतला

रोवा वन्य जीव प्राणी उद्यान

रोवा वन्य जीव प्राणी उद्यान त्रिपुरा राज्य में उत्तरी त्रिपुरा में स्थित है जो कि पानीसागर के नजदीक है और राष्ट्रीय राजमार्ग से सटा हुआ है। यह एक छोटा प्राणी उद्यान है जिसका क्षेत्रफल 85.85 हैक्टेयर है और प्राकृतिक जंगल का कुछ खाली भाग है जहां पर पर्यटक आसानी से जा सकते हैं। यहां पर वनस्पति जगत के अध्ययन के लिए पर्याप्त जानकारी मिल सकती है। यहां पर तकरीबन 150 जाति के पक्षी व जंगली जन्तु पाये जाते हैं। इस जगह का चयन वास्तव में लम्बे पेड़ों को लगाने के लिए किया गया था। लेकिन ''खासी'' जन–जाति के उद्यमी लोगों ने इस पर पान की खेती करना शुरू कर दिया था जिससे ये पेड़ पक्षियों के समूहों के लिए आश्रय स्थल बन गये थे।

वन विभाग ने इस जाति के लोगों के जाने के बाद क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया। सारा क्षेत्र लगभग 86 हैक्टेयर था, उस पर तारबन्दी की गई और कर्मी दल वहां पर नियुक्त किया गया जो कि उस का प्रबन्धन कर सके। ये उत्तरी त्रिपुरा में प्रभावी विकास के बारे में जागृति पैदा करने का एक केन्द्र है। यहां पर स्कूली बच्चों, महाविद्यालय के विद्यार्थियों और दूसरे लोगों व पर्यटकों के साथ–साथ राज्य के व राज्य के बाहर से भी प्रायः लोग जानकारी हासिल करने के लिए आते रहते हैं।

स्थानः– अगरतला से शिलंग रोड पर, अगरतला से 150 किलोमीटर।

आवासः– पानीसागर या कुमारघाट।

जम्पुई हिल (कंचनपुर)

———पुनः मुद्रित———

यह अगरतला से 200 किलोमीटर दूरी पर स्थित है और मिजोरम से लगती हुई राज्य की सबसे ऊंची चोटी है जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई 3000 फुट है। यह स्थान बसन्त ऋतु में भ्रमण के लिए उपयुक्त है



जम्पुई, अपने जमीनी सौन्दर्य व सुहावने मौसम के लिए प्रसिद्ध है। यहां का उम्दा मौसम, सदाबहार जंगल, सुन्दर सन्तरों के बगीचे, सूर्योदय व सूर्यास्त का अद्भुत नजारा सैलानियों को स्वतः ही अपनी तरफ आकर्षित करता है। इस पर्वत श्रृंखला में 11 गांव हैं जिसमें मिजो (लुसाई जन–जाति) और रियांग जन–जाति के लोग प्रमुख हैं। इस पर्वत श्रृंखला की जनसंख्या लगभग 8000 है और ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय सन्तरे की खेती करना है। पर्वत श्रृंखला का तापमान परिवर्तन लगभग सभी ऋतुओं में नगण्य है जो कि पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त है।

प्रत्येक मौसम में पर्यटकों को यहां पर भिन्न–भिन्न प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है। अक्टुबर से दिसम्बर तक यहां पेड़ संतरों से लदे रहते हैं और पूरी पर्वत श्रृंखला संतरी रंग की दिखाई देती है व महक से भरपूर। मार्च से मई तक कई प्रकार के फल और अन्य जंगली पेड़ फूलों से भरे रहते हैं। वर्षा ऋतु में पर्वत माला बादलों से आच्छादित रहती है

और पर्यटक बादलों के बीच में सैर करने के आनन्द का अहसास करता है। लुसाई जन–जाति के लोग जो कि पर्वत श्रृंखला में रहते हैं, उनकी संस्कृति की अपनी एक अलग अद्भुत पहचान है। यहां के लोग अच्छी स्थिति में हैं, अपने घरों को साफ सुथरा रखते हैं और सभी घर आधुनिक साजो समान से परिपूर्ण है। इनमें से अधिकतर धारा प्रवाह अंग्रजी भाषा का प्रयोग करते हैं व ईसाई धर्म के अनुयायी हैं।

पर्वत श्रृंखला में सूर्योदय व सूर्यास्त का अद्भुत सौंदर्य देखने को मिलता है। यहां की प्राकृतिक सुन्दरता, सुहावना मौसम, भिन्न–भिन्न प्रकार के पेड़, सन्तरे व दूसरे मीठे फलों के बगीचे, मेहमानों की खातिरदारी करने वाले लोग और सांस्कृतिक धरोहर की दृष्टि से धनी लोग, पर्यटकों के लिए एक आदर्श पर्यटक स्थल सिद्ध होता है।

यहां पर ''ईडन'' नामक आनन्दायक निवास स्थान वांगमुन गांव की पर्वत चोटी पर बना हुआ टूरिस्ट लॉज है, जहां पर पर्यटकों के ठहरने की उचित व्यवस्था है। कॉफी के बाग ईडन को घेरे हुए है। इसके साथ ही स्थानीय लोग यहां पर आए हुए मेहमानों को ''पेइंग गैस्ट'' के रूप में रखने के इच्छुक होते हैं जिससे कि पर्यटक यहां के लुसाई जन–जाति के लोगों के रहन–सहन खान–पान व संस्कृति का गहराई से अनुभव हासिल कर सकते हैं। विदेशी पर्यटकों पर लगे प्रतिबन्ध को हटाने के बाद इस पर्वत श्रृंखला पर बहुत सारे विदेशी मेहमानों के आने जाने वालों का तांता लगा रहता है। त्रिपुरा की सबसे ऊंची चोटी ''बैटलिंगछिप'' है जिसकी ऊंचाई 3600 फुट है। जहां से पर्यटक मिजोरम का विहंगम दृश्य, चटगांव की पहाड़ियां और त्रिपुरा की दूसरी इससे निम्न पर्वत श्रृंखलाओं का निहार सकते हैं। यहां पर पर्यटकों को ट्रैकिंग करने के लिए उपयुक्त स्थान है।

स्थानः– अगरतला से शिलंग रोड पर, 88मील से जम्पुई, अगरतला से 250 किलोमीटर।

आवासः– ईडेन, वांगमुन गांव टूरिस्ट लॉज, कंचनपुर।

जल सम्बन्धी पर्यटन स्थल

त्रिपुरा में जल से सम्बन्धित पर्यटन

राज्य के हरे–भरे जमीनी भू–भाग के साथ–साथ बनी सुन्दर झीलें, नदियों व पानी के सुरक्षित भंडार विद्यमान हैं जो कि पर्यटकों को यहां आने के लिए विवश करते हैं। 42 किलोमीटर पर फैली हुई डम्बुर झील जो कि दक्षिणी त्रिपुरा में घने जंगल व पार्श्व भाग में तीन पहाड़ियों के बीच में स्थित है, पर्यावरण सम्बन्धी सैलानियों को अपने यहां आने का न्यौता देती रहती है व उनका यहां आना पर्यटन की दृष्टि से आदर्श सिद्ध होता है।

झील के मध्य में आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण एक छोटा सा टापू, जो कि भीड़–भाड़ व प्रदूषण से रहित सैलानियों के लिए प्रकृति की गोद में आरामगाह का आकर्षक स्थान है। जो सैलानी पानी की समीपता के शौकीन होते हैं वो अपने एच्छिक स्थान तक पहुंच सकते हैं जिसका नाम रूद्रसागर झील है और साथ ही ऐतिहासिक स्मारक जिसका नाम नीर महल है और झील के मध्य में सुन्दर रूप से स्थित है।

त्रिपुरा राज्य के अन्तिम शासक बीर बिक्रम किशोर माणिक्य (1923–1947) ने नीरमहल का निर्माण रूद्रसागर झील के मध्य में करवाया जो कि राजा का ग्रीष्म ऋतु का निवास भी था। इसके अलावा झील के चारों तरफ साफ–सुथरा वातावरण और झील के बीच में महल की वास्तुकला, सरकार की तरफ से चलाया गया सागर महल नाम का एक टूरिस्ट लॉज है जहां पर सैलानियों के लिए यहां रूकने व भोजन आदि की व्यवस्था की जाती है।

विशाल कमला सागर झील का निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य ने (1490–1520) करवाया। दो नीले रंग के लहरिया पानी की झीलें तत्कालीन राजाओं के आदेश का पालन करते हुए अगरतला जो कि त्रिपुरा की राजधानी है में बनाई गई जो कि सैलानियों के लिए नौकायान करने का बहुत अद्‌भुत स्थान है।

तत्कालीन त्रिपुरा की राजधानी व वर्तमान में मुख्यालय उदयपुर, झीलों के शहर के नाम से जाना जाता है क्योकि भिन्न–भिन्न राजाओं ने यहां कई विशाल व आधुनिक झीलों का निर्माण करवाया जो कि शहर के इर्द–गिर्द हैं। ये झीले गोमती नदी के जल प्रवाह से जुड़ी हुई हैं जो कि पर्यटकों को नौकायान करने के लिए अपने यहां न्यौता देती रहती हैं।

नीरमहल और रूद्रसागर

रूद्रसागर झील अगरतला से लगभग 55 किलोमीटर दूर मेलाघर के नजदीक 5.3 वर्ग किलोमीटर में बनी हुई है। पानी से भरपूर एक लम्बा क्षेत्र पर्यटकों के मन मोहने के लिए दूसरा बड़ा आकर्षण का केन्द्र है। झील के मध्य में त्रिपुरा का प्रसिद्ध महल है जिसे नीरमहल के नाम से जाना जाता है नीरमहल का शाब्दिक अर्थ पानी के अन्दर महल।

महल अपनी विलक्षणता व शाही हवेली की हकीकत जानने के लिए जाना जाता है जो कि रूद्रसागर झील के बीच में अगरतला से दक्षिण में अगरतला से 53 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य ने 1930 में इस भवन का निर्माण करवाया था। महाराजा गर्मियों में यहीं पर निवास करते थे। इस भवन के निर्माण के लिए मुगल भवन निर्माण शैली से प्रेरणा मिली।

झील में प्रतिवर्ष बहुत सारे प्रवासी पक्षी सर्दियों में यहां आकर आराम करते हैं। जुलाई अगस्त के माह में प्रति वर्ष यहां पर एक किश्तियों की दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की जाती है।

स्थानः— अगरतला से उदयपुर रोड पर, अगरतला से 53 किलोमीटर, उदयपुर से 20 किलोमीटर और मेलाघर से 2 किलोमीटर।

ठहरने के लिएः— सागर महल टूरिस्ट लॉज मेलाघर।

शुल्क

डुम्बूर झील (अमरपुर)

अमरपुर— अगरतला से 120 किलोमीटर की दूरी पर अमरपुर उपखंड में बहुत ही सुन्दर डुम्बुर झील स्थित है। अमरपुर में स्थित यह पहाड़ी झील समुद्री से 24 मीटर लगभग 78 फीट ऊंची है। यह कृत्रिम झील 16वीं शताब्दी में बनाई गई थी। यह उदयपुर और तेलियामूरा जुड़ा हुआ है। कस्बे में जगह—जगह महल के खंडहर नजर आते हैं। इस के दक्षिणी किनारे पर 8 सिर वाले मंगल चंडी देवी का मंदिर है और बसंत पंचमी फरवरी महीने में त्यौहार भी मनाया जाता है अमरपुर में वस्तुतः दो ऐतिहासिक झीले हैं।

झील का दृश्य भगवान शिव के छोटे (ड्रम) डमरू जैसा दिखाई देता है तथा उसी के फलस्वरूप इसका नाम डुम्बूर झील रखा गया। विशाल 40 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई इस झील का मनमोहक दृश्य है जो चारों तरफ से हरियाली से आच्छादित है तथा 48 द्वीप भी इसके बीचों–बीच स्थित हैं। प्रवासी पक्षी तथा जल क्रीड़ा सुविधाएं भी एक आकर्षण का केन्द्र है। यहां पन–बिजली घर का भी निर्माण किया गया है। जहां से गोमती नदी का उद्‌गम होता है उसे तीर्थमुख के नाम से पुकारा जाता है। यहां हर वर्ष 14 जनवरी को प्रसिद्ध पौष सन्क्रान्ति मेला लगता है। यह झील नदी रायमा व सारमा का संगम स्थल है। कई प्रकार के प्रवासी पक्षी सर्दियों में दिखाई देते हैं तथा ये प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक स्थल व मछलियों के लिए अभयारण्य भी है।

यह एक पिकनिक स्पॉट भी है।

एक द्वीप में ''नारकेल कुंज'' अर्थात् नारियल कुंज का विकास किया गया है।

स्थान : अगरतला से उदयपुर रोड पर, अगरतला से 120 किलोमीटर की दूरी, उदयपुर से 60 किलोमीटर, अमरपुर से 31 किलोमीटर और जतनबाड़ी से 11 किलोमीटर है।

आवास सुविधाः– रायमा पर्यटक लॉज जतनबाड़ी

कमलासागर (विशालगढ़)

एक बड़ी झील बंगलादेश की सीमा पर स्थित है। जिसकी खुदाई महाराजा धन्य माणिक्य की पत्नी कमला ने 15वीं शताब्दी में करवाई थी। कमलासागर के किनारे देवी काली का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है जिसका निर्माण 16 वीं सदी में हुआ था। यह सैलानियों के लिए सैरगाह का मुख्य स्थल है तथा यहां का सौंदर्य देखते ही पर्यटकों के मन को गहराइयों तक छू जाता है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर रोड पर, अगरतला से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

आवास सुविधाः– कोमिला व्यू टूरिस्ट लॉज, कमलासागर ।

ईको पार्क

खुमलांग इको/पर्यावरण पार्क

पर्यावरण पार्क

इस पार्क का विकास खुमलांग में स्वायत्त जिला परिषद के मुख्यालय पर किया गया है। खुमलांग का शाब्दिक अर्थ है फूलों की घाटी। इस पार्क में एक सुन्दर बड़ा उद्यान तथा प्राकृतिक जल स्त्रोत हैं जिनमें नौकायन सुविधा प्रदान की गई है। बच्चों के लिए एक वाटिका भी यहा पर बनाई गई है जिसमें कई खेलने के साधन लगे हैं। यहां पर छुट्टी के दिन बच्चे व उनके अभिभावक सैर करने के लिए आते हैं।

स्थानः– अगरतला से 25 किलोमीटर की दूरी पर

तेपानिया इको/पर्यावरण पार्क

तेपानिया पर्यावरण पार्क तेपानिया ग्राम पंचायत में माताबाड़ी ग्रामीण विकास खण्ड में स्थित है। 155 हैक्टेयर के क्षेत्र में राधा किशोरपुर रिजर्व वन में प्राकृतिक सुन्दरता के साथ तेपानिया पार्क स्थित हैं। यह पर्यटकों का मुख्य आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

स्थानः– अगरतला से उदयपुर रोड पर, अगरतला से 45 किलोमीटर तथा उदयपुर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

बारामूरा/बारामूड़ा इको/पर्यावरण पार्क

अगरतला से 37 किलोमीटर दूरी पर बारामूरा / बारामूड़ा पहाड़ी श्रृंखला में स्थित बारामूरा / बारामूड़ा पार्क है जहां से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44, जो कि शिलांग एवं गुवाहटी को आपस में जोड़ता है, निकलता है। यह क्षेत्र सिल्वान के सदाबहार वनों से घिरा हुआ तथा सुन्दर झरनों से सराबोर है। यह पर्यावरण विशेषज्ञों व पर्यावरण से प्रेम करने वालों के लिए एक आदर्श व आकर्षण का केन्द्र है।

स्थानः— अगरतला से शिलंग रोड पर, अगरतला से 37 किलोमीटर

कलपानियां इको/पर्यावरण पार्क

प्रत्येक विकास कार्य से समाज में एक बदलाव के साथ जीवन यापन में सुधार तथा आधारभूत ढांचे का निर्माण होता है। त्रिपुरा के सबरूम उपखण्ड में विहंगम कलपानिया पर्यावरण पार्क भी इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। लगभग 25 हैक्टेयर भूमि पर हरित आच्छादित पहाड़ियों के साथ यह पार्क स्थित है जहां पर लगभग 3 घंटे में अगरतला — सबरूम राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 से कालाचेरा होते हुए दाईं तरफ मुड़ कर पहुंचा जा सकता है। इस पार्क का विकास सन 2000 से प्रारम्भ होकर लगभग सात वर्षों में पूरा हो हुआ है।

1971 में बंगलादेश युद्ध के समय कलपानिया में कई हजारों बंगलादेश शरणार्थियों का शरणस्थल रहा तथा उदारशील त्रिपुरा जन—जाति के लोगों की जमीन पर एक शवदाह गृह का भी निर्माण हुआ। बाद में शरणार्थी कलपानिया से वापस चले गए।

स्थानः— अगरतला से उदयपुर रोड पर, अगरतला से 116 किलोमीटर की दूरी पर।

हेरिटेज पार्क



हेरिटेज पार्क – यह अगरतला का बहुत ही खूबसूरत और दिल खुश करने वाला पार्क है, जो त्रिपुरा भ्रमण के दौरान देखना चाहिए। यह 4 हैक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है और वर्तमान में इसकी बनावट के कारण, पर्यटकों में सबसे ज्यादा पसंदीदा स्थल है। इसका मुख्य हिस्सा, त्रिपुरा की अधिकांश पर्यटन योग्य दृश्यों को छोटे प्रतिकृति/रिप्लिका के रूप में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें उनकोटि, नीर महल और इसी तरह के कुछ अन्य पर्यटन स्थलों को छोटे आकार में प्रदर्शित किया गया है। अतः जो पर्यटक पूरा त्रिपुरा नहीं देख सकते उनके लिए यह बहुत अच्छा स्थल है। पूरा पार्क यूकेलिप्टस, लीची के पौधे, पत्थर व लकड़ी से सुसज्जित है जो कि दर्शनीय है। एक एम्फी–थिएटर भी है जहां पर विभिन्न तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आनन्द लिया जा सकता है। इसके चारों तरफ का गहरा हरा वातावरण घूमने वालों का दिल मोह लेता है।

स्थानः– गुरखाबस्ती, कुंजाबन, अगरतला

समयः– सुबह 6.00 बजे से रात के 8.00 बजे तक

शुल्कः– लगता है

नोट लिखने हेतु

1 ....
2 ....
3 ....
4 ....
5 ....
6 ....
7 ....
8 ....
9 ....
10 ....
11 ....
12 ....
13 ....
14 ....

0	Place	Location	Type of Spot	Disst	Disst HQ	From Agartala	Hotal(Suggested)
1	उनकोटी	कैलाशहर से 8 किलोमीटर	मन्दिर, पर्वत श्रृंखला,प्राकृतिक पर्यटक स्थल,अशोक अष्टमी,शिल्प कला	उनकोटी	कैलाशहर	अगरतला शिलंग रोड़ पर अगरतला से 178 किमी अगरतला शिलंग रोड़ पर कुमारघाट तक बस या रेलगाड़ी में और उसके बाद कैलाशहर तक (8 किमी)आधे घन्टे की यात्रा किसी कार टैक्सी द्वारा।	उनकोटी टूरिस्ट लॉज (कैलाशहर) जूरी टूरिस्ट लॉज और उत्तर मेघ टूरिस्ट लॉज (धर्मानगर)
2	कैलाशहर			उनकोटी	कैलाशहर		
3	भावतरिणी, कुमारघाट			उनकोटी	कैलाशहर		
4	चतुर्दश देवता मंदिर			उनकोटी	कैलाशहर		
5	लक्ष्मी नारायण मंदिर			उनकोटी	कैलाशहर		
6	भावतरिणी, काली–शशोन			उनकोटी	कैलाशहर		
7	सोतेरोमीयर हावर			उनकोटी	कैलाशहर		
8	उदयन बुद्ध विहार			उनकोटी	कैलाशहर		
9	डुम्बूर झील (अमरपुर)	गोमती नदी व धलाई जिले के बीच	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	धलाई	अम्बासा–(उदयपुर से भी जा सकते है।)		
10	चरक मेला			धलाई	अम्बासा		
11	कमलेश्वरी			धलाई	अम्बासा		

	मन्दिर						
12	लंगथराई मन्दिर			धलाई	अम्बासा		
13	नरकमल कुन्ज आइलैण्ड			धलाई	अम्बासा		
14	रास लीला			धलाई	अम्बासा		
15	साइका वाटरफाल			धलाई	अम्बासा		
16	बारामूरा पर्यावरण पार्क	तेलियामुरा	प्राकृतिक स्थल, पर्वत श्रृंखला, पर्यटक	खोवाई	खोवाई	अगरतला–38 किमी, तेलियामुरा से 5 किमी, अम्बासा से 50 किमी,	गीतान्जली टूरिस्ट गेस्ट हाउस, कुन्जाबन अगरतला
17	बनबीथि पर्यावरण पार्क	पद्माबिल		खोवाई	खोवाई		
18	चकमाघाट पर्यावरण पार्क	तेलियामुरा		खोवाई	खोवाई		
19	जंगल महल	खोवाई		खोवाई	खोवाई		
20	लक्ष्मी नारायण मंदिर	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
21	जगन्नाथ मंदिर	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
22	चतुर्दश देवता मंदिर	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
23	गेडु मियां की मस्जिद	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
24	मरियम नगर चर्च	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
25	बेनुबन बिहार कुन्जावन	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
26	हेरिटेज पार्क	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	
27	इस्कान मन्दिर	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला	

28	खुमलांग इको पार्क	जिरानिया	पर्यटक स्थल, फूलों की घाटी	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला	अगरतला से 22 किमी, जिरानिया से 4 किमी सर्दी के समय	गीतान्जली टूरिस्ट गेस्ट हाउस, कुन्जाबन अगरतला
29	उज्जयन्त महल	अगरतला	पर्यटक स्थल,	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
30	उमामहेश्वर मन्दिर उज्जयन्त महल के पास	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
31	हवेली म्युजियम उमामहेश्वर मन्दिर के पास	अगरतला	म्युजियम	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
32	त्रिपुरा राजकीय म्युजियम	अगरतला	म्युजियम	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
33	रविन्द्र कानन	अगरतला	पार्क	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
34	त्रिपुरा राज्य जनजाति म्युजियम	अगरतला	म्युजियम	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
35	नेहरु पार्क	अगरतला	पार्क	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
36	रोज वैली पार्क **Rose Valley Amusement Park**	अगरतला	पार्क	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
37	रामकृष्ण मिशन	अगरतला	मन्दिर	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		
38	कुन्जावन महल	अगरतला					
39	सुकान्त अकादमी	अगरतला	अकादमी	पश्चिम त्रिपुरा	अगरतला		

40	कस्बा काली मंदिर	विशालगढ़	मन्दिर	सिपाही जला	बिश्रामगंज	28	कोमिला व्यू टूरिस्ट लाज
41	कमलासागर काली मन्दिर कस्बा काली मन्दिर कमलेश्वरी देवी मन्दिर	विशालगढ़	मन्दिर, पर्वत श्रृंखला,प्राकृतिक पर्यटक स्थल,शिल्प कला	सिपाही जला	बिश्रामगंज		
42	सिपाहीजला वन्य प्राणी उद्यान	सिपाहीजला	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	सिपाही जला	बिश्रामगंज	अगरतला से 28 किमी	लेक व्यू रिसोर्ट, फोरेस्ट रेस्ट हाउस अबासारिका, इको काटेज संपर्क–सिपाहीजला आफिस
43	नीरमहल (रूद्रासागर) नीरमहल महल	नीरमहल मेलाघर रुद्रसागर	जलपर्यटन, प्राकृतिक पर्यटक स्थल	सिपाही जला	बिश्रामगंज		
44	बाक्सनगर	सोनामुरा, मेलाघर	मन्दिर, बुद्ध	सिपाही जला	बिश्रामगंज		
45	त्रिपुरा सुंदरी मंदिर (उदयपुर)	माताबारी उदयपुर से 3 किमी आगे	मन्दिर,जलपर्यटन, दीपावली मेला	गोमती	उदयपुर	55 अगरतला उदयपुर रोड़	गुनवती यात्री निवास माताबारी और गोमती यात्री निवास उदयपुर
46	कल्यान सागर(त्रिपुरा सुंदरी मंदिर के सामने)	माताबारी उदयपुर से 3 किमी आगे	मन्दिर,जलपर्यटन, दीपावली मेला	गोमती	उदयपुर	55 अगरतला उदयपुर रोड़	गुनवती यात्री निवास माताबारी और गोमती यात्री निवास उदयपुर

47	देबतामुरा (चाबीमुरा) छबिमुरा	अमरपुर	प्राकृतिक व पर्वत श्रृंखला	गोमती	उदयपुर	82 किमी उदयपुर से 30 किमी	चाबीमुरा काटेज, सागरिका पारजतन निवास, फटिक सागर अमरपुर
48	गुनावती मंदिरों का समूह	उदयपुर	मन्दिर प्राकृतिक व पर्वत श्रृंखला	गोमती	उदयपुर		
49	भुवनेश्वरी मंदिर	उदयपुर	मन्दिर प्राकृतिक व पर्वत श्रृंखला	गोमती	उदयपुर		
50	डुम्बूर झील (अमरपुर)	गोमती	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	गोमती	उदयपुर–अम्बासा से भी जा सकते है।		
51	तेपानिया पर्यावरण पार्क	उदयपुर	प्राकृतिक स्थल	गोमती	उदयपुर	अगरतला से 55 किमी, उदयपुर से 2 किमी	गुनवती यात्री निवास माताबारी और गोमती यात्री निवास उदयपुर
52	अमरसागर			गोमती	उदयपुर		
53	बसन्ती मन्दिर			गोमती	उदयपुर		
54	जगन्नाथ बाड़ी मंदिर			गोमती	उदयपुर		
55	फटिकसागर			गोमती	उदयपुर		
56	लोकनाथ मंदिर			गोमती	उदयपुर		
57	महादेव बाड़ी मंदिर			गोमती	उदयपुर		
58	सत्संग विहार			गोमती	उदयपुर		
59	रामकृष्ण आश्रम			गोमती	उदयपुर		
60	रामठाकुर आश्रम			गोमती	उदयपुर		
61	उदय पुर			गोमती	उदयपुर		

62	अमरपुर			गोमती	उदयपुर		
63	चन्द्रपुर मस्जिद	बेलोनिया	मन्दिर	दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
64	महामुनि पगोड़ा	सबरूम	मन्दिर	दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
65	पीलाक	,शान्तिरबाजार व जोलाइबारी		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
66	त्रिष्णा वन्य जीव प्राणी उद्यान	बेलोनिया	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया	अगरतला से 110 किमी, उदयपुर से 60किमी, सोनामुरा से 57किमी, बेलोनिया से 19 किमी	दक्षिणिनायन वन विभाग का डाक बंगला, बेलोनिया, मुहुरी पर्यटन निवास बेलोनिया
67	गोमती वन्य जीव प्राणी उद्यान	गोमती नदी, गोमती व धलाई जिले के बीच	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया	अगरतला–110 किमी, अगरतला शिलंग रोड़ पर अम्बासा और गंडाचेरा या अमरपुर–जतन बाड़ी से होकर जाया जाता है	गोमती यात्री निवास उदयपुर, गुनवती यात्री निवास माताबारी और गोमती यात्री निवास उदयपुर, सागरिका पर्यटन निवास अमरपुर

68	कलपानियां पर्यावरण पार्क	सबरुम	प्राकृतिक स्थल बोटिग	दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया	अगरतला–116 किमी, उदयपुर से 64 किमी, सबरुम से 21 किमी, जोलायबारी से 7किमी	पिलाक टूरिस्ट लाज जोलायबारी
69	बरदोश पर्यावरण पार्क			दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
70	बार्डर हाट बंग्लादेश के साथ			दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
71	बुद्ध मन्दिर	मनुबकुल		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
72	भारत बंग्लादेश मैत्री उद्यान	छोटीखल		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
73	तितली पर्यावरण पार्क	जयचन्द्र त्रिष्णा		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
74	धनन्जय पर्यावरण पार्क			दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
75	ईडन आफ बीसन	सिलापाथेर राजनगर		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
76	जयचन्द्र पर्यावरण पार्क	त्रिष्णा		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
77	जयचन्द्र वन्य	त्रिष्णा		दक्षिण त्रिपुरा	बेलोनिया		
78	रोवा वन्य जीव प्राणी उद्यान	धर्मानगर	प्राकृतिक स्थल, प्राणी उद्यान,	उत्तरी त्रिपुरा	धर्मानगर	अगरतला–175 किमी, पानीसग्रगर से 5 किमी, धर्मानगर से 23 किमी, केलासहर से 50किमी	जूरी टूरिस्ट लाज धर्मानगर
79	जम्पुई हिल (कंचनपुर)	कंचनपुर	पर्वत श्रृंखलाए प्राकृतिक स्थल	उत्तरी त्रिपुरा	धर्मानगर		

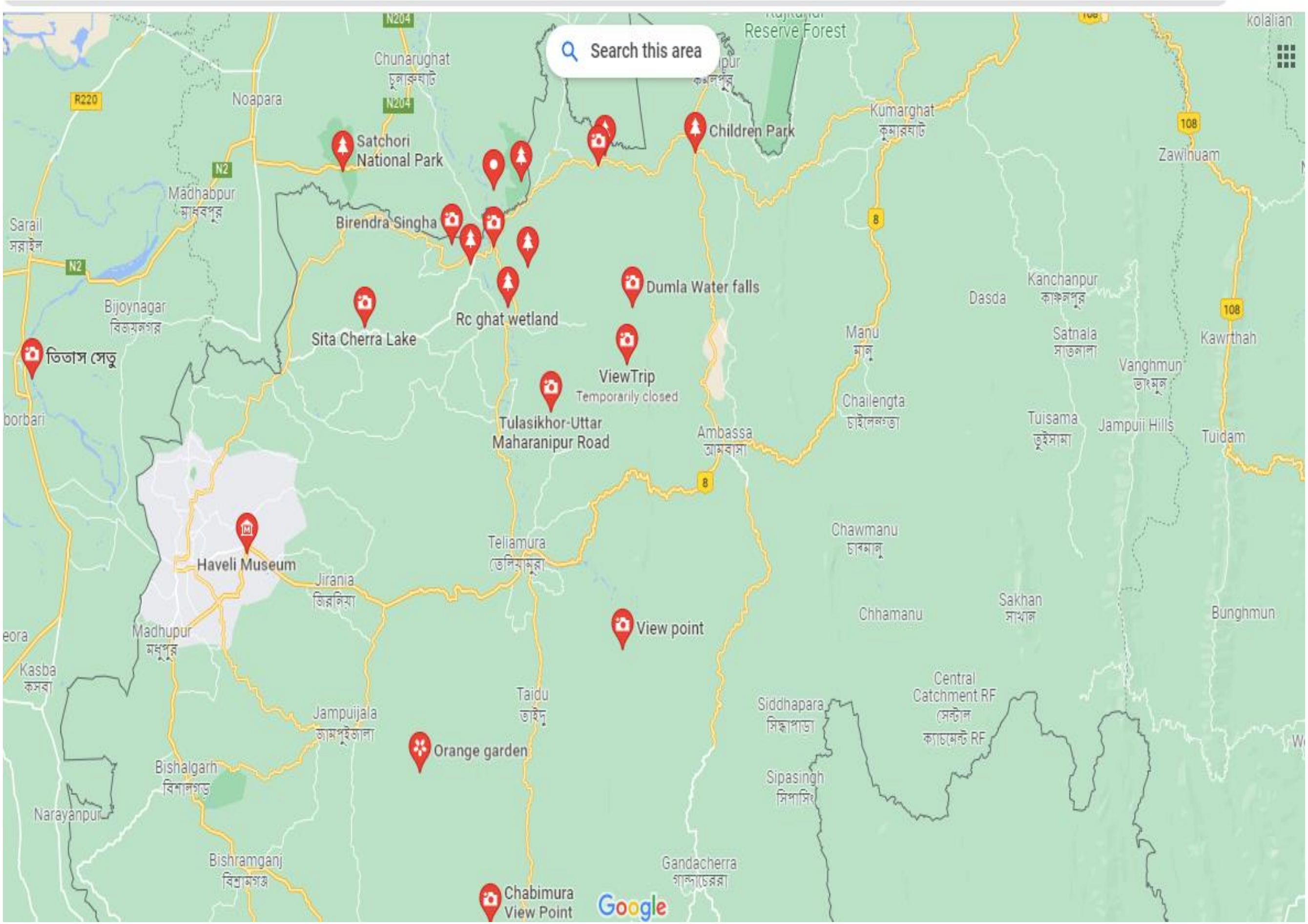
सन्दर्भ और आभार

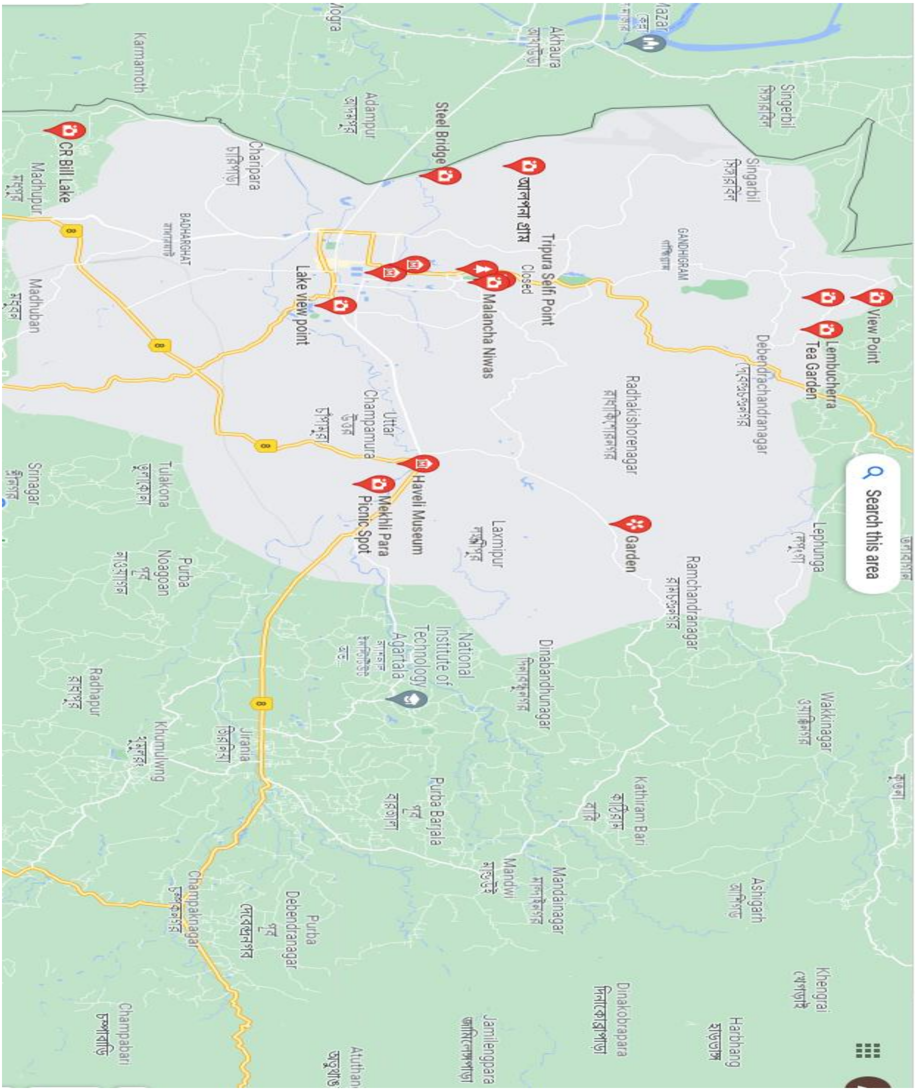
https://tripura.gov.in
https://en.wikipedia.org/wiki/Tripura
http://tripuratourism.gov.in/
(Name of District) District_Tripura
Google Map
https://www.traveldealsfinder.com
https:// www.traveltriangle.com
https://www.indianeagle.com
https://www.tripoto.com
https://www.tripadvisor.com

TRIPURA TOURIST MAP

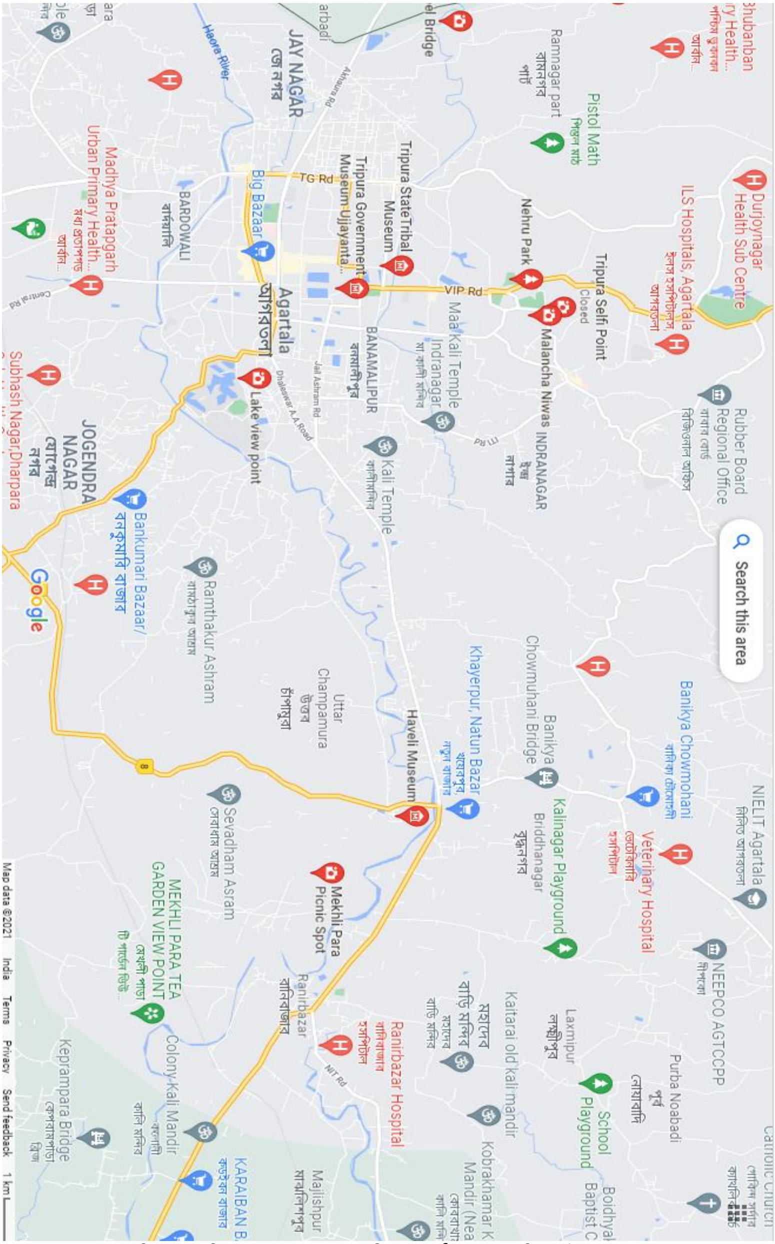


Source	WWW.TALEOF2BACKPACKERS.COM


Search this area
Satchori National Park
Birendra Singha
Children Park
Kumarghat
Sita Cherra Lake
Rc ghat wetland
Dumla Water falls
ViewTrip
Temporarily closed
Tulasikhor-Uttar Maharanipur Road
তিতাস সেতু
Haveli Museum
Teliamura
Jirania
Ambassa
View point
Orange garden
Chabimura View Point
Noapara
Chunarughat
Madhabpur
Sarail
Bijoynagar
Madhupur
Kasba
Jampuijala
Bishalgarh
Narayanpur
Bishramganj
Taidu
Gandacherra
Siddhapara
Sipasingh
Central Catchment RF
Chawmanu
Chhamanu
Sakhan
Manu
Chailengta
Dasda
Kanchanpur
Satnala
Tuisama
Vanghmun
Jampuii Hills
Zawlnuam
Kawrthah
Tuidam
Bunghmun
Reserve Forest
Google



Steel Bridge
Tripura Selfi Point
Closed
Malancha Niwas
Lake view point
CR Bill Lake
View Point
Lembucherra
Tea Garden
Garden
Haveli Museum
Mekhli Para
Picnic Spot
Search this area
National Institute of Technology Agartala
Akhaura
Singerbil
Singarbil
GANDHIGRAM
Radhakishorenagar
Debendrachandranagar
Ramchandranagar
Lephunga
Wakkinagar
Dinabandhunagar
Laxmipur
Uttar Champamura
Charipara
Adampur
Karmamoth
BADHARGHAT
Madhupur
Madhuban
Srinagar
Tulakona
Purba Noagoan
Radhapur
Khumulwng
Jirania
Purba Barjala
Kathiram Bari
Mandwi
Mandainagar
Ashigarh
Purba Debendranagar
Champaknagar
Champabari
Atuthan
Jamilengpara
Dinakobrapara
Harbhang
Khengrai


JAY NAGAR
Agartala
Big Bazaar
TG Rd
VIP Rd
Tripura StateTribal Museum
Tripura Government Museum Ujjayanta...
Nehru Park
Tripura Selfi Point
Malancha Niwas
ILS Hospitals, Agartala
Durjoynagar Health Sub Centre
Pistol Math
Ramnagar part
BANAMALIPUR
Maa Kali Temple
Indranagar
INDRANAGAR
Rubber Board Regional Office
Lake view point
Kali Temple
BARDOWALI
Madhya Pratapgarh Urban Primary Health...
JOGENDRA NAGAR
Subhash Nagar,Dharpara
Bankumari Bazaar/
Ramthakur Ashram
Search this area
Banikya Chowmohani
Chowmuhani Bridge
Khayerpur, Natun Bazar
Haveli Museum
Uttar Champamura
NIELIT Agartala
Veterinary Hospital
Kalinagar Playground
Briddhanagar
Sevadham Asram
Mekhli Para Picnic Spot
MEKHLI PARA TEA GARDEN VIEW POINT
NEEPCO AGTCCPP
Purba Noabadi
Laxmipur
Kaitarai old kali mandir
Ranibazar
Ranirbazar Hospital
School Playground
Colony Kali Mandir
Keprampara Bridge
KARAIBAN B
Majlishpur
Kobrakhamar K Mandir (Nea
Map data ©2021 India Terms Privacy Send feedback 1 km

लेखक की अन्य पुस्तके

1	1 RAJMALA Royal Size 462 page With fotoF page isbn to upload 220826
2	2 RAJMALA Royal Size 454 page With fotoF page isbn to upload 220826
3	3 RAJMALA Royal Size 457 page With fotoF page isbn to upload 220826
4	4 RAJMALA Royal Size 182 page With fotoF page isbn to upload 220826
5	book tripura at a glance HINDI fin NOV21 ISBN
6	
7	Banda History 00 front page bnd hist
8	Banda History 00.0 Banda History Index addhyay
9	Banda History 1.01 Etihasik Sanrachana o atihas
10	Banda History 1.02 Etihasik Sanrachana Gosai Himmat Bahadur etc
11	
12	Banda History 2.01 Bhaugolic
13	Banda History 2.02 Nadi Bandh Dam
14	Banda History 2.03 Minrals Soil
15	Banda History 2.04 Mitty Soil Bhumi prakar
16	Banda History 2.05 Patha Pahad ke Prakar
17	Banda History 2.06 Talab Nahar Nale
18	Banda History 2.07 Rain Jal Samasya
19	Banda History 2.08 Muhalle Namkaran
20	Banda History 2.09 Mandir and other Religious places
21	Banda History 2.10 Jansankhya Census 1901 1961
22	Banda History 2.11 Animal, Birds, Trees, Shrubs, Herbs Forests
23	

24	Banda History 3.01 Aarthik Sanrachana Economic Structure
25	Banda History 3.02 Krashi Agricultural Structure
26	Banda History 3.03 Mahua chirongi
27	Banda History 3.04 Tourism Paryatan mandir musium forest jungle
28	Banda History 3.05 Lok Hast shilp Kausal bazar Vyapaar Handicraft & trade
29	Banda History 3.06 Transport Yatayaat Sadak Rail Jal
30	Banda History 3.07 pichhadapau Backwardness Reason and Solutions
31	Banda History 3.08 pichadapan Backeardness - Industry, Causes & solution
32	Banda History 3.09 Pichhadapan Aatmhatya Backeardness Causes & solution
33	Banda History 3.10 Akal sukha Drought, Femine- Causes & solution
34	
35	Banda History 4.01 Bhaasha Sthaniya Boliya Language & Local Dialects
36	Banda History 4.02 NEWSPAPER Hist
37	
38	Banda History 5.01 Raaja va Rajnaitik Parivesh Kingdom & Political Scenario
39	Banda History 5.02 Fort Durg kile garh makaan Fort & Selected Building
40	
41	Banda History 6.01 aavaas gramin Rural Housing, LifeStyle
42	Banda History 6.02 Saanskratik Sanrachana Cultural Cunstruct
43	Banda History 6.03 gramin devata Reti Revaz
44	Banda History 6.04 Reti Revaz Rasm lokjeevan
45	Banda History 6.05 Sanskar 16 Sacred Rites
46	Banda History 6.06 16 sringar 16 Traditional Adornments
47	Banda History 6.07 Aabhushan Gudana Metal Craft Ornament

	Tattoo
48	Banda History 6.08 Veshbhusha Pahnava Attire
49	
50	Banda History 7.01 manoranjan cinema kavi Enterainment
51	Banda History 7.02 Tyohar Festival Celebration
52	Banda History 7.03 Lok chitra kala Folk Painting Art
53	Banda History 7.04 Lok Geet Folk Song
54	Banda History 7.05 Lok Natya Folk Theatre
55	Banda History 7.06 Lok Nratya Folk Dance
56	Banda History 7.07 Lok Sangeet Folk Music
57	Banda History 7.08 Lok Vadya yantra Musical Instrument
58	Banda History 7.09 kahaani Folk Tales
59	Banda History 7.10 Lok Kahavate muhavare Folk ProverbSayings Idioms
60	
61	Banda History 8.01 Food Bhojan va Bhojan Vyastha Food & Dish
62	Banda History 8.01 Food ODOC Sohan halva p8
63	Banda History 8.02 health in Food med geet Food & Health
64	Banda History 8.03 Jaati va Vyastha Caste System
65	Banda History 8.04 Lok Visvas Lokachaar Kuretiya Folk Faith, Ethos & Bad Customs
66	
67	Banda History 9.01 CLUB Maidan Club & Ground
68	Banda History 9.02 Purane Bhavan Old building
69	
70	Banda History 10.01 sambhranto ka bhramanan Elite Visit
71	
72	Banda History 11.0 Sandarbh Sabhaar Saujanya Context Reference Greatfully Courtesy

WATER MARK

36 line in page in 12cm

find PICTURE to place

all measur cm

Page size 18hx14.3w A5

14.4=1.3+1.8+9.5+1.8

19=3+1+11+3

Margin top 3 then heading of book on each page 1cm

bottem 3

typing area 12cm hight x10cm width

Left 1.8 Right 1.8 Gutter 1.3

Font https://krutidevfont.com/#KrutiDev-010

Krutidev Font Size 14/16, extended

Space before 6 Space after 6 line spacing 1.5 No indent

times new roman Font Size 10

57 letter in 10 cm

Mirror page in place of NORMAL

FILL PAGE IN FOOTER